॥ श्रीहरिर्जयति ॥

योगीश्वरबालकरामकृत

पूरनमलभक्तका सांगीत.

श्रीयुत पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रजी द्वारा संशोधित।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालैन,

निज-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया।

संवत् १९७२, शक १८३

रप्रेस ... इच्छा

त होनी चाहिये, ... सेठजीकी

...से मंगाकर और उनको देख भाल-

इस ग्रन्थको सांगोपांग दुरुस्त करदिया है, और अपने

सर्वाधिकार "श्री... छोडी है, इस नवीन आवृत्तिकी प्रतिको देखकर सज्जन बहुत

यह पुस्तक ...त और भी शुद्धतासे छापी गयी है.

निज-" श्री... १९

शित किया. ...

...१९७२.

अनुग्रहीत-

पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र.

दिनदारपुरा-मुरादाबाद.

भूमिका।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

धर्मशास्त्रोंका सिद्धांत है कि, यदि धर्मकी रक्षा कीजाय तो वह रक्षा करनेवालेकी रक्षा करताहै, यदि धर्मको कोई नाश करनेकी इच्छा करै तो धर्म उसका नाश करदेताहै, इस **पूरनभक्तके संगीतसे** यह बात भलीभांति विदित होतीहै कि, ब्रह्मचर्य व्रतमें स्थित हुए पूरनभक्तने किस प्रकारसे अपने धर्मकी रक्षा की, माता पितामें किसप्रकारसे देवभाव माना, सौतेली माताने कहां तक उसको अपने धर्मसे डिगाना चाहा, और कितना बलात्कार उसके साथ किया, पर उस धर्मात्मा ब्रह्मचारीने किसी प्रकार भी अपने उत्कृष्ट धर्मको हाथसे न जाने दिया, जब इसप्रकार पूरनने अपने धर्मकी रक्षाकी तब क्या धर्म उसकी रक्षा न करता अवश्य करता, और यही हुआ सौतेली माताने पूरनकी मिथ्या चुगली उसके पितासे खाई, और कहा इसने मेरे संग बलात्कार किया, पर धन्य पूरन ! इसपर भी तुमने माताकी करनी पितासे न कही, हाथ पैर काटकर कुएमें डालदिये गये, मार दिये गये, पर धर्मने न मरने दिया बारह, वर्ष कुएमें ही पाला, अन्तमें गुरु गोरखनाथजी के दर्शनसे फिर आरोग्यता प्राप्त की, हाथ पैर ठीक हुए और गुरु गोरख नाथजीकी कृपासे योगाचार्य हो मोक्ष पदके अधिकारी हुए यही इस ग्रंथका सार है.

इसमें सन्देह नहीं कि, इसके पढनेसे और इसका स्वांग देखनेसे हृदयपर बहुत बडा असर पडता है और उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है, इसीसे बहुतसे लोग इसको चावसे पढतेहैं पर यह ग्रंथ अबतक जहां जहां छपा है बहुतही अशुद्ध छपाहै, मैं इसमें कविका दोष नहीं मानता पर छापनेवालोंने इसकी शुद्धताईका कुछ भी ध्यान न दिया जैसा देखा वैसा छापदिया, इसीसे पढनेवालों और गानेवालोंको इसमें बहुत उलझन होनेलगी, यह विचारकर सेठजी श्रीयुत **खेमराज श्रीकृष्णदासजी**महोदय मालिक "**श्रीवेंकटेश्वरप्रेस बंबईने** अपनी यह इच्छा प्रगट की कि, इस ग्रन्थकी एक बहुत शुद्ध प्रति प्रकाशित होनी चाहिये, उक्त सेठजीकी अभिलाषानुसार मैंने कई प्रति इस ग्रन्थकी भिन्न २ स्थानोंसे मंगाकर और उनको देख भालकर इसकी छन्दरचनाको ठीक कर इस ग्रन्थको सांगोपांग दुरुस्त करदिया है, और अपने बसाते इसमें कोई त्रुटि नहीं छोडी है, इस नवीन आवृत्तिकी प्रतिको देखकर सज्जन बहुत प्रसन्न होंगे. अब द्वितीयावृत्ति और भी शुद्धतासे छापी गयी है.

१४।६।१६
संवत् १९७२.

अनुग्रहीत-
पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र.
दिनदारपुरा-मुरादाबाद.

اس کتاب کا مالک پریم ناتھ فلاسفر
حکیم عطر بازار ... بیں کا سیل

॥ श्रीः ॥

अथ योगीश्वरबालकरामकृत

पूरनमलभक्तका सांगीत.

पूरनका सांग लिख्यते ।

भेंट शारदाकी.

मातारी–कोई मांगेअनधन लक्ष्मी,कोई खुबसूरतनार

कोइ मांगे लख परगना, कोइ सुत वनज विपार

बेटा वनज व्योपार कोइ मांगे हथियार चढ़े रनको ॥ को

मांगे लड़का लड़कीको कोइ मांगे माल दरव धनको ॥

मांगे अशरत राजपाट कोइ फील सुतर पीनस मनको ॥ मु

बालकराम इलमवर मांगे आब खुरिश वस्तर तनको ॥ पू

ताल ॥ यही अलबत्त दीजै ॥ भेंट अपनी सुनलीजे

मलका सांग नजर ईनायत कीजै ॥ १ ॥

दोहा राजाका.

स्यालकोटके नगरविच, सलेमान महाराज ॥

तपधारी भारी हुवे, किया सात मुल्कका राज

किया सातमुल्कका राज आजतक सब रैयतपर हुकम किय

निज दो रानी सोहैं जिसके घर नूनादेपर बहुत हिया ॥

रानी है, इंछरदे राजानें आदर नहीं दिया ॥ खुद पूरन भक्त

इंछराके सलेमान घर जन्म लिया ॥ मु ॥ धन जननी मा

नगरमें बजी बधाई ॥ स्यालकोट मुलतान खबर सबने

पाई ॥ २ ॥

दोहा खिल्हारीका.

लडका क्या अचरज भरा, सूरज केशी शान ॥
कहिं अलग किनारे बैठके, आप घडा भगवान ॥

आप घडा भगवान जानके पूरन भगत अजीब घड़ा ॥ ज्यों पोहमाहकी पूरनमासीको संपूरण चंद चडा ॥ बीजलीसा वदन दो चश्म कटारे चंद छोड महताब लड़ा ॥ मध्यान गगनमा रथ सूरजका अधर बीच जा हुवा खड़ा ॥ मु ॥ परियां शरमावें ॥ हूरमुख अंगुली पावें ॥ परस्तान से परी सुरत देखनको आवें ॥ ३ ॥

दोहा राजाका.

सिलेवान महाराजने, दीना दर्व लुटाय ॥
अर्व खरव लख दर्वकी, गिनती गिनी न जाय ॥

गिनती गिनी न जाय रावनें ऐसा दरब लुटाया है ॥ बट एकरा हिस्सा सबको रतियों नहीं माल घटाया है ॥ पुन हाथी घोडे ऊंट सुतर गौअनका अंत न पाया है ॥ जग अश्वमेध रचदइ जानें पंक्षी नहीं हटाया है ॥ मु ॥ लुटवादई ढेरी ॥ असरफियां ई वनेरी ॥ हीरे मोती लाल मालकी जमा बखेरी ॥ ४ ॥

दोहा खिलारीका.

सात मुलकमा रोशनी, हो रहि घर घर बार ॥
गाम गाममें कामिनी, गावें मंगलाचार ॥

गावैं मंगलचार कामिनी बहुत खुशीसे गाती हैं ॥ सब पूछ छ अपने पीको लडकेको देखन जाती हैं ॥ ले बंदरवाल हे दरपर पूरनके दर्शन पाती हैं ॥ घर नंद बधावा नाच दे ताल तामसे लाती हैं ॥ मु ॥ सब मंगल गावें

दर्व नी खरव लुटावें ॥ लागी चारण भाट दाम मुँह मांगे पावें ॥ ५ ॥

दोहा राजाका.

सिलेवान महराजने, पंडित लिये बुलाय ॥
थाल भरे गजमोतियौं, दीना चौक पुराय ॥

दीना चौक पुराय पंडितो रलमिल मंगलचार करो ॥ ये कौन लगन लड़का जनमा ज्योतिषका गणित सुमार करो ॥ गिन रास वरग निरमल कथके लडकेका नाम तयार करो ॥ कथ चार वेद गुन खोज खोज मिलि पंडित लग्न विचार करो ॥ मु ॥ सब बात सुनावो ॥ झूठि मत बात बनावो ॥ जो देखो दृष्टांत सोइ हमको बतलावो ॥ ६ ॥

दोहा पंडितका.

काजी मुल्ला मौलबी, रलमिल पढ़े कुरान ॥
लग्न लगावैं ज्योतिषी, पंडित करें बखान ॥

पंडित करैं बखान जहाँमें लड़का रश्क कँमर होगा ॥ ये आप सखी खुद आप जती अक्कलमें बहुत जबर होगा ॥ सुमरेगा पीर फकीरोंको आगमकी इसे खबर होगा ॥ क्या खूब घड़ी लड़का जनमा दुनियामें नाम अमर होगा ॥ मु ॥ अपनी नहिं कहेगा ॥ बोझ सबके सिर सहेगा ॥ नौ नाथोंके हाथ साथ गोरखके रहेगा ॥ ७

दोहा राजाका.

पंडितोंसे राजा कहे, मत कहना झूठ खिलाफ ॥
मेरा और इस कँवरका, कुछ रहैगा मेल मिलाप ॥

रहैगा मेलमिलाप पंडितो कहो हमसे कैसा रहगा ॥ यह मु

जीतेजी दुनियामें क्या सुख देगा छाती दहगा ॥ कुछ मंदे चंदे बोल बडोंके वहँभी शिर ऊपर सहगा ॥ कुछ मेरा कुँवरका मिले नछत्तर करो चद्रबल क्या कहगा ॥ मु ॥ कुछ मिलके नाहीं ॥ कहूं पंडितोंको तांहीं ॥ क्यालड़केकी उमर लिखी मस्तकके माहीं ॥ ८ ॥

दोहा पडितका.

राजाजी-तेरापुत्र सपुत्र है, पूरनभक्त अवतार ॥
मातपिताके वचनसे, रहैगा ताबेदार ॥

रहैगा ताबेदार कँवर तेरा असबस बलकारी होगा ॥ अब हस्त नछत्तर पड़ा जबर चन्द्रमाका बल भारीहोगा ॥ वो निसदिन कला संपूरन जागै ऐसा तपधारी होगा ॥ सिधसाध ब्राह्मन मात पिता गुरुका आज्ञाकारी होगा ॥ मु ॥ वो पुत्र तुम्हारा नहिं वचनोंसे न्यारा ॥ सालकोटमुलतान फौजमा बजे नगारा ॥ ९ ॥

दोहा राजाका.

सुन विप्रोंकी बातको, खुशी हुए महराज ॥
पंडितोंको कसमीरका, दे दिया आधा राज ॥

देदिया आधा राज रावने परवाना कीना जारी ॥ चालिस हजार मर्द घोडे पंडितोंके संग कर दी त्यारी ॥ रथ बग्घी पीनस बहल पालकी फीलसुतर लस्कर भारी ॥ बेगिनत असरफी सोनेकी भर कंचनथाल कलशझारी ॥ मु ॥ और बी फरमावो ॥ जिले कसमीरके जावो ॥ करो खुशीसे राज तुम्ही तहसीलको पावो ॥ १० ॥

दोहा पंडितोंका.

राजा०-तेरा तेज जगमें रहो, अटल राज दरबार ॥
देग तेग राहियो फते, सदा हुकम गुलजार ॥

सदा हुकुम गुलजार रहो तेरी सात देशकी बादशाई ॥ तेरा सभा सम्पत परवार फलो तेरे फलियो पोते पुन्याई ॥ तैं जीते जी जग जीत लिया मुलकोंमें खटलाई भलियाई ॥ तुम्ह खुशी रहो जजमान तेरी सभ पंडितोंने प्रस्तुति गाई ॥ मु ॥ ये वचन हमारा ॥ फलो परवार तुम्हारा ॥ सालकोट मुलतान फौजमा बजे नगारा ॥ ११ ॥

दोहा राजाका.

सिलेमानकी बीनती, सुन पंडित सुरज्ञान ॥
जन्म पुत्रके नौग्रह, हैं कौथे अस्थान ॥

हैं कौथे अस्थान ज्ञान कर सबलाते जइयो ॥ सब ज्योतिष साध लगन धरके दोचार हरफ पाते जइयो ॥ जैसे कुछ हरफ लिखे पत्रीमें तुरत अरथ लाते जइयो ॥ लड़केके हकमें मांग हुआ रस्तेमा जस गाते जइयो ॥ मु ॥ सब बात सुनाओ ॥ हाथ लड़केके लाओ ॥ ग्रह और खोटी सायत सब हमको बतलाओ ॥ १२ ॥

दोहा जुन्ना ज्योतिषीका.

बोला जुन्ना ज्योतिषी, ज्योतिषमें परकार ॥
इस लडकेपर रावजी, झपट लिखी हैं चार ॥

झपट लिखीहैं चार राव तेरा पूरन भक्त अवतार हुआ ॥ जो गगन सूर्यरथ ठहर गया लड़केके शिरपर भार हुवा । एक झपट बारमें वर्ष लिखी इसमें सब वेद लचार हुवा । मर गयातो हरिकी इच्छा है बच गया तो लड़का पार हुवा । मु ॥ ये प्रश्न लगाया ॥ झपट चारोंमें आया ॥ जो झपटोंसे बचे अमर हो जागी काया ॥ १३ ॥

दोहा राजाका.

तुम पूरे हो ज्योतिषी, सर्व वेद परवीन ॥
तुम्हने सारी सच कही, आगया मुझे यकीन ॥

आगया मुझे यकीन सबब क्या जरा खुशामद नहिं कीनी ॥ जो देखा वेद किताबोंमें सो साफ दास्तां कह दीनी ॥ इस हालतमें कुछ कसर नहीं ज्योतिषकी बात समझ लीनी ॥ अब जो तुम कहो हम जान गए लड़केकी उमर रही हीनी ॥ मु ॥ थोड़ी सिखवाई ॥ बात कही सोई पाई ॥ थोड़े दिनका प्यार दगाकी चिट्ठी आई ॥ ॥ १४ ॥

दोहा पंडितका.

उमर कंवरकी बहुत है, थोडा भोगविलास ॥
तेरी और इस कुंवरकी, रैनी चढेन रास ॥

रैनी चढै न रास रावजी लड़केपर गरदश भारी ॥ कोइ लाखों जतन करो गरदशके एक नहीं टरती टारी ॥ कह लग्न बारहवें वर्ष उम्हारे घरहो ऐसी बेमारी ॥ तुम तीनोंमेंसे एक मरे या पुत्र पिता जननेहारी ॥ मु ॥ मानो मत मनो ॥ वचन मिथ्या मत जानो ॥ जन्मा पुत्र सपुत्र सच्च सब बात बखानो ॥ १५ ॥

दोहा राजाका.

हाथ जोड राजा कहे, सुन पंडित महराज ॥
सुख संपत हो नगरमें, ऐसा करो इलाज ॥

ऐसा करो इलाज समझके जिस विध झपट टरे टारी ॥ मेरा मारे खौफके वदन सूखगया चेहरेपर ना रहि लाली ॥ कुछु ऐसा जतन करो पंडित मेरी फूलै वेल बढै डाली ॥

दुंगा और जागीर परगना नहीं रक्खूं तुमको खाली ॥ मु ॥ कुछ जतन बतावो ॥ झपटसे हमें बचावो ॥ ग्रह बुरी हो चाल इसे तुम आन हटावो ॥ १६ ॥

दोहा पंडितका.

राजा०—बारा वर्षतक पुत्रका, मतना देख दीदार ॥
बीतें बारहवरस जब, करो मुहब्बत प्यार ॥

करो मुहब्बत प्यार रावजी घटतीका पहरा रहगा ॥ बारा वर्ष मध गगन बीच सूरजका रथ ठहरा रहगा ॥ सब हूरपझनी परियोंका लड़केमें दिल गहरा रहगा ॥ तुम बारा वर्ष रखो भौंरेमें सुख सम्पत लहरा रहगा ॥ मु ॥ दर्श मत कीजो ॥ बात मेरी सुनलीजो ॥ बारा वर्षके बाद प्यार लड़केसे कीजो ॥ १७ ॥

दोहा राजाका.

गद्दीसे राजा उठे, जल्दी चले बहीर ॥
आगे आगे रावजी, पीछे चले वजीर ॥

पीछे चले वजीर झपटकर मिल दोनो रनवास गए ॥ सब सुन सुन बातां पंडितकी राजाके तन विश्वास गए ॥ जितनेभर चौकीदार महलमें देखत सार हिरास गए ॥ कुल सत्तर महल छोड राजा रानी इंछराके पास गए ॥ मु ॥ राजा सुरज्ञानी ॥ पुकारी इंछरा रानी ॥ हम जिस कारज आये सुनो ये विथा कहानी ॥ १८ ॥

दोहा इंछराका.

बोली रानी इंछरा, कह राजासे बात ॥
किस कारन आए रावजी, लिये मन्तरी सात ॥

लिये मंतरी साथ राव म्हारे महलोंमें कैसे आए ॥ अब सुकर

आजके रोज राव रनवास बीच फेरे पाए ॥ क्या सुरत देखने पुत्त-रकी तुम अपने आप कदम ठाये ॥ य कँवर सुरत सूरजकी माफिक पूरनभक्त पुत्र जाए ॥ मु ॥ क्या कंवर ददिारी ॥ बडी तकदीर तुम्हारी ॥ धन्य घडी धन भाग बात अब पूछी म्हारी ॥ १९ ॥

दोहा राजाका.

रानी॰-मैं आया जिस कारने, मतना पूछ हवाल ॥
सुरत देखनी ना लिखी, जो देखूंअपना लाल ॥

देखूं अपना लाल हाल कोइ नहिं बंधावे धीर रानी ॥ कोइ ऐसा नहिं सिध साध कंवरकी दिखलादे तसवीर रानी ॥ जो मस्तक हरफ लिखे विधनाने नहीं चलती तदवीर रानी ॥ तकदीर हुई ऐसी खोटी जिस्में आजिज अकसीर रानी ॥मु॥ क्या पुत्तर जाया॥ कर्ममें कष्ट लिखाया॥है पृथ्वीपर भार तेज सुरजकी छाया ॥ २० ॥

दोहा ईछराका.

राजा॰-हमसे कहते क्यों नहीं, अपने दिलका हाल॥
दिन दिन ज्यादा चमकियो, जगत बीचइकवाल॥

जगतबीच इकवाल राव क्यों दिलमें दहसतखातेहो ॥ मैं आजिज होकर पूछ रही क्यों मुझको नहीं बतलाते हो ॥ तुमने कुछ बात सुनी पंडितोंसे क्यों नहिं खोल सुनातेहो ॥ मु ॥ इस दासतानको ॥ सलामत राखे जानको ॥ कहो मुफस्सल हाल खोल दो असल ब्यानको ॥ २१ ॥

दोहा राजाका.

रानी॰-काशी औकश्मीरके,पंडितकरें बखान॥
झपट तेज है कँवरपर, पुण्य लगे नहिं दान॥

पुण्य लगे नहिं दान जानलेनहिं जाताहै ॥ एक पंडित तथ कथ वेद खोजके मुझको यूं फरमाता है ॥ मध गगन सूर्ज रथ ठहर गया लडकेका दरशन पाताहै ॥ जो मातपिता देखैं पुत्तरको सूर्यच-क्रमां आताहै ॥ मु ॥ मरजा विन आई ॥ सूर्यकी आंच सवाई ॥ पूरनभक्तकेविना किसीसे सही न जाई ॥ २२ ॥

दोहा ईछराका.

रानी०-काशी औ कश्मीरके, पंडित करें बखान ॥
झपट तेज है कँवरपर, पुण्य लगे नहिं दान ॥

करो लाडरंग चाव रावजी अच्छा दिन कबको आवे ॥ कुछ ऐसा जतन करो राजा मंडलमां सूरज छिप जावै ॥ यह जिस विध कुँवर झपटसे बचकर प्रजा परम जो सुख पावे ॥ शास्तर मरजाद चलो राजा जिसतरहसे पंडित फरमावे ॥ ॥ मु ॥ सच जानो पेशा ॥ दर्द दुःखहो नहिं नेशा ॥ जबसे सुना हवाल मेरे तन लगा अँदेशा ॥ २३ ॥

दोहा राजाका.

पंडितोंने ऐसा कहा, करके शौच विचार ॥
बारा बरसतक पुत्रका, मतना देख दिदार ॥

मतना देख दिदार मुझे सब पंडित यूं फरमाते हैं ॥ कुल बारा बरसतक लड़केको भौरेंमें रक्खा चाहते हैं ॥ चश्मोंसे अब-अलग रहे पुत्तर तब मात पिता सुख पाते हैं ॥ क्या तेज लगन लड़का जन्मा पंडितभी दहशत खाते हैं ॥ मु ॥ बैठे बतलावें ॥ महलमां कभी न आवें ॥ बारा बरसके बाद कुँवरके दरशन पावें ॥ २४ ॥

दोहा ईछराका.

तुम तो मेरी बातको, शोच समझ मनमाहँ ॥
बालक अपनी मा विना, हरगिज जीवे नाहँ ॥

हरगिज जीवे नाहिं मात बिन तड़फ तरसकर मर जावे ॥ इस जिमीदोज भौंरेके अंदर कौन नार दुद्धी प्यावे ॥ दूधी विन कुँवर पलक नहीं जीवे कमल फूलसा कुम्हलावे ॥ एक घड़ी पुत्र बिन मर जाऊंगी वारा बरस किसको आवे ॥ मु ॥ जननी नहिं जीव जहरको प्याला पीव ॥ बिन देखे मर जाय जीवती कफनी सीवे ॥ २९ ॥

दोहा राजाका.

भौंरेमा संग कुँवरके, रहैं नजूमी चार ॥
पच्चीसे रहैं बांदियां ददा आठरा नार ॥

ददा अठारह नार धाय लड़केको दूध पिलावैंगी ॥ खिदमतमें बांदी लौंडि रहें मिलजुमले गोद खिलावैंगी ॥ सब दाई ददा हर-रोज सदा सब कुल बांता खिलावैंगी ॥ सुख रक्खें जाड़े पालमें गरमीमें पवन झुलावेंगी ॥ मु ॥ संग संत्री जागे ॥ चौगिरदे फेरा पांगे ॥ हरदम रहें हुशियार रपट बोलनको आगे ॥ २६ ॥

दोहा ईछराका.

राजा०–दिलके गमको जान दो, कर ठाकुरको याद ॥
कोइ सख्श चलता नहीं, शास्तरकी मरजाद ॥

शास्तरकी मरजाद भला ये पंडितसेभी नहीं गती ॥ तकदीर रुजू हो जाती है तदबीर फिरे आगे लुकती ॥ जिसकी कजा रजासे आवे दलबादलसे नहीं रुकती ॥ लख चार जनत हरबार करो

विधनाकी चोट नहीं चुकती ॥ मु ॥ भौंरेमा आवे ॥ कोट खाई पटजावे ॥ सस्तरसे ले राख जिसे भगवान बचावे ॥ २७ ॥

दोहा राजाका.

रानी०–पुण्य धर्म्म दारूदवा, भजन कालकी ढाल ॥
तदबीर धीर हिकमतगुनी, पानीकेसा ख्याल ॥

पानीकेसा ख्याल रानीजी जिधर चाहे जहां ले जावो ॥ उस पानी सींचे वृक्ष हरे हों जिसकी छाया सुख पावो ॥ जहां सुख शास्तरकी रीत नहीं तुम जान बूझके विष खावो ॥ तदबीर बिना मर गए कई राजा दिल अपनेको समझावो ॥मु॥ पुत्तरको दीजो॥ बात मेरी सुन लीजो ॥ बारा बरसके बाद प्यार लडकेको कीजो ॥ २८ ॥

दोहा ईछराका.

राजा०–तदबीर धनन्तर बैदसे, करते रहे हमेश ॥
आखर खाए नागने, एक चली नहिं पेश ॥

एक चली नहिं पेश धनन्तर आखर स्वर्ग सिधार गए॥तदबीर करीथी हिरनाकुशने जीती बाजी हार गए ॥ कुछ किसमतपर हिकमत नहिं चलती रावणभी झखमार गए ॥ राजा करन सोनकेदाता वहभी हाथ पसार गए ॥ मु ॥ दिलोंमें मत सक डालो ॥ पुत्रको गोद खिलालो ॥ बारा बरसके बाद प्यार लडके संग पालो ॥ २९ ॥

दोहा राजाका.

रानी०–प्यार पुत्रसे हम करैं, बारा बरसके बाद ॥
अस बस मुझे मंजूर है, शास्तरकी मरजाद ॥

शास्तरकी मरजाद कँवरको अब मैं भौंरे डालूंगा ॥ जब बारा बरस आखर होंगे भौंरेसे तुरत निकालूंगा ॥ मनचीते कारज करलूंगा फिर प्रीत कुँवर सँग पालूंगा ॥ छत्तीसों भोजन एक थालमां साथ कुँवरके खालूंगा ॥ मु ॥ सुन बात हमारी ॥ भली तकदीर तुम्हारी ॥ क्यों करती है देर नाहकमें जागी मारी ॥ ३० ॥

दोहा ईछराका.

बालक ले रानी उठी, मुखपर पल्लू डार ॥
ले राजा इस कुँवरको, लंबी भुजा पसार ॥

लंबी भुजा पसार कँवरको अपने दस्त उठा लो तुम ॥ चाहे बाहर रखो चाहें भीतर चाहें भौंरेमें डालो तुम ॥ इस जिंदगीका अखत्यार तुम्हें चाहे मारो चाहे पालो तुम ॥ अब हम तो दोष बेदोष रावजी चाहें कच्चेको खालो तुम ॥मु॥ अखत्यार तुम्हारे ॥ छिपावो चंद सितारे॥जो पुत्तर मरजाय लगै चित्त चोट हमारे ३१॥

दोहा राजाका.

लडका अपनी गोदमां, लेलो तुम्हीं वजीर ॥
भौंरे अन्दर ले चलो, जाय करो तदबीर ॥

जायकरो तदबीर खूब दो चंगे पलँग बिछानेको ॥ संग बांदी लौंडी दाई ददा सबको दो खरची खानेको ॥ जितने भर खिदमतगार नार सब भेजो गोद खिलानेको ॥ वरखातर लडकेकी जावो तुम हरदम फेरा पानेको ॥ मु ॥ मदत दो भारी ॥ साठ सत्तर दो नारी ॥ हरदम रहे हुशियार हाँ नजूमी सरकारी ॥ ३२ ॥

दोहा मन्त्रीका.

राजाके सुन हुकमको, मंत्री हुवा लचार ॥
गोद उठाकर कुँवरको, भौंरे चला सुधार ॥

भौंरे चला सुधार रावके चार नजूमी साथ लिये ॥ दर भौंरेपर पलटनके पहरे चारों तरफ तनात किये ॥ मिलझुलके कई जनानोंके सब हाजर दिन और रात किये ॥ भौंरेमा फरस फनूस लगाकर रंगमहलभी मात किये ॥ मु ॥ संग नार घनेरी ॥ बांदियां दई बहुतेरी ॥ पंद्रहवीस गुलाम साथ दामोंकी ढेरी ॥ ३३ ॥

दोहा खिल्हारीका.

भौंरेके अंदर गए, पूरण भगत विशाल ॥
सूरजका रथ उतरके, जा ठहरा पाताल ॥

जा ठहरा पाताल पदमनी सब अपने अस्थान गईं ॥ जो बड़ी इस्तरी चार किसमकी सारी जिन हिंदुस्थान गईं ॥ जितनी भर परियां आशिक थीं सब उड उड निज अस्थान गईं ॥ सब बांदी लौंड़ी दाइ ददा ले गोद कुँवर कुर्बान गईं ॥मु॥ चितलाके पालैं॥ हाथ तलवोंमें डालैं॥भीतर रह आनंद न बाहर पैर निकालैं॥३४॥

दोहा वजीरका.

भँवरेपर मंत्री खडा, बोल वचन बारीक ॥
तुम्ह सारे रहियो कुँवरके, दुख सुखके सारीक ॥

सुखदुखके सारीक खुशीसे छत्तिस न्यामत खाते रह ॥ इस वरखुरदार हमारेकी भँवरेमां खैर मनाते रह ॥ तुम तलब बदौलत पूरनकी वरखातर ह्यांपर पाते रह ॥ कोइ हरदम रपट हमेश कँवरकी सुख दुखकी पहुँचाते रह ॥ मु ॥ राजापै आके ॥ रपट तुम्ह बोलो जाके ॥ सब पहरे वरदार नजर रहियो चित लाके ॥ ३५ ॥

दोहा पहरेवरदारोंका.

मंत्रीसे ऐसे कहैं, सब पहरे वरदार ॥
हम सब अपनी जानसे, हरदम रहैं हुशियार ॥

हरदम रहैं हुशियार जरा गफलतका काम नहीं करते ॥ शिर काल कजा और मौतमजा और अजलरजाको शिर धरते ॥ रनहेत खेत दर जंग चढैं मरनेसे हरगिज नहिं डरते ॥ लड़केपर जाँ कुरवान करैं राजाका हक सारा भरते ॥ मु ॥ दुखको शीस सहेंगे ॥ हरदम हाजर रहेंगे ॥ रहें कुँवरके पास और ज्यादा क्या कहेंगे॥ ३६॥

दोहा वजीरका.

मंत्री जा दरबारमें, कह राजासों बात ॥
भौंरेमें संग कुँवरके, साठ नफर दिये साथ ॥

साठ नफर दिये साथ महीने खूब तरह समझा दीने ॥ भौंरेकी भीतर छिड़क अतर मखमलके बिस्तर लादीने ॥ दो चार नजूमी दाई ददाके कुँवर गोदमें पादीने ॥ नौ दश बारा पलटनके पहरे चारों तर्फ बिठादीने ॥ मु ॥ रणशूर कहावें ॥ जरा गफलत नहिं खावें ॥ खुशखबरीकी रपट रोज बोलनको आवें ॥ ३७ ॥

दोहा राजाका.

सलेवान राजा कहे, सुनले मेरे वजीर ॥
रोज खबर लेते रहो, कोइ ना हो दिलगीर ॥

कोइ न हों दिलगीरधीर धर खूब करो खातरदारी ॥ हर तरफ कुँवरके भँवरेपर हरवखत रौंद रक्खो जारी ॥ मुतवज्जः बरखुरदार कुँवरकी नूर चश्मकी सुध सारी ॥ कानून कायदे शाहोंके सिखला देना सब दस्तकारी ॥ मु ॥ तुम्ह हाजर रहना ॥ मान कर हमरा कहना ॥ वर किस्मत् बचजाय पुत्र मेरा कुछ लहना ॥३८॥

दोहा खिल्हारीका.

एक वरस दो उतरके, लगा तीसरा साल ॥
चार पांच छह सातमें, लीना होस सँभाल ॥

लीना होस सम्हाल कुँवरने चार इलम कीने जारी ॥ सब हिंदी फारसी अंगरेजी अरबीका शौक हुआ भारी ॥ वो चौसर सतरंज तास गंजफा पट्टेका है खेलारी ॥ पिस्तौल तीर तलवार तमंचा पेशकबज और कटारी ॥ मु ॥ नौटकि ग्यासी ॥ तीर जा चढ़ै अकासी ॥ बरछी और बंदूक खड्ग रखता है पासी ॥ ३९ ॥

दोहा पूरनका.

आठ वरषके कुँवरजी, हुये भँवर दरम्यान ॥
सभी कार दिलसे तजा, लगा अलखसे ध्यान ॥

लगा अलखसे ध्यान जन्म जुग जीतलिया बालेपनमें ॥ जब नव दश बारा वर्ष हुए श्रीरामनाम वस रहे मनमें ॥ दिन रात साधकै करी तपस्या जैसे भरथ तपे वनमें ॥ एक सोहंरूप ॐकारनाथ शब्दोंकी चोट लगी तनमें ॥ मु ॥ मनमें हरि भजता ॥ घडी नहिं मनसे तजता ॥ गोविंद नाम आधार कुँवरके मुखमें सजता ॥४०॥

दोहा ददाका.

दाइ ददा खुशिया करें, मनमें करके धीर ॥
एक वरष बाकी रहा, म्हारी खुल जागी तकदीर ॥

मेरी खुलजागी तकदीर हमी घर बैठी लहर उड़ावेंगी ॥ उस सिलेवान महराज रावसें मुँहमागा धन पावेंगी ॥ वे दौलत पूरनकी टुकडा घर बैठ उमरभर खावेंगी ॥ सदा रहैंगी पास कुँवरके नित उठ दरशन पावेंगी ॥ मु ॥ सुरत लासानी ॥ अजब मेरे मन मानी ॥ देख कुँवरकी माय वार पीवेगी पानी ॥ ४१ ॥

दोहा पूरनका.

सब शखसोंसे पूछता, पूरन अपने आप ॥
तुम लोगोंके बीचमें, कौन मेरे मा बाप ॥

कौन मेरे मा बाप पूछता सांचबात पाछ बतला दीजो ॥ मैं जिस राजाका बेटा हूँ खुद चस्मोंसे दिखला दीजो ॥ मैं जिसके उदरमां जन्म लिया जननीको पास बुला दीजो ॥ कोई भाइ बंधु परिवार मेरा जीते जी मुझे मिला दीजो ॥ मु ॥ कीजो मत देरी ॥ होस आगई घनेरी ॥ कौन पिताका पुत्र कौन माता है मेरी ॥ ४२ ॥

दोहा दाइददाका.

इंछरा है माता तेरि, सिलेवान महाराज ॥
तपधारी भारी हुवे, करे सात मुलकमां राज ॥

सात मुलकमां राज रावकी भरखम बुद्धि अकल स्यानी ॥ गज गौ सिंह बकरी चैंटी सब एक घाट पीवे पानी ॥ कर सबर महलमें बैठीहैं वह तेरी माय इंछरा रानी ॥ एक दूजी रानी नूनादे म्हारे राजाके मनमें मानी ॥ मु ॥ सुन वचन हमारा ॥ बडा परिवार तुम्हारा ॥ स्यालकोट मुलतान फौजमां बजे नगारा ॥ ४३ ॥

दोहा पूरनका.

दाइ ददा सुन लीजियो, मेरा एक बयान ॥
खुद चश्मों दिखलाय दो, स्यालकोट मुलतान ॥

स्यालकोट मुलतान किधरको बतला दो कहां जाऊं मैं ॥ वो पिता मेरा किसठौर रहे जलदी जा दर्शन पाऊं मैं ॥ मेरी माताको दिखला दो चरणोंसे ध्यान लगाऊं मैं ॥ इन दोनोंके दर्शन करके सब अडसट तीरथ न्हाऊं मैं ॥ मु ॥ गंगा तिरवेनी ॥ बात मातासे कहनी ॥ जो माता ले मान सोई शिर ऊपर सहनी ॥ ४४ ॥

दोहा दाइददाका.

कुँवरजी-भाइ बिरादर भानजा, बहन भानजी माय ॥
साल गुजर लै आपको, सबके सब मिल जाँय ॥

सबके सब मिल जांय तुम्हैं भँवरेसे बाहर निकालेंगे ॥ लख संख असरफी सोनेकी सिर वार फेर कर डालैंगे ॥ मिल नौकोटीके राजयुत तुम्हैं सभा बीच ले चलेंगे ॥ एक वर्षरोजमां मात पिता सब प्रीत तुम्हारी पालेंगे ॥ मु ॥ दिन थोडे रहगए ॥ मंतरी लिखके कहगए ॥ बारां वर्ष गए बीत महीने बाकी रह गए ॥ ४५ ॥

दोहा पूरनमलका.

मेरे पिताने क्यूं नहीं, रक्खा मुझे हजूर ॥
क्यूं हमसे नेह तोडके, किया नजरसे दूर ॥

किया नजरसे दूर ददा किस कारन भँवरें डाला मैं ॥ कुल बारां वर्ष तमाम हुवे अबलग नहिं बहर निकाला मैं ॥ मेरी माताने अपनी धारोंसे प्याके क्यूंकर नहिं पाला मैं ॥ तुम्ह हाल मुफस्सिल ख्यान करो किस कारन नहीं संभाला मैं ॥ मु ॥ भँवरेमां गेरा ॥ रोज जहां रहे अंधेरा ॥ क्या मैं हुआ मनहूस दर्श नहिं देखा मेरा ॥ ४६ ॥

दोहा दाइददाका.

कँवर-जिस रोज जन्म तेरा हुआ, खबर गई परिस्तान ॥
परियां आशिक हो गईं, गगन ठहर गए भान ॥

गगन ठहर गए भान कुँवर तुम तेज लग्नमें जाये थे ॥ उस सिलेवान महराज राजने सब पंडित बुलवाये थे ॥ मिल पंडित लगन विचार किया राजाको न्यू फरमायेथे ॥ थारा दर्श देखाना मने किया तुम इस विध भौंरे पाये थे ॥ मु ॥ दिन थोडे रह गये ॥ मंतरी लिखके कह गये ॥ बारां वर्ष गये बीत महीने बाकी रह गये ॥ ४७ ॥

दोहा पूरनका.

बारा वर्षके कँवरने, अरजी लिखी सुधार ॥
अपने वर खुरदारकी, लीजो नेक जुहार ॥

लीजो नेक जुहार पिताजी पूरनभक्त बिराम हुवे ॥ फर्जंद तुमारे भौंरेमें हम निस दिन मुसकिल काम हुवे ॥ इस अर्जबंद आजिजके दर्शन करने तुमें हराम हुवे ॥ अब नजर इनायत करो पिताजी बारा वर्ष तमाम हुवे ॥ मु ॥ होरही दिकदारी ॥ आन सुध लीजो म्हारी ॥ उमेदवार फर्जंद सदा रह शरण तुमारी ॥ ४८ ॥

दोहा संत्रीका.

अरजी ले संत्री चला, गया मंत्रिके पास ॥
राजा मंत्री दो जने, सजे आम दरखास ॥

सजे आमदरखास संतरी अर्ज अदाब बजा लाया ॥ फरजंद हँसकी करी सलामी रपट झपट बोलन आया ॥ संगीन सरासर बगनट करदर तोसदानके कर पाया ॥ तेरे वरखुरदार उस नूर चश्मकी खुद कलमी चिट्ठी ल्याया ॥ मु ॥ दसखत अंग्रेजी ॥ भगत पूरनने भेजी ॥ सूरजकेसी शान सही ना जाती तेजी ॥ ४९ ॥

दोहा राजाका.

राजा चिट्ठी बांचके, मनमां हुवे अनंद ॥
शुकर आजके रोजको, खबर करी फरजंद ॥

खबर करी फरजंद हमारे चार इलम परवीन हुवे ॥ पर हिंदे चौपम तास गंजफा सस्तरके शौकीन हुवे ॥ तुम्ह देखो

मंत्री खत पूरनका क्या तुमरे आधीन हुवे ॥ क्या कर तद-बीर तहरीर लिखी मेरे दर्शनके लवलीन हुवे ॥ मु ॥ इबारत कैसी बांकी ॥ लिखी सुन्दर सुखमाकी ॥ बारा वर्षमें देख रोज कितने हैं बाकी ॥ ९० ॥

दोहा वजीरका.

वजीर धीर धरके कहे, धन तुमको रघुवीर ॥
कल्हरमां कमल लगा दिया, बिन सींचे जल नीर ॥

बिनसींचे जलनीर राव तेरा कष्ट पाप जलमां बह गया ॥ घर पूरन भगतसे लाल हुवे सब दोष शोक शिरपर सह गया ॥ कुल बारा वर्ष फ़रजंद रावजी हम तुमसे पंडित कह गया ॥ बतलाने पंडितोंके मूजिब एक वर्षरोज बाकी रह गया ॥ मु ॥ गया बीत महीना ॥ निपट गया लाल नगीना ॥ पूरन भगत सपूत सरद रक्खेगा सीना ॥ ९१ ॥

दोहा राजाका.

पूरनमलके सामने, राजा लिखे जवाब ॥
वर्षरोज बाकी रहा, मतना करो शिताब ॥

मतना करो शिताब कुँवर तू जिस दिन भौंरे गेरा है ॥ तुझ बिन निशि दिन तडफत बीते सीनेमें दरद घनेरा है ॥ उस पारिस्तान कशमीर बीच जंबू मुलतान अंधेरा है ॥ गढ़ स्यालकोटके बीच तेरा मिलनेका चाव भतेरा है ॥ मु ॥ इंतजार तुम्हारे ॥ मेरे चश्मोंके तारे ॥ तुमैं भूलूंना हररोज चित्तपै चढ़े हमारे ॥ ९२ ॥

दोहा संत्रीका.

हट संत्री पीछे चला, पत्री लई उठाय ॥
कंधेपर बंदूक धर, भौंरे भीतर जाय ॥

भौंरे भीतर जाय भगत पूरनको चिट्ठी दिखलाई ॥ तैंने ऐसी तहरीर लिखी वो सब सूबोंके मन भाई ॥ मंत्रीने देख इबारतको अंगुली अपने मुखमें पाई ॥ महाराज बिना चूंकार रहे म्हारे पूरनकी चिट्ठी आई ॥ मु ॥ उठा गलसे लाई ॥ फेर सबको दिखलाई ॥ खुदकलमीको देख सभाने अस्तुति गाई ॥ ५३ ॥

दोहा पूरनका.

पूरन चिट्ठी बांचके, हटके लिखे जबाब ॥
बिलकुल बारा वरषका, हमसे लेउ हिसाब ॥

हमसे लेउ हिसाब पिताजी क्यूं मनमें घबराते हो ॥ मैं नौ दस मास गर्भमां था वो दिन मुजरे नहिं लाते हो ॥ मैं चालिस रोज चिलेमा था वे दिन नहिं लाया चाते हो ॥ हिसाब करो दिन ऊपर गुजरे जो इनसाफ चुकाते हो ॥ मु ॥ ये अरज हमारी ॥ लगी हमको इंतजारी ॥ उमेदवार फर्जंद सदा रहे शरण तुम्हारी ॥ ५४ ॥

दोहा संत्रीका.

फिर संत्री दरबारमें, गया दूसरी बार ॥
अरजी पूरन भगतकी, लई बगलमें मार ॥

लई बगलमें मार झपट चलनेकी बहुत शिताब करी ॥ कुल भरी कचहरी आमखासमें जाके अर्ज अवाद करी ॥ उस सब सूबोंकी सभा बीच राजासे एक जवाब करी । तेरे पूरनभक्तमें भौंरेमें दिन-दिनकी खूब हिसाब करी ॥ मु ॥ ये अरजी लीजो ॥ कामकुछ हरज न कीजो ॥ फिर ना लिखे जवाब आप ऐसा लिख दीजो ॥ ५५ ॥

दोहा राजाका.

राजाजीकी बातको, सुन ले मेरे वजीर ॥
देख कुँवरने क्या लिखा, हो गया सरद शरीर ॥

हो गया सरद शरीर भगत पूरनपर विपत कमाल पड़ा ॥ जैसे नल राजापर नरवरगढमें बारा वर्षका काल पड़ा ॥ मेरे खुद बेखुद नजरोंके आगे अब ममताका जाल पड़ा ॥ कहो क्या में जतन करूं मंत्रीजी वो कुँवर हमारे ख्याल पड़ा ॥ मु ॥ रानीका जाया ॥ उसे गुरू पूरा पाया ॥ ऐसा किया हिसाब समझमें मेरी आया ॥ ५६ ॥

दोहा वजीरका.

तेरा पूरन बडा सपूत है, निपट गया बुधिमान ॥
अकलवंद सिरचंद है, चपल चतुर सुरज्ञान ॥

चपल चतुर सुरज्ञान कुँवर सब सच्च हिसाब लगाते हैं ॥ उस पक्के भँवरे गर्भ उदरमें खबर नहीं क्या खाते हैं ॥ उस भँवरे ऊपर संत्रीभी एक लख्त खड़े घबराते हैं ॥ मुद्दतमैं बारा वर्ष राव अलबत मुशकिलसे आते हैं ॥ मु ॥ इसमें शक नाहीं ॥ काढ पूरनके ताहीं ॥ कँवर गया घबराय उसी भँवरेके माहीं ॥ ५७ ॥

दोहा राजाका.

भँवरेपर राजा चले, लगा कुँवरका चाव ॥
राजाके सँग हो लिये, बडे बडे उमराव ॥

बड़ेबड़े उमराव चावसे भँवरेके ऊपर आये ॥ पलटनकी कमर कसा दीनी छत्तीसों बाजे बजवाये ॥ लख चार कामिनी भँवरेपर रलमिल जुमले मंगल गाये ॥ अब चद सूर्यसी सूरत काढ़के पूरनको गलसे लाये ॥ मु ॥ चट गोद उठाया ॥ सर्द सब हो गई काया ॥ बारा वर्षके बाद कुँवरका दर्शन पाया ॥ ५८ ॥

दोहा खिल्हारीका.

तोप तमंचे छुट रहे, छूटि फौजमें फेर ॥
घर घर हो रहि रोशनी, नाच रंगकी लैर ॥

नाच रंगकी लैर शहरमा ऐसी अजब बहार होवे ॥ घर धौंसे नौबतखानोंकी रणसींगोंकी भरमार होवे ॥ नग हीरे मोती लाल लुटें पुन ऐसा बेसुम्मार होवे ॥ मैं हाल मुफस्सिल ब्यान करूं तो एक किताब तयार होवे ॥ मु ॥ कुछ लिखी न जाती ॥ जरा फुरसत नहिं आती ॥ कहता बालकराम कहांतक लिखता पाती ॥ ५९ ॥

दोहा पूरनका.

किबलेगाहके क़दममें, पूरन पडा शिताब ॥
चटचट छूवे चरनको, पूनोंका महताब ॥

पूनोंका महताब पिता मेरी तस्लीमात अरज होवे ॥ तेरा जन्म बार हक भरा न जाता यह मेरे शिर फरज होवे ॥ एक चरन धरन कर जोड़ रहा इसमें क्या मेरा हरज होवे ॥ वरखातर तुम्हरे दर्शनकी पूरनको बहुत गरज होवे ॥ मु ॥ तुम पिता हमारे ॥ पुत्रके पालनहारे ॥ मुझ चंदेको लिखे पिता कहां दरश तुम्हारे ॥ ६० ॥

दोहा राजाका.

बेटा०-जुग जुग तुम्ह जीते रहो, रहियो उमर बलंद ॥
आफताब ज्यों रोशनी, मेरे चश्मोंपर हरचंद ॥

चश्मोंपर हर चंद कुँवर नित दूधोंमें न्हाते रहियो ॥ तेरा हुस्न रूप रंग अटल रहो घर बैठे धन खाते रहियो॥इन मात पिताके चश्मोंमें निस दिन ठंडक पाते रहियो ॥ तेरी भगताईसे जीत रहो नित हरके गुन गाते रहियो ॥ मु ॥ ये वचन हमारा ॥ फलो परिवार तुम्हारा ॥ बालेपनके बीच जन्म जुग जीता सारा ॥ ६१ ॥

दोहा पूरनका.

सब लोगोंको बंदगी, करता और प्रनाम ॥
रूप साह दीवानके, कदम लिये फिर थाम ॥

कदम लिये फिर थाम मंतरी शरन तुम्हारी मैं आया ॥ मेरी तेरी बदौलत भँवरेमें परवस्त हुई सुंदर काया ॥ मेरे दुख सुखका शरीक रहा हरवार रोज फेरा पाया ॥ तुम बारा वर्षतक मुझपर राखी खुद अपनी छत्तरछाया ॥ मु ॥ पुत्तर कर जाना ॥ बड़ा कुदरतका बाना ॥ तुम्ह विन मेरा वजीर और था नहीं ठिकाना ॥ ६२ ॥

दोहा वजीरका.

सुन पूरनकी वीनती, राजी हुए वजीर ॥
अपनी गोद उठा लिया, हो गया शरद शरीर ॥

होगया शरदशरीर प्यार कर ठा पूरन गलसें लाए ॥ धन शुक्र आजके रोज कुँवरके खुद बेखुद दर्शन पाए ॥ मैं जैसी शोभा सुनता था मेरे वैसेही कुँवर नजर आए ॥ धन मात पिता जननी तेरी जिन्ह पूरन भगत पुत्र जाए ॥ मु ॥ चातुर सुर ज्ञानी ॥ धन ईछरादे रानी ॥ जिसने जन्मा लाल सिर्फ सूरजकी स्यानी ६३ ॥

दोहा राजाका.

सलेवाननें कुँवरको, पीनस लिया बिठाय ॥
भँवरेको नचकारकै, दिया कूंच ठहराय ॥

दिया कूंच ठहराय कुँवरको देखके खलकत नहिं रजती॥लश्करमें फैरां छूटती हैं चलनेकी तुरम बिगल बजती ॥ जब कुँवर कचहरी बीच गये मिल सारी सभा अधिक सजती ॥ दाइ दादाको दिया परगना तब भी पीछा नहिं तजती ॥मु॥सभ खुशी मनावैं ॥ राग कल्यायण गावैं ॥ नार नगर लख चार कुँवर देखनको आवैं ॥ ६४ ॥

दोहा खिल्यारीका.

राजा बैंठे दाहने, बाईं तरफ दिवान ॥
जाके पूरन बीचमें, सिर्फ सूर्यकी स्यान ॥

सूरजकेसी सान जैसे हरिमंदिरमें बत्ती बारी ॥ भर भादों रैन अंधेरीमें ज्यों लई चंदने उजियारी ॥ घन घोर घटा सिय जोर जटा बादलमां बीजली झमकारी ॥ सब परियां बालकराम कुँवरकी सुंदर छबिपर बलिहरी ॥ मु ॥ क्या सभा सवाई ॥ राव घर चिट्ठी आई ॥ पूरन भगतकी आई तीन सौ साठ सगाई ॥ ६५ ॥

दोहा नाईब्राह्मणका.

नाई ब्राह्मण बारमा, खडे तीन सौ साठ ॥
तेरे कुँवरके कारने, बहुत करी है वाट ॥

बहुत करीहै वाट रावजी तेरे नगरमें आए हैं ॥ थारे बारा वर्षके कुँवर कुँवारे आजतलक नहिं व्याए हैं ॥ तेरी मुलकोंमें तारीफ सुनी पूरन सबके मन भाए हैं ॥ हम सिर्फ तीनसौ साठ सगाई तेरे कुँवरकी ल्याए हैं ॥ मु ॥ ले लीजो राजा ॥ होवे घर-बैठे काजा ॥ करो कुँवरका व्याह पुत्रकी तुमको लाजा ॥ ६६ ॥

दोहा राजाका.

सिलेवान राजा कहे, धन धन मेरे भाग ॥
करो सगाई कुँवरकी, लीजो अपनी लाग ॥

लीजो अपनी लाग कुँवरकी शादी करके सुख पाऊं ॥ मस्त-कपर तिलक कुंवरके कीजो सबकी सब कन्या ब्याऊं ॥ तुम करो तीनसौ साठ सगाई एक नहीं पीछे ठाऊं ॥ सिरफर्ज मेरे पुत्तरको ब्याहूं जीते जी गंगा न्हाऊं ॥ मु ॥ धरनी नचकारूं ॥ जीते जी फर्ज उतारूं ॥ जलदी दूं परनाय फेर मैं कबी न हारूं ॥ ६७ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मुझ आजिज मतहीनका, सुनलो एक सवाल ॥
शादीका गलमें मेरे, मतना गेरो जाल ॥

मतना गेरो जाल मुझे कुछ सादी बहुत जरूर नहीं ॥ तुम अलबत मुझको न्यू कहोगे कुछ जरा कुंवरको सहूर नहीं ॥ सतभाव कहूं तू समझ पिता मैं तेरे हुकुमसे दूर नहीं ॥ तेरे और सब हुकुम बजा लाऊं एक ब्याह मुझे मंजूर नहीं ॥ मु ॥ हम लोग सलानी ॥ हमें क्या करनी रानी ॥ इस दुनियांके बीच खबर कितनी जिंदगानी ॥ ६८ ॥

दोहा राजाका.

बस बेटा चुपके रहो, तुम हो कुँवर नदान ॥
तुम्हें खबर कुछ है नहीं, तुम्ह सब बातों अनजान ॥

सब बातोंसे अनजान कुँवर बिन व्याहे पूरी नहीं पटती ॥ जो देखो वेद किताबोंमें बिन शादी उमर बहुत घटती ॥ सिर मात पिताके फर्ज रहे दुबधामें रैन नहीं कटती ॥ जीते जी आस चुका बैठूँ लोगोंकी कहावत नहीं हटती ॥ मु ॥ सब ताने मारें ॥ नार सब मसले डारें ॥ करें कुँवर तेरा व्याह सीससे फर्ज उतारें ॥६९॥

दोहा पूरनका.

अलबत तुम सिर फर्ज है, इसमें शककुछ नाह ॥
मेरा दिल लगता नहीं, जगतरीतिके माह ॥

जगतरीतकेमांह पिता मैं साच वचन तुम्हसे कहगया ॥ तुम जानो म्हारें एक कुँवर था वो संपत बिन ऊत गया ॥ जिस खातर शादी करते हो वो जोबन दरया बीच गया ॥ तुम व्या-हतेहो मैं उजर किया फिर क्या तुम्हरे सिर फर्ज रहा ॥ मु ॥ नहीं दोष तुम्हारा ॥ चित्त नहीं चाहता म्हारा ॥ साच नाम है अलख झूठ सब जगतपसारा ॥ ७० ॥

दोहा राजाका.

बेटा०-मुझे भाइबंद कुलके कहैं,तुम राजा किस जोग ॥
तेरा कुँवर कुँवारा रह गया, हँसे नगरके लोग ॥

हँसे नगरके लोग तुरत भर तक ताने तनमें लावैं ॥ तुम्हें सझम कुँवारे हत्यारेको हरगिज नहीं दरशन पावैं ॥ तुम्हें ब्याहैं तीनसौ साठ जगे म्हारे रिश्तेदार सजन आवैं ॥ म्हारे दूजा कोई कुँवर नहीं कहो तेरी जगह किसको ब्यावैं ॥ मु ॥ क्या करूं बहाना ॥ लोग सभ देंगे ताना ॥ हो गया कुँवर नादान कहा मेरा नहिं माना ॥ ७१ ॥

दोहा पूरनका.

पिताजी-या दुनियां दो रंगकी, सर्व दुखी संसार ॥
भली कहे कोई बुरी, यही जगतका कार ॥

यही जगतका कार बार रंग बहु रंग अजब जगत होता ॥ कोइ निरधन निपट कंगाल जहां में कोइ धनवान शकत होता ॥ कोइ अनहद धुनमें उस वनमें साईंका लाल नकत होता ॥ कोइ मनपापी कोइ धर्मी कोई निश्चय नाम भगत होता ॥ मु ॥ जपनेको माला ॥ कोइ ना सस्तरवाला ॥ कोई नर सिर्फ गरीब कोई नर हिकमतवाला ॥ ७२ ॥

दोहा राजाका.

शादी बिन संपत नहीं, ना घर मंगलचार ॥
ना घर आवै लक्ष्मी, ना घर रिस्तेदार ॥

ना घर रिश्तेदार होय ना बात बडोंकी पूरी है ॥ अब नूर चश्म तेरी शादीका मेरे शिर फर्ज जरूरी है ॥ तू मान चाहे ना मान कुँवर तेरे सिरपर हुकम हजूरी है ॥ ये उमर हँसन और खेल-

नकी हरदम दुनिया दस्तूरी है ॥ मु ॥ जगरीत सबादी ॥ कुँवर करवा ले शादी ॥ तुमबिन व्याहे कुँवर मेरी साही है आधी ॥७३॥

दोहा पूरनका.

पिता॰-तेरा हुकम मेरे चश्मपर, नहीं हुकमसे दूर ॥
ये मुझको मंजूर नहीं, दुनियांका दस्तूर ॥

दुनियांका दस्तूर पिता नहीं करता गर्व जवानीका ॥ ये बंदा झूठा धंधा है है सिर्फ बुलबुला पानीका ॥ धन जोबनका इतबार नहीं सुख क्या बादलकी छानीका ॥ कै दिनकी खातिर व्याह कराते नहीं सिदक जिंदगानीका ॥ मु ॥ झूठी जगमाया ॥ सभी जगधंधे लाया ॥ धन जोबन दिन चार सिर्फ बादलकी छाया ॥ ७४ ॥

दोहा राजाका.

बेटाजी-जो हो अपनी इस्तरी, अर्द्ध पुरुषका अंग ॥
सुख दुःखकी सारी कहे, जले पियाके संग ॥

जले पियाके संग इस्तरी कभी न मिस्त कलाल होवे ॥ मिल मंगल गाती सरस्वतीके उदरमें पैदा लाल होवे ॥ जब अभरन लय बैठती जनमें पंछी देख बेहाल होवे ॥ चढ सेजडियों घरकी औरतसे भोग सजोग हलाल होवे ॥ मु ॥ मत रहो कुँवारा ॥ लोग कहेंगे हत्यारा ॥ करो खुशीसे व्याह मानलो वचन हमारा ॥ ७५ ॥

दोहा पूरनका.

पिताजी-पांच आत्मा इस्त्री, हरदम रहे हजूर ॥
भाई भुजा सिर बंधना, नयन नगर रणशूर ॥

नयन नगर रणशूर सदा दरहमेश हमारे नाल रहैं ॥

रहें ॥ सतगत माता सताष पिता नित आदमकी रिछपाल रहें ॥ दोसुरत निरतकी सबर सेजपर पांच इस्तरी हाल रहें ॥ नौ नाड़ी बहत्तर कोठोंमें नित कर्म धर्म दो लाल रहें ॥ मु ॥ जो इन्हको जाने ॥ पचीसकी जात पिछाने ॥ व्याह सादी संयोग कभी पूरन नहिं माने ॥ ७६ ॥

दोहा राजाका.

बेटाजी–एक बातमें पूँछता, मुझको दो बतलाय ॥
कहो कुँवर किस कारने, करवाते नहिं व्याय ॥

करवाते नहिं व्याय कुँवर कुछ बात नहीं हमको पाई ॥ किसी समझ सरीकी दुशमनने तेरे भर बोली तनमा लाई ॥ तुम कहना मान शरीकोंका क्यूं शादीसे दहशत खाई ॥ सब सांच बात बतला बेटा ये क्या तेरे मनको भाई ॥ मु ॥ कर व्यान सुना दे ॥ व्याहके हटे दबादे ॥ यही बात दे खोल और नहिं कहता ज्यादे ॥ ७७ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०–हम भगत विहारीलालके, साधनके हैं दास ॥
मेरे मनमां लग रही, हरिनाम रटनकी आस ॥

हरिनाम रटनकी आस राव जिसमें हित प्रेम हमारा है ॥ उसके सिवाय कोइ अधिक मित्र दूजा नहिं और विचारा है ॥ उस मोर मुकुट मुरलीधरका पूरनको बड़ा सहारा है ॥ सब झूठा जग संसार सगर सच अलख एक ओंकारा है ॥मु॥ हरिनाम अधारा ॥ और नहीं मुझको प्यारा ॥ भगत जती जो होय जगतमें रहे कुँवारा ॥ ७८ ॥

दोहा राजाका.

राजा कहे दिवानसे, ये करता तकरीर ॥
इस तुम पूरन भगवतको, समझावो जि वजीर ॥

समझावो जि वजीर कुँवर गुस्ताखी बहुत कसूर करै ॥ ना व्याह शादी करवाताहै ना दुनियांका दस्तूर करै ॥ कुछ ऐसी विधिसे समझाना दिलकी सब नफरत दूर करै ॥ चित बड़ जा दुनियांदारीमें झट ब्या शादी मंजूर करै ॥ मु ॥ ऐसा समझावो ॥ कुँवरको रस्ते पावो ॥ जो करले मंजूर धूम धडकेसे व्यावो ॥७९॥

दोहा वजीरका.

वजीर कहे कुछ कुँवरसे, सुन ले वरखुरदार ॥
दिल अपनेमें क्यूं हुवे, शादीसे बेजार ॥

शादीसे बेजार कुँवर तुम तर्फ हमारी ध्यान करो ॥ जिस कारन व्याह कराते नहिं वो मकसद हमसे व्यान करो ॥ हरबार कहूँ सुन कुँवर मेरा आयेका आदर मान करो ॥ सिर मातपिताके फर्ज उतारो मंत्रीपर अहसान करो ॥ मु ॥ करवालो शादी ॥ मुलकमें होय अवादी ॥ तुम्ह व्याहे विन कुँवर हमारी शाही आधी ॥ ८० ॥

दोहा पूरनका.

दिवान०-अपनी शादी वो करे, जो करता भोगविलास॥
सच पूछो तौ मैं कहूँ, मुझको नहिं दरखास ॥

मुझको नहिं दरखास पास औरतका बुरा जंजाल होवे ॥ मैं नाम लिये बेमार पडूं मुझे ये दुख बडा कमाल होवे ॥ मेरी बेतक-दीर सगाई हो मेरे दिलका बुरा हवाल होवे ॥ मैं जिस दिन भोग विलास करूं सच जान कुँवरका काल होवे ॥ मु ॥ हम जती कहावें ॥ सदा हरिके गुन गावें ॥ रहें कुँवारे संत नहीं औरतको व्यावें ॥ ८१ ॥

दोहा वजीरका.

कुँवरजी-बडे संत शंभू हुवे, सदा शक्ति रही साथ ॥
संयोग संकला दीपमें, किया मछंदरनाथ ॥

किया मछंदरनाथ जौनसे बडे जती कहलाते हैं ॥ जिने अठासी हजार वरष तप कीना वहभी औरत चातेहैं ॥ कुछ जरा कामवश नहीं हुए सतसंगतका फल पातेहैं ॥ कर तुलसीदास संगऔरतकी ब्रह्मपुरीको जातेहैं ॥ मु ॥ सुख देव पियारे ॥ औरत संग इंद्र पधारे ॥ मीराबाईके संग राव वैकुंठसिधारे ॥ ८२ ॥

दोहा पूरनका.

वजीर०-तिरिया कारन भोजने, दाढी लई मुंडवाय ॥
तिरियाकारन चन्द्रने, लीना दाग लगाय ॥

लीना दाग लगाय उमरभर ऐसे रंग बेरंग हुवे ॥ बरखातर नार द्रौपदीके कोतरसे कौरों तंग हुवे ॥ रावनभी कुलको खोबैठा जब सीताके सतसंग हुवे ॥ चढ़ठारां पद्म दल रामचंद्रके गढ लंका-पर जंग हुवे ॥ मु ॥ तिरिया नहीं व्याहनी ॥ आखिरको होय विगानी ॥ रामचंद्र घर नहीं रही सीतासी रानी ॥ ८३ ॥

दोहा वजीरका.

कँवर-तिरिया अपनी होत हैं, पिछले जुगका अंश ॥
आगेको उम्मेद रहै, बढै राजका वंश ॥

बढै राजकावंश जगतमा मुलकबीचसरनाम रहै॥सत्रासौ कोसके भरतखंडमें खातिरख्वा इन्तजाम रहे ॥ तेरी रैयत पीछे हमलोगोंको सात मुलकका काम रहे ॥ कोइ पुत्र तुम्हारे हो जावे तुम सतपुरु-षोंका नाम रहे ॥ मु ॥ सब फजल रहेगा ॥ दुनियामें अदल रहेगा ॥ करें खुशीसे व्याह नाम तेरा अदल रहेगा ॥ ८४ ॥

दोहा पूरनका.

वजीर०--सदा नाम भगवानका, अटल रहे जगमाहँ ॥
सत्य नाम ओंकार है, और रहे कोइ नाहँ ॥

और रहे कोइ नाहँ जगतमें चले जांय राजा रानी ॥ ना वेद रहे ना पुराण रहे ना पंडित रहे गीता ज्ञानी ॥ ना जिमी रहे ना आकाश रहे ना अन धन रहे पवन पानी ॥ एक अनहद धुनमें अटल रहे श्रीअलख निरंजन निर्वानी ॥ मु ॥ ना रहे विधाता ॥ जगत सब झूठा नाता ॥ ना रहे बालकराम एक दिन जंगल जाता ॥८५॥

दोहा वजीरका.

राजाजी-मतना छेडो कुँवरको, ये बालक बेहोश ॥
इसमें कुछ आया नहीं, अभी जवानी जोश ॥

अभी ज्वानीका जोश होवे जब आपहि व्याह करावेगा ॥ बेपूछ तुम्हारी फिरे भटकता प्रीत हरेक संग पालेगा॥बेफिकर रहो मैं परना दूंगा जब ये होश सँभालेगा ॥ इस वखत कुँवरको चढ़ा बालहठ मुखसे बुरी निकालेगा ॥मु॥ इस वखत जाने दो ॥ दुनियाकीहवा खाने दो ॥ दो रणवास पहुंचाय मातके दरश पाने दो ॥ ८६ ॥

दोहा राजाका.

जा बेटा रनवासमें, मा अपनीके पास ॥
बहुत मुद्दतसे लग रही, तेरे मिलनकी आस ॥

तेरे मिलनकी आस लगी तेरी माता बहुत निरासी है ॥ जिस रोज गोदसे छीना था उस दिनसे बहुत उदासी है ॥ मेरे दो महलोंमें दो रानी एक माता एक तेरी मासी है ॥ मासीको दरशन दे

बच्चा मासी दर्शनकी प्यासी है ॥ मु ॥ उसकोभी मानो ॥ एक दोनोंको जानो ॥ मा और मासी एक देखकरबात पिछानो ॥ ८७ ॥

दोहा पूरनका.

पिताजी-एक तो माता जन्मकी, जिन रखा गर्भ अस्थान ॥ मासी माता धर्मकी, गावैं वेद पुरान ॥

गावैं वेद पुरान पिताजी कहो पहले किसपै जाऊं ॥ मेरी दोनों माता एकसरा मैं किसके जा दरशन पाऊं ॥ अब माताको मिलना चहिये मैं हरगिज देर नहीं लाऊं ॥ मात पिताके दरशन करके कुल अडसठ तीरथ न्हाऊं ॥ मु ॥ चित चाहता मेरा ॥ रहूँ चरणोंका चेरा ॥ पहले किसके पास महलमें पाऊं फेरा ॥८८॥

दोहा राजाका.

बेटा०-खुद माता तेरी जन्मकी, बडी बडेरी नार ॥ जरा हिरस करती नहीं, ना कुछ करे विचार ॥

ना कुछ करे विचार कुँवर तू जननीपे पीछे जाईये ॥ तेरी छोटी माता जौन धरमकी पहिले जाना व्हां चाहिये ॥ बहु मुद्दतसे इँतजार मिलनकी चस्मों ठंढक पाईये ॥ तू ना जागावो करे माखता दिल अपनेको समझाईये ॥ मु ॥ मातापे जाईये ॥ जरा दहशत मत खाईये ॥ जाकर शीश नवाय कुँवर तू सुघड़ कहाईये ॥ ८९ ॥

दोहा पूरनका.

जब व्हांसे पूरन चला, गया बीच रनवास ॥ महलोंके अंदर गया, छोटी माके पास ॥

छोटी माके पास जाय जननीके पग सिरदा नाया ॥ छे सात दफे परकम्मा दीनी झट चरणोंमें शिर पाया ॥ मुख घास लिये कर जोड रहा मा तुझ मिलनेको मैं आया ॥ मैं एक टांगके तान

खडा कर बखसिस हो निरमल काया ॥ मु ॥ मैं अरज लगाता ॥ तेरा दर्शन कहां पाता ॥ तेरे चरणको धोय पिऊं चरणामृत माता ॥ ९० ॥

दोहा नूनादेका.

देख कुँवरकी सुरतको, भूल गई रंग राग ॥
पग चोटीतक बल गई, लगी बदनमें आग ॥

लगी बदनमें आग नार नखरेसे नाक चढ़ा लीना ॥ मुख मोड़ जिमीपर बैठ गई नथ बिंदीमा बल पा लीना ॥ तन मनमें बिषसा घोल रही दिलमें भी गुस्सा खा लीना ॥ कर टेढी आंख कनोटी देखे तनमें काम जगा लीना ॥ मु ॥ दहसत ना खाई ॥ शरम रतियों ना आई ॥ ना दे सकी जबाब पापकी नीत ठहराई ॥९१॥

दोहा पूरनका.

हाथ जोड पूरन खडा, एक टांगको तान ॥
माता मत्था टेकता, लगा चरणसे ध्यान ॥

लगा चरनसे ध्यान मेरा क्यूँ दिलमां किया हरख माये ॥ मुझे क्या मिलना मंजूर नहीं दिलमें क्यूँ हिया दरक माये ॥ तरफ पुत्रके नहीं किया मनमें क्यूं किया फरक माये ॥ रुख करी मुख मोड लिया धरतीमां हुई गरक माये ॥ मु ॥ क्या शरम म्हारी ॥ पुत्रके पालनहारी ॥ सुन माता शिरपर फेरो हाथ आया मैं शरण तुम्हारी ॥ ९२ ॥

दोहा नूनादेका.

कुँवरजी—माता २ मत कहो, माता तेरी कौन ॥
माता तो वह [illegible]न है, पुत्र जन्मती जौन ॥

पुत्र जन्मती जौन कँवर मैं नवजोबन मदकी माती ॥ कुल बारा वरषकी उमर मेरी है पुत्र कहे लज्जा आती ॥ कुछ झूंठ नहीं मैं कहूँ भानजा वीर कहूं हुरमत जाती ॥ दिलदार कहूं संग लाऊं दोसती बांह पकड लालूं छाती ॥ मु ॥ दूं प्यार घनेरा ॥ सेजपर लाले डेरा ॥ फिर माता मत कहो तुहीं दिल जाने मेरा ॥ ९३ ॥

दोहा पूरनका.

दूर रहो पुत्तर कहो, मत कह बात अधीक ॥
ये सेजां मेरे बापकी, नहिं आऊं नजदीक ॥

नहिं आऊं नजदीक मेरी दरगाहमें बात मुघम माए ॥ मत बोल जबांको बंद करो ऐसी मत चके ऊधम माए ॥ अब मेरे पिता का भरतखण्डमा करड़ा राज हुकम माए ॥ क्या समझ पापकी नीत करी आखरको तेरा तुखम माएं ॥ मु ॥ सुन माता म्हारी ॥ पुत्रके पालनहारी ॥ शिरपर फेरो हाथ आया मैं शरण तुम्हारी ॥ ९४ ॥

दोहा नूनादेका.

कँवर०-मेरी और तेरे बापकी, जोडी मिले न रास ॥
मैं जोबनमदकी भरी, सजूं तुम्हारे पास ॥

सजूं तुम्हारे पास कुँवरजी मुझको छोड किधर जाते ॥ मेरे गदरे आम शजर गुंजेमें डरते हाथ नहीं लाते ॥ गुल खिला चमन केशरकी क्यारी ठा गलसे क्यों नहीं लाते ॥ इस मद जोबनरस मेवेको हरबार कहूं क्यों नहिं खाते ॥ मु ॥ मैं बांदी तेरी ॥ रहूँ चरणोंकी चेरी ॥ दीना चमन लुटाय पड़ी मेवेकी ढेरी ॥ ९५ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-तेरे षजर सब चमनमें. आक धतूरा कैर ॥
ये रस मेवा मद जोबना, लगे मेरेको जहर ॥

लगे मेरेको जहर थाम अपना रख भाव भरम माये ॥ कहो कै दिनके जीनेके खातिर अपना तजे धरम माये ॥ तू माता होके पुत्तरसे मत चाहे बुरा करम माये ॥ क्या उदरका पुत्तर पायाहै तुझे आती नहीं शरम माये ॥ मु ॥ तू माता ह्मारी ॥ पुत्रके पालनहारी ॥ शिरपर फेरो हाथ आया मैं शरण तुम्हारी ॥ ९६ ॥

दोहा नूनादेका.

कँवर-बात फ़रककी मत कहो, ऐसी समझ विचार ॥
तू आ जा मेरी सेजपर, तू कन्था मैं नार ॥

तू कन्था मैं नार मेरा कर देना सीना शरद सनम् ॥ तू पुत्तर रानी इंछराका मेरा है पूरन मरद सनम् ॥ नजदीक मेरे तू आजानी नहिं खाय मरूंगी करद सनम् ॥ मैं आप मरूं तुझको मारूं तनका नहिं करती दरद सनम् ॥ मु ॥ कर इश्क सजा दे ॥ और नहीं कहती जादे ॥ लिपट गलेसे आन यही मरदोंके कादे ॥९७॥

दोहा पूरनका.

माता०-मुझे खबर कुछ थी नहीं, मेरी माता निपट नदान ॥ देख पुत्रकी सुरतको, अपना तजे इमान ॥

अपना तजे इमान जुलम करती बालेपनमें माये ॥ चित्त चेत गजबसे बच माता नहिं चोट लगे तनमें माये ॥ एक आपा अजल संभल जननी नहिं भाय लगी तनमें माये ॥ मुझे भरतखण्डके राजाका कुछ खौफ नहीं मनमें माये ॥मु॥ सुन माता म्हारी ॥ पुत्रके पालनहारी ॥ शिरपर रक्खो हाथ आया मैं शरण तुम्हारी ॥९८॥

दोहा नूनादेका.

कुँवर०-दूर खडा बातें करे, आता नहिं मेरे पास ॥
मुझे मुद्दतसे लग रही, तेरे मिलनेकी आस ॥

तेरे मिलनेकी आस डरे हो अपने दस्त उठा लूं मैं ॥ दो बातें तुझसे करूं प्रेमकी गलमें जप्फी पालूं मैं ॥ अब लटपट होके गिरूं पलगपर तू स्वाले चाहे स्वालूं मैं ॥ चित चला कँवर कुछ वश नहीं मेरा नेक सरक गल लालूं मैं ॥ मु ॥ कर इस्क सजा दे ॥ और नहीं कहती जादे ॥ लिपट गलेसे आन यही मरदोंके कादे ॥ ९९ ॥

दोहा पूरनका.

माताजी—मन मारो तन वश करो, रक्खो होस सँभाल ॥ काम क्रोधको त्यागके, छोड पुत्रका ख्याल ॥

छोड़ पुत्रका ख्याल जरा कुछ दिलमें करो अकल माए ॥ चल दूरं दफे नजदीक न आवो हमसे रहो बगल माए ॥ मेरी सुन्दर छबि सूरजकी माफिक झूठी बनी नकल माए ॥ तू सुरत देख मत भूल फिरे सब फीकी शान सकल माए ॥ मु ॥ सुन माता म्हारी ॥ पुत्रके पालनहारी ॥ शिरपर फेरो हाथ आया मैं शरण तुम्हारी ॥ १०० ॥

दोहा नूनादेका.

कँवर०—मैं प्यसी जलनीरकी, मेरे निकसे जाँय पिरान ॥ असल सरद जल प्याय दे, आवे बदनमें जान ॥

आवे बदनमें जान मेरा करडा दिल साफ नरम होता ॥ मेरे तनकी तपत बुझा जलसे हरगिज नहिं जिगर गरम होता ॥ ये सरद सुराई भरी नीरकी तुझपर मेरा भरम होता ॥ प्यासीको नीर पिला पूरन दुनियामें तेरा धरम होता ॥ मु ॥ कर इश्क सजादे ॥ और नहीं कहती जादे ॥ लिपट गलेसे आन यही मरदोंके कादे ॥ १०१ ॥

दोहा पूरनका.

सत सरवरमा जल नही, गए छोड अस्थान ॥
जिस जलकी प्यासी फिरे, वह पानी मुल्तान ॥

वह पानी मुल्तान किसी बिरलेको होय खबर माए ॥ मन मार मजेसे बैठ रहो रख दीन इमान सबर माए ॥ अपने घर पानी छान पियो कर मनमें ज्ञान जबर माए ॥ परघरका पानी पीती है क्या रहैगी सदा अमर माए ॥ मु ॥ सुन माता म्हारी ॥ पुत्रके पालनहारी ॥ शिरपर फेरो हाथ आयामैंशरण तुम्हारी ॥ १०२॥

दोहा नूनादेका.

रानीने झट कँवरका, जाकर पकडा हाथ ॥
अब तेरा क्या वश चले, कहो कुँवरजी बात ॥

कहो कुँवरजी बात तेरी मैं सारी आब तनकी तारूं ॥ मैं दरजा समझूं दोस्तीका मा पुत्तरपर मिट्टी डारूं ॥ विन भोग किये जाने नहीं दूं तू हारे चाहे मैं हारूं ॥ तू भला चहे चढ़ सेजोंपर नहिं हाथ पकड मुहपर मारूं ॥ मु ॥ कर इश्क सजा दे० ॥ १०३ ॥

दोहा पूरनका.

माता थप्पड पुत्रके, मार तू अपने हाथ ॥
सहस्र बुद्धि होवैं प्रगट, निरमल होजा गात ॥

निर्मल होजा गात वदनपर खडग सैंत कर धर माए ॥ मेरी तेरे हाथ गत मुकती हो कुछ ऐसा कर हुन्नर माए ॥ माताके हाथ मरे पुत्तर मेरा होय भिश्त में घर माए ॥ मैं चला जाऊं वैकुंठ धामको नहीं किसीका डर माए ॥ मु ॥ सुन माता म्हारी० ॥ १०४ ॥

दोहा नूनादेका.

कुँवर०-मुझको माता मत कहो, मैं कहती हरचन्द ॥
मैं मारूं कटारी वदनमें, मुझे बाबलकी सौगंद ॥
बाबलकी सौगंद तेरी मैं बहु मुद्दतसे आस करूं ॥ मत भेज निरासी प्यासीको तुझ पास इश्क परकाश करूं ॥ मेरे तनमनमें ऐसी आवे पूरनसंग भोग विलास करूं ॥ बरखातर तेरी जुदाईके मदभरे वदनका नाश करूं ॥ मु ॥ कर इश्क सजादे० ॥ १०५ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-परदा फटे जमीनका, भूँ गिर जा असमान ॥
छत्र टूट धरनी पडे ध्रू तज दे अस्थान ॥
ध्रूतजदे अस्थान ज्ञानकर हमसे पूछ सबब माए ॥ उस भरतखण्डके राजाका कुछ रखती नहीं अदब माए ॥कुल दाग लगे उतरे न कभी हिंदूका दीन मजब माए ॥ पुत्तरके हाथ लगाती है तू ये क्या करे गजब माए ॥ मु ॥ तू माता० ॥ १०६ ॥

दोहा नूनादेका.

पूरन-तेरे दमकी खातरां, करती हूँ सौ बार ॥
जिन्दगानी का रस मजा, लेता नहीं गँवार ॥
लेता नहीं गँवार कुँवर मेरे महलोंमें कब कब आवे ॥ दिल देख दिवानी होयरही तू साबित जान नहीं पावे ॥ तेरी सुंदर छबिने मार लई सब शान शकल मनको भावे ॥ मैं कसम जवानीकी खाती बुद मेरा दिल तुझको चावे ॥ मु ॥ कर इ० ॥ १०७ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-जोरा जुलमी मत करो, छोड कँवरकी बांय ॥
मेरी एक जुबान है, मैं पुत्तर तू माय ॥

मैं पुत्तर तू माय समझ मत डूबे एक लखत माए ॥ मैं पुत्र पिताकी सेज चढूं मुझमें नहीं जोर सकत माए ॥ सब भरतखण्डमें उधम मचे म्हारी चरचा करें जगत माए ॥ अब दीन इमाँ रखना मुशकिल दुनियाका भाव भगत माए ॥ मु ॥ तूं माता० ॥ १०८ ॥

दोहा नूनादेका.

पूरन०–इश्क कन्हैयालालने, किया गोपियों संग ॥
जा पहुँचे गढ द्वारका, जरा न मोडा अंग ॥

जरा न मोड़ा अंग संग जा कुबजासे मोहब्बत लाई ॥ वो पंडा भीम भगत हरके घर बीच नार हुरमा पाई ॥ गौतमकी नारि अहल्यासे इन्दरने कीन्ही अशनाई ॥ ये इश्क मुहब्बत प्यार दोस्ती दरगाहसे होती आई ॥ मु ॥ करइस्क सजादे० ॥ १०९ ॥

दोहा पूरनका.

माता०–इश्क मोहब्बत दोस्ती, होता जुलम कमाल ॥
आखिरको दरगाहमें, होगा बुरा हवाल ॥

होगा बुरा हवाल तेरी पुत्तरसे लगी लगन माए ॥ इस हाल नरकमें जा जननी जहां बहुती जले अगन माए ॥ तूं भस्मकुंडमें गिर जागी उड़ जागी हवा गगन माए ॥ मत छेड कृष्णको याद करो तन मनमें रहो मगन माए ॥ मु ॥ सुन० ॥ ११० ।

दोहा नूनादेका.

पूरन०–आगे खडी तेरे नाजनी, चन्द्र सूर्यकी कोर ।
बिजलीसी धमकूं खडी, मेरे दिया कामने जोर ॥

दिया कामनें जोर शोर बिरहनको आन सताता है ॥ इह वक्त गलेसे लिपटो जानी अवसर बीता जाता है ॥ एकबार बदना

हाथ फेर दे मैं भिक्षक तू दाता है ॥ खुद खास सेजपर ला डेरा क्यों हरदम दिल तरसाता है ॥ मु ॥ कर० ॥ १११ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-तेरा बदन बिषका भरा,है सब विषकी खान ॥
तेरे विषका गारडू, राजा सीलेवान ॥

राजा सीलेवान जौन इस विषकी करे गती माए ॥ सब विध अमृत कर पी जागा छोडे नहिं एक रती माए ॥ विषभरे बदन रस जोबनका है राजा संखपती माए ॥ तू सच पूंछे तौ कुंवर तेरा ये पूरन भगत जती माए ॥ मु ॥ तू माता म्हारी० ॥ ११२ ॥

दोहा नूनादेका.

रानीने गल कँवरके, लीनी जप्फी पाय ॥
अबतुझको छोडू नहीं, चाहे कुछ क्यूं ना होजाय ॥

कुछ क्यों ना होजाय कुंवरके गलखूंची कसके लावे ॥ झट (प)कड धरनिपर गेर लिया कभी नीचे जा ऊपर आवे ॥ अब (कु)स्तमकुस्ता होते हैं खिज खिजके तन बुडकों खावे ॥ कह (ब)ालकराम ऐसी माताका हरगिज नहिं दरशन पावे ॥ मु ॥ (क)र इ० ॥ ११३ ॥

दोहा पूरनका.

घुलतों घुलतों कुँवरका, कमल गया कुमलाय ॥
नाजुक वदन मलूक था, कुछ नहि पार बसाय ॥

(कु)छ नहि पार बसाय बडी कुसकलसे जान छुटा भागा ॥ दो (क)र दुहत्थड माताकी खुद आप कमरमें खा भागा ॥ महलोंसे (फौ)वित निकल गया माताको परे हटा भागा ॥ कह बालकराम (जब)रदस्तीसे पूरन पिंड छुटा भागा ॥ मु ॥ झट नीचे आया ॥

फूल चेहरा कुमलाया ॥ माता तू मरजाय पुत्रको बुडको खाया ॥ ११४ ॥

दोहा नूनादेका.

कुँव०-मेरा सबर तुझपर पडो, तेरा जाइयोसत्यानास ॥
महलोंसे साबित गया, मुझको छोड निरास ॥

मुझको छोड निरास कुँवर तेरी उलटी माला फेरूंगी ॥ जब अवेगा ह्यां संखराव धुरलगका किस्सा छेडूंगी ॥ सब हाल मुफस्सल ब्यान करूं उस आगे बाल बखेरूंगी ॥ तुझे फिरभी कहूँ समझ पूरन नहिं सांस सबरके गेरूंगी ॥ मु ॥ तू हटके आजा ॥ महलमें फेरा पाजा ॥ मैं तुझपर कुरबान मुझे सीनेसे लाजा ॥ ११५ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-दिल चाहेसो तुम्ह करो, हैतुम्हको अखत्यार
मैं तुजजैसी मायका, करता नहिं इतबार ॥

करता नहिं इतबार तेरा मैं असल ब्यान जड मूल करूं ॥ तू लाख कहे मैं एक नहीं मानूंगा हुकम अदूल करूं ॥ नर नार नगरके भ्रष्टेंगे क्या हासिल जमा वसूल करूं ॥ म्हारी बालकराम करे चरचा हरगिज नहिं बात कबूल करूं ॥ मु ॥ बेहतर मरजाना ॥ होवे सो हरिका बाना ॥ बेशक राजापास मेरी तू चुगली खाना ॥ ११६ ॥

दोहा नूनादेका.

पूरन०-देख तू मेरीबात को, तेरा क्या करवाढूं हाल ॥
आवन दे संखरावको, तुझै करूं जलादों नाल ॥

करूं जलादों नाल हाल तुझ स्यालकोटसे बाहर करूं ॥ बिलफोर कतल करवा दूंगी मारनको खड्ग तयार करूं ॥ तेरी जान जिबह हो जावेगी जीनेसे बहुत लाचार करूं ॥ तेरे रक्त खूनमें बस्तर रंगके सब अपना सिंगार करूं ॥ मु ॥ तू हटके आजा महलमें फेरापाजा ॥ मैं तुझपर कुरवान जरा सीनेसे लाजा॥ ११७॥

दोहा पूरनका.

माता०–कुम्भकर्न रावन मरे, हुआ कंसका काल ॥
पांचों पाण्डव मर गये, दिया हिमालय गाल ॥

दिया हिमालय गाल मरे कोतरसौ कौरव सब माए ॥ दुर्योधन राजा करन मरे देते थे दान दरब माए ॥ शृंगी ऋषि हिरनाकुश मर गये रखते थे बहुत गरब माए ॥ अब हम तुम बालक राम मरैं लग जागी गात जरब माए ॥ मु ॥ थिररहे न सारे ॥ मरे दशरथसे प्यारे ॥ मरे विक्रमादित्य जगत दुख भञ्जनहारे ॥ ११८ ॥

दोहा नूनादेका.

रानीने अभरन तारके, दिये ताकमें गेर ॥
आसन पाटी ले पडी, लीने बाल बखेर ॥

लीने बाल बखेर नारने अजब गजब फैला लीना ॥ तनके सब बस्तर फाड़ दिये नथ बिंदीमें बल पा लीना ॥ दो चार घरौंट सीने ला नयनोंका कज्जल भा लीना ॥ मन्दरमें दीवा गुल करके एक औंधा पिलँग बिछा लीना ॥ मु ॥ ला लीना डेरा ॥ महलांमें किया अँधेरा ॥ बदन किया विकराल लाल करलीना चेहरा ॥ ११९ ॥

दोहा पूरनका.

पूरन पहुँचा महलमें, असल मायके पास ॥
जा डोढीमां पग धरा, खुश होगया रणवास ॥

हुआ खुशी रनवास जाय माताको शीश नवाया है ॥ अब अरजमन्द आजिज होके चरणोंसे ध्यान लगाया है ॥ अब मेदवार मतवज्जे हो माताका दरशन पाया है ॥ तेरा पूरन भगत पुत्र जननी तुमें आज मिलनको आया है ॥ मु ॥ मिल ले मेरी माता ॥ तेरा हक भरा न जाता ॥ जननीदेदीदार तेरा मैं दरशन पाता ॥१२०॥

दोहा ईंछराका.

माता मिलती पुत्रसे, सरली कूकां मार ॥
पूरनको ले गोदमें, तन मन दीना वार ॥

तनमन दीना वार कुँवरपर सदके जा ईंछरा रानी ॥ मुख चूंबे नार बलैया लेती बारबार पीवे पानी ॥ तन झाड शीश पुचकार रही खुद आप करे हाथों छानी ॥ मन शोच ज़िमी चुचकार रही मेरी आज सफल हुई जिंदगानी ॥ मु ॥ कुदरतकी बानी ॥ अजब मेरे मन मानी ॥ दीनी आग बुझाय गेरके ठण्डा पानी ॥ १२१ ॥

दोहा राजाका.

शाम सुए राजा उठे, महलों चले सिधार ॥
ना ठौढीमें चांदना, ना कोइ पहरेदार ॥

ना कोइ पहरेदार महलके झट राजा अन्दर आए ॥ एक हार नौलखा नज़र पडा जहँ सब मोती बिखरे पाए ॥ दरमन्दर निपट अंधेर पडा ज्यों भर भादौं बद्दल छाये ॥ सब उलटे कलश पलंग मूंधे जहँ रानीने बिस्तर लाये ॥ मु ॥ बांदी पुकारी ॥ तुझे क्या हुई बिमारी ॥ कहां नूनादे नार बात बतला दे सारी ॥ १२२ ॥

दोहा बांदीका.

राजा०-पटरानीको देखियो, कर रही बुरा हवाल ॥
मन्दिरके अन्दर पडी, सिरके बिखरे बाल ॥

सिरके बिखरे बाल रानीको होश नहीं अपने तनकी ॥ मैं दुख सुख सारा पूंछ चुकी कुछ कहती नहिं अपने मनकी ॥ ऐसी बेहोश खमोश पड़ी ज्यों पोहमास कोयल बनकी ॥ दो चार घड़ी ऐसी तड़पी ज्यों चोट जिगर लागी घनकी ॥ मु ॥ मनकीनहिं कहती ॥ बोल सबके शिर सहती ॥ पूछा सौ सौ बार आप चुपकी हो रहती ॥ १२३ ॥

दोहा राजाका.

रानीसे राजा कहै, खडा पलंगके पास ॥
हाथ पकडके पूछता, क्यूं दिल किया उदास ॥

क्यों दिल किया उदास आज मुझपास हकीकत कहो सारी ॥ कोई क्या क्या सदा सरीकी सौतनने तेरे भर बोली तनमें मारी ॥ क्या किसी तुझको मन्दा बोला किसी साथनने दीनी गारी ॥ क्या किसी बांदी लौंडीने तेरी नहिं कीनी ताबेदारी ॥ मु ॥ हमसे कहो प्यारी तुझे क्या हुई बिमारी ॥ कहु नूनादे नार बात बतला दे सारी ॥ १२४ ॥

दोहा नूनादेका.

राजा-मैं क्या कहूं सिर बापका, मेरा मतना पूँछहवाल ॥
मेरी मरियो माता जामदी, जिन व्याही तुम्हारी नाल ॥

व्याही तुम्हारी नाल हाल अब घूट सबरकी मैं भरती ॥ तेरा गढ़रो स्याल उलट जइयो हो तले कास ऊपर धरती ॥ सब भरतखण्डका राज गरक हो राम करे मैंभी मरती ॥ तू मर जा तेरा पुत्र मरै दरगाहमें यह अरजी करती ॥ मु ॥ कोसूं मनमाहीं ॥ कहूँ राजा तेरे तांहीं ॥ मनता पूछ हवाल बात कहनेकी नाहीं ॥ १२५ ॥

दोहा राजाका.

रानी॰-सच कहना क्या बात है, हमसे कहो हवाल ॥
किसने तेरा क्या लिया, सबको देती गाल ॥
सबको देती गाल हकीकत क्यों नहिं खोल सुनाती है ॥ तू एक लखत कोसे सबको नाहकमें बुरा मनाती है ॥ वो बात जिगरकी कह हमसे इस वक्त जमुद्दा पाती है ॥ तेरे दुख सुख दरद सरीकीसे क्या हासिल बात छिपाती है ॥ मु ॥ हमसे कहो प्यारी ॥ तुझे॰ ॥ १२६ ॥

दोहा नूनादेका.

राजाजी-बडा पाप तेरे नगरमें, पुत्र पितासे तेज ॥
जरा अदब करते नहीं, चढें मायकी सेज ॥
चढ़ें मायकी सेज पुत्रके खुदमाता मनमें बसती ॥ तू पुत्तर क्या घोड़ा पाला माताको देख छुटे मसती ॥ मैं देख कुँवर कुरबान गई और प्यार करूं जाऊं हँसती ॥ मैं बेटा बेटा करती थी मेरेपर करी जबरदसती ॥ मु ॥ झट बांह मरोरी ॥ हाथ की चुरियां फोरी ॥ तेरे पुत्रने आज मेरेसँग खेली होरी ॥ १२७ ॥

दोहा राजाका.

रानी॰-पूरन तो ऐसा नहीं, उसे जाने खलक जहान ॥
मेरे ऐसे पुत्र गरीबपर, झूठा धरे तुफान ॥
झूठा धरे तुफान कबी नाहक घर तेरा तीन होवे ॥ ये बातें झूठ खिलाफ तेरी कुछ मुझको नहीं यकीन होवे ॥ गुरुज्ञानके बान लगे पूरनके कभी न बुद्धी क्षीण होवे ॥ सिध साध ब्राह्मन मात पिताका दरशन देख अधीन होवे ॥ मु ॥ हरगिज नहिं मानूं ॥ बात सब झूठी जानूं ॥ साबित मजल पहुँचाय फेर मैं असल पिछानूं ॥ १२८ ॥

दोहा नूनादेका.

राजा०--भगत देख मत भूलना, भगतबुरे हों लोग ॥
अपनी नारी त्यागिके, करैं परनारी सँग भोग ॥
परनारीसंग भोग राव ऐसा इनसाफ चुकाते हो ॥ मैं बात कहूँ तुम सुनते नहिं कानोंमें मारे जाते हो ॥ कुछ तुमसे कहना क्या हासिल:एक बात ख्याल नहिं लाते हो ॥ अब हमको तुम्ह झूठी करते पुत्तरका ऐब छिपाते हो ॥ खा मरूं कटारी ॥ जान नहिं लई उधारी ॥ जो न करो इनसाफ़ छोड़ दो आस हमारी ॥ १२९ ॥

दोहा राजाका.

रानी०-किस विध अपने कँवरका,साबित करूं कसूर ॥
कई सगाई कर चुका, एक न की मंजूर ॥
एक न की मंजूर कुँवरके सादीका फन्द डार चुका ॥ मैं लाख कही मेरी एक न मानी कहता कहता हार चुका ॥ मिलजुमलह खास कचहरीके मैं सौ सौ दफे पुकार चुका ॥ पूरनको व्याह मंजूर नहीं मेरा मन्त्रीभी झख मार चुका ॥ मु ॥ सबने समझाया ॥ कुँवर एक ख्याल न लाया ॥ किस विध मापर आप कुँवरने मान डिगाया ॥ १३० ॥

दोहा नूनादेका.

राजा०-तेरा पूरन पुत्र जवानहै,उसे चाहिये नार सतूल॥
तू नाता लेय नदानका, वह कैसे करे कबूल ॥
कैसे करे कबूल कुँवरके घर औरत भरखम चाहिये ॥ वह अपने दिलमें समझ गया घर नार सुहागन कहँ पाइये ॥ यूं सोच महलमें आन घुसा किसी औरतसे मोहबत लाइये ॥ उस आप सरीखी मैं

पाई फेर और कहीं किसको खाइये ॥ मु ॥ गलजप्फी पाई ॥ जरा दहसत नहीं खाई ॥ ऐसा हुआ बेलिहाज शरम रतियों नहिं आई ॥ १३१ ॥

दोहा राजाका.

रानी०-तेरी बात लगती नहीं, पूरन नहिं बेशहूर ॥
तुमसे आ कुस्ती करे, क्या उसकी मकदूर ॥

क्या उसकी मकदूर सहूरसे सांच बात बतला रानी ॥ जो झूठा जान तुफान धरे गिरे नरककुण्डमें जा रानी ॥ तुझ साथ कुँवरने करी जास्ती साबित मजल पहुँचा रानी ॥ परमेश्वरसे डरके कहना झूठा मत दोष लगा रानी ॥ मु ॥ सच कहना आके ॥ कसम बाबलकी खाके ॥ करूं कुँवरको कतल पास अपने बुलवाके ॥ १३२ ॥

दोहा नूनादेका.

राजा०-मैं अपना पुत्तर जानके, हँस हँस करती बात॥
बेधडक कुँवरने आनके, सीने डारा हाथ ॥

सीने डारा हाथ खैंचके तनका बुरा हवाल किया ॥ मैं पकड़ कमरसे गेरी पलँगपर ऐसा जुलम कमाल किया ॥ तन तोड बदन सब खाया चुटकी काट गाल मुख लाल किया ॥ मरवादूं ऐसे पुत्तरको अब देख मेरा क्या हाल किया ॥ मु ॥ गलजप्फी पाई ॥ जरा दहसत नहीं खाई ॥ ऐसा हुआ बेलिहाज शरम रतियों नहिं आई ॥ १३३ ॥

दोहा राजाका.

तन रानीका देखके, लगी बदनमें आग ॥
उठी लाट बुझती नहीं, गई बसन्दर जाग ॥

गई बसन्दर जाग जिगरमें दमपर दम उभरी जाती ॥ ये असल बात कुछ झूठ नहीं है साबित मिसल नजर आती ॥ कल सुबह

कुँवरको क़तल करूं ये बात मेरे मनको भाती ॥ अब जरा मुझे बरदाश्त नहीं जो माफ करूं ला लूं छाती ॥ मु ॥ ना करूं हिमाती॥ कबी बनता नहिं साथी ॥ दरशनसे बेजार जरा सूरत नहिं चाहती ॥ १२४ ॥

दोहा नूनादेका.

राजा०-देख कुँवरको जासती, मेरे दी वस्तरने फाड ॥
चीर चीर कर फैंक दिये, कर दी नगन उघाड ॥

करदी नगन उघाड़ मेरा उस आगे नहीं जबाब हुआ ॥ मुझे गेर तले मुँह बन्द किया ऊपर चढ़ भोग सिताब हुआ ॥ मुझे तन मनकी कुछ होश रही नहिं ऐसा बदन बेताब हुआ ॥ मुझे भाई बीर बाबलकी कसम मेरेसे कुँवर खराब हुआ ॥ मु ॥ अब जीऊं नांई ॥ कहूँ राजा तेरे तांई ॥ मरूं जहर विष खाय यही मेरे मनको भाई ॥ १२५ ॥

दोहा राजाका.

रानी०-कहों मैं अपने कुँवरका, क्या कुछ करूं इलाज॥
उस पापी बदमाशने, जरा करी नहिं लाज ॥

जरा करी नहिं लाज आज यह कड़े ज़ुल्मकी बात हुई ॥ हंकार हर्ष मद गुस्सेमें पर्वतसे भारी रात हुई ॥ कभी बाहर आवे भीतर जा दिलकी नामौजूदात हुई ॥ कह बालकराम उस संखरावको मुशकिलसे परभात हुई ॥ मु ॥ शमसेर संभाली ॥ कमरपर सैफ लगाली ॥ तरकस तीर कमान हाथ पिस्तौल उठाली ॥ १२६ ॥

दोहा नूनादेका.

राजा०-कतल कराके कुँवरका, लीजो खून निकाल ॥
पूरण भक्तके रक्तमें, रँगूं चूनरी लाल ॥

रँगूँ चूनरी लाल राव मेरा जब जीनेका धरम होवे ॥ ये लोग दुनियांके डरते रह ऐसा नहीं बुरा करम होवे ॥ जग बीच नसीहत पहुँचेगी सुनतोंके कान गरम होवे ॥ आगेको पुत्तर अदब करेंगे माकी लाज शरम होवे ॥ मु ॥ तुम क़तल कराना ॥ खून भर प्याले लाना ॥ पहले रँगूं पोशाक फेर खानेको खाना ॥ १३७ ॥

दोहा राजाका.

राजा आये दरबारमें, कह सन्त्रीसे बात ॥
पूरनको हाजिर करो, कहां गँमाई रात ॥

कहां गमाई रात कुँवरको गिरफतार करके ल्यावो ॥ उस मन्त्रीसे ऐसा कहना इस वक्त दौड जलदी जावो ॥ बडी रानीका डोला कसवाके उसको भी लेते आवो ॥ सब काजी मुल्ला पंडित और दाई ददाको बुलवावो ॥ मु ॥ जलदीसे जावो ॥ जरा मत देर लगावो ॥ जो कुँवर करे कुछ उज्र मारके खाल उडावो ॥ १३८ ॥

दोहा संत्रीका.

पथरकलाको ठायके, सन्त्री हुआ तयार ॥
सर संगीन चढायकें, जलदी चला सुधार ॥

जलदी चला सुधार संत्री झट मन्त्रीपे आया है ॥ सुन रूपेसाह दिवान अभी राजाने तुझे बुलाया है ॥ जितने भर काजी मुल्ला पंडित सबपर हुकुम चढाया है ॥ बेतरफ कुँवरकी राजाने कुछ सख्त हुकुम फरमाया है ॥ मु ॥ रानी बुलवाई ॥ जौन पूरनकी माई ॥ चल तू कुँवर शिताब रावकी चिट्ठी आई ॥ १३९ ॥

दोहा पूरनका.

बजीर०-मैं जानूं जिस कारने, किया पिताने याद ॥
आज कुँवरकी खैर नहिं, सख्त हुकुम जल्लाद ॥

सख्त हुकुम जल्लाद मेरेपर विना हायकी घाय लगी ॥ माताने चुगली खाई पितापे तुरत बदनमां भाय लगी ॥ दिलमें कुछ शुबह पडा राजाके इस विध मेरी चाय लगी ॥ तू मान चहे ना मान सन्तरी कजा हमारी आय लगी ॥ मु ॥ देती दिखलाई ॥ अगमसे चिट्ठी आई ॥ किवलेगाहके पास मायने चुगली खाई ॥ १४० ॥

दोहा वजीरका.

रानीका दीवानने, डोला लिया कसवाय ॥
ताम झाम तनवायके, भीतर दई छिपाय ॥

भीतर दई छिपाय जैसा कुछ राजोंका दस्तूर होवे ॥ दो दाइ ददाको साथ लिये बोलनका नहिं मखदूर होवे ॥ वे काजी मुल्ला पण्डितभी कोई नहीं हुकुमसे दूर होवे ॥ उस रूपेसाह दिवान साथ पूरनभी हाजिर हजूर होवे ॥ मु ॥ ना देर लगाई ॥ हुकुम तामील बजाई ॥ आमखासमें आन रावकी फते मनाई ॥ १४१ ॥

दोहा राजाका.

गुस्सेमें राजा भरे, चढ गया हर्ष हंकार ॥
आँखोंमें डोरे खूनके, माथेमें बल चार ॥

माथेमें बल चार पडे भर बदन जोश हंकार हुआ ॥ बे धडक कुंवरके मारनको झट ले शमशेर तयार हुआ ॥ ज्यों सैद मगर स- प्याद फिरे रन आप बिदस्त फिरार हुआ ॥ ज्यों गुर्व मुस्ककी इन्त- जारीमें दीदे तलब दिदार हुआ ॥मु॥ देता हूँ गाली॥जरा मोहब्बत ना पाली ॥ मुखपर बरसै खून आंखमें छा रही लाली ॥१४२॥

दोहा पूरनका.

खौफ करे दिलमें डरे, थरथर करे शरीर ॥
हाथ जोडके पूंछता, क्या है गुनह तकसीर ॥

क्या है गुनह तकसीर पिता क्यों अपने दिलसे दूर किया ॥ नर नार नगरके जा पूंछो कुछ ऐसा नहीं कसूर किया ॥ जो काम मुझे फरमाया था मैं हसबुल हुकुम हजूर किया ॥ मैं रीत कायदे पर चलता कोई उलटा नहिं दस्तूर किया ॥ मु ॥ दरयाफत कर लो॥ बात सुन चितपर धर लो ॥ निकले मेरा कसूर मारकर दस्त कतरलो ॥ १४३ ॥

दोहा राजाका.

पूरन–तू कहता मैं भक्त हूं, भजता नित भगवान ॥
तेरे अन्तःकरणमें कतरनी, निपट कपटकी खान ॥

निपट कपटकी खान जायके महलोंमें आफत ठाई ॥ तैंने माताके संग करी जादती और नहीं तुझको पाई ॥ कुछ मेरी तरफ का लिहाज किया नहीं दिल अन्दर दहशत खाई ॥ तू तीनसौ साठ सगाई छोडी छोटी माय पसद आई ॥मु॥ जा चश्मों ताडी॥ जिमीपर पकड पछाडी ॥ लई पलँगपर गेर नारकी होस बिगाडी ॥ १४४ ॥

दोहा पूरनका.

पिता॰–तुम तो अपनी जुबानसे, मत कहो ऐसी बात ॥
तुमको सब मालूम है, जो हो औरतकी जात ॥

जो हो औरतकी जात पिता जो करके मथन पिछानोगे ॥ दरयाफत कर इनसाफ करोगे तभी चरित्तर जानोगे ॥ इस बखत तुम्हें हँकार चढा अब मेरा कहा क्यों मानोगे ॥ सच झूठ अगाडी निकलेगा जब दूध और पानी छानोगे ॥मु॥ क्या कहूँ घनेरी ॥ अकलमें आवे तेरी ॥ माताने तदबीज करी मारनकी मेरी ॥ १४५ ॥

दोहा राजाका.

पूरन-रानीकीही जुबानसे, होता हाल मालूम ॥
माताको मिलने गया, जाय मचाई धूम ॥

जाय मचाई धूम किसीने जिकर हमारे पास किया ॥ तू रानीके संग करी जादती नाजुक बदन उदास किया ॥ ऐसी बेहोश खमोश हुई सब तनका सत्यानाश किया ॥ फिर लानत तेरे जीनेको माता संग भोग विलास किया ॥ मु ॥ कर सीना जोरी ॥ हाथकी चुरियां फोरी ॥ होके पूत कुपूत मायसँग खेली होरी ॥ १४६ ॥

दोहा पूरनका.

रब देखी कहते नहीं, तेरा रुख माताकी गैल ॥
कहीं पृथिवीपर होती नहीं, मापुत्तरकी फैल ॥

मापुत्तरकी फैल पिता मैं ऐसा नहिं बुध हीन हुआ ॥ सब बातें झूंठ खिलाफ सुनी मेरी माका तुम्हें यकीन हुआ ॥ इन बातोंमें मेरी खैर नहीं ये पहरा खड़ा संगीन हुआ ॥ तुम चाहे जैसी कसम खवालो पूरन नहिं सतहीन हुआ ॥ मु ॥ हरिका हितकारी ॥ पड़ा मनमें शक भारी॥ऐसा करो इनसाफ पाप पुन लेउ उभारी॥ १४७॥

दोहा राजाका.

पूरन-रानी गऊ गरीबनी, क्या जाने इश्ककी सार ॥
छलबाजी करती नहीं, पेट भरनसे कार ॥

पेट भरनसे कार कभी हरगिज नहिं बात कहे झूंठी ॥ जो इश्क मोहब्बत करे दोस्ती अबलग नहीं उमर ऊठी ॥ चित चढी चरित्तर एक नहीं मेरे इस विध दिलसे ना छूटी ॥ ये सिर्फ तेरी बदमाशी है माताकी सेज अधिक लूटी ॥ मु ॥ कर सीना० ॥ १४८ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-तिरिया तुरकी बानियां, भील भले मत जान ॥
गरीब देख मत भूलना, निपट कपटकी खान ॥
निपट कपटकी खान जहांमें मतलब काढा चाते हैं ॥ कुछ जबलग पार बसाती है मित्तरसे दगा कमाते हैं ॥ बन मित्र पेटमें आन घुसैं सब झूठी कस्में खाते हैं ॥ कहो इनका क्या इतबार पिता जो परघर बुरा मनाते हैं ॥ मु ॥ कुछ ख्याल न लाया ॥ नहीं इनसाफ चुकाया ॥ सुन सुन झूठी बात मुझे बदमाश ठराया ॥ १४९ ॥

दोहा राजाका.

पूरन-तूं कहेगा मेरा रावने, एक न सुना सवाल ॥
तुझकोभी मैं पूंछता, अपना कहो हवाल ॥
अपना कहो हवाल कुँवर ये बात बुरी किससे बिगरी ॥ सच कहना पहलो तू निघराया रानी साथ तेरी निघरी ॥ लगा आग बभूका बुझता नहिं मेरे लगा दाग तनमां जिगरी ॥ झूठेको सख्त सजा दूंगा जरजिंदगीपर करदूं डिगरी ॥ मु ॥ ना करूं मुलहाजा ॥ हुकम ला दूंगा ताजा ॥ दूंगा क़तल कराय जरा आवे नहिं लाजा ॥ १५० ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-अपने मुखसे कब कहूं,मेरी माताकी तकसीर ॥
जो मुखसे ऐसी कहूं, मेरा अवगुण भरा शरीर ॥
अवगुण भरा शरीर पिता मैं कैसे कहूँ बुरी माता ॥ सब जस अपजस अखत्यार अलखके है किसमतमें सो पाता ॥ ना मैं झूठा ना मा झूठी किसमतका लिखा नहीं जाता ॥ मेरा अपना आपा

बुरा पिता माताको दोष नहीं लाता ॥मु॥ हमने मर जाना ॥ एक दिन जंगल जाना ॥ बखत आखिरी बीच मेरा है वही ठिकाना ॥ १५१ ॥

दोहा राजाका.

पूरन तेरी जबानसे, साबित हुआ कसूर ॥
अलबत हमें यकीन है, तैं कीना फैल जरूर ॥

तैं कीना फैल जरूर मेरी न्यूं बात समझमें आती है ॥ मैं दरयाफत सब हाल किया ये तेरी शरारत पाती है ॥ इस कदर मुझे मालूम हुआ तेरी जबां गुलझटी खाती है ॥ तकसीर सीर्फ साबित तेरी बोलसे जानी जाती है ॥ मु ॥ क्या विधा मिलाता ॥ आपकर ऐब छिपाता ॥ रानी बड़ी गरीब गऊको दोष लगाता ॥ १५२ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-फिर हटके इस बातकी, खूब करो परताल ॥
जरा खोट निकसे मेरा, लीजो खून निकाल ॥

लीजो खून निकाल मेरी तुम खालमें भुस भरवा देना ॥ रत्तीभर होवे कसूर मेरा बेधडक जान मरवा देना ॥ तब बेशक हाथ जलादोंके विलफोर कतल करवा देना ॥ जो बन्देकी तकसीर होवे धड़ धरतीमें धरवा देना ॥ मु ॥ हमने मर जाना० ॥१५३॥

दोहा राजाका.

पूरन-तू सारा भरा फरेबका, तेरे भीतर कलम तरास ॥
सहत छुरी शीरी जबां, छटा हुवा बदमास ॥

छटा हुआ बदमास फिरे जा रंगमहलोंमें विष बोया ॥ कर जोरा ज़ुलमी रानीसे तू ऐसा बेमुरियत होया ॥ तैं हिंदी फारसी अंग्रेजीका चार इलम पढ़के खोया ॥ अब दीन इमान तजा दिलमे चढ़ माताकी सेजों सोया ॥ मु० ॥ कर सी० ॥ १५४ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-जिनको प्यारी इस्तरी, कब प्यारे हों पूत ॥
तुम बस पड रहे नारके, क्या होगी करतूत ॥

क्या होगी करतूत सुनो इनसाफ हाथ नहिं आवेगा ॥ जिनपर फरमायश औरतकी वह क्या इनसाफ चुकावेगा ॥ झूठेको सच्चा कर देगा सच्चेको झूठ ठहरावेगा ॥ अब पूरन अपनी जिन्दगानी की कबलग खैर मनावेगा ॥ मु ॥ हमने म० ॥ १५५ ॥

दोहा राजाका.

इतनी सुनके रावने, सीत लई तलवार ॥
पूरनको मारन चला, अब नहिं करूं उधार ॥

अब नहिं करूँ उधार कुँवर तैं बात तर्ककी क्या कीनी ॥ इन लोगोंको कुछ कह नहिं सकता गलमें जप्फी पालीनी ॥ बहु जुलम किया सब सूबोंने तेरी जीती जान छुटा दीनी ॥ मेरा मन्त्री दुश्मन हो निकला मेरे खड्ग हाथसे आछीनी ॥ मु ॥ नहीं मार उड़ता ॥ तेरा कहीं खोज न पाता ॥ ऐसा मारता खड्ग चला एडीतक जाता ॥ १५६ ॥

दोहा वजीरका.

हाथ जोडके वीनती, करै रूपेसाह दिवान ॥
लडकेको मत मारियो, तुम्हैं श्रीठाकुरकी आन ॥

श्रीठाकुरकी आन तुम्हें कभी हाथ कुँवरके लावोगे ॥ गुस्सेमें इसको मार चुकोगे फिर पीछे पछितावोगे ॥ थारे सब महलोंमें एक कुँवर फिर और कुँवर कहां पावोगे ॥ सब भरतखण्डमें चरचा हो पुत्तर कह किसे बुलावोगे ॥ मु ॥ मत पाप कमाना ॥ पडै गंगाजी न्हाना ॥ बालक है बेहोश हाथ इसके मत लाना ॥ १५७ ॥

दोहा राजाका.

संखरावकी बातको, सुन रूपे साह दिवान ॥
तू कहता था पुत्तर तेरा, निमट गया बुधमान ॥

निमट गया बुधमान कुँवरको अकलमन्द बतलाता था ॥ दर हमेश बडाई करता था बेखूबी धीर बँधाता था ॥ मैं बुरा जमाना देख कुँवरको जलदीसे परनाता था ॥ इसलिये तीन सौ साठ सगाई किस खूबीपे हटाता था ॥ मु ॥ सब दोष तुम्हारा ॥ कुँवर रख दिया कुँवारा ॥ अपनी बात कबूल उलट दिया हुकम हमारा ॥ १६८ ॥

दोहा वजीरका.

राजाजी-रानीकी कहते नहीं, जिसपर तेरा प्रेम ॥
पूरनभक्तकी तरफसे, कर जाऊंगा नेम ॥

करजाऊंगा नेम कुँवरकी खातर कस्मा खा लूंगा ॥ श्रीगंगा-जीके किनारेपर मैं हाथों हलफ उठा लूंगा ॥ तकसीर कुँवरकी निकलेगी गल अपने फांसी पा लूंगा ॥ समशेर सीत कर धर गरदनपर जान जफा कर डालूंगा ॥ मु ॥ जो निकले झूठा ॥ कुँवर ऐसा नहिं ऊठा ॥ ये सब बात खिलाफ हलफ उलटा दो पूठा ॥ १६९ ॥

दोहा राजाका.

मंत्री०-तुम और पूरन दो जने, रहे जगतमें पाक ॥
मेरी रानी तो झूंठी हुई, जो कस्में खागई लाख ॥

कसमें खाई लाख रानीपर अलबत जुलम हुआ भारी ॥ कुछ जरा अदब ना किया कुँवरने पकड़ धरनपर दे मारी ॥ सब तनका सत्यानास किया सीनेपर जखम लगे कारी ॥ हरवक्त

नारके चेहरेपर दिनरात रहे सुरखी जारी ॥ मु ॥ नहिं हटे हटाई ॥ नार बुडकोंसे खाई ॥ ऐसा हुवा बेलिहाज शरम इसको नहिं आई ॥ १६० ॥

दोहा वजीरका.

राजा०-कहा किसीका मत करो, देख करो इनसाप॥
इन बातोंकी मुनसफी, करनी अपने आप ॥

करनी अपने आप साफ इन बातोंका निरखार करो ॥ इस बक्त जमाना खोटा है मत औरतका इतबार करो ॥ क्या खबर कौन तकसीरबंद दिलमें तुम सोच विचार करो ॥ घरबीच बैठके समझा दो कहिं ऐसी मत तकरार करो ॥ मु ॥ मकसुद सुत मेरा ॥ पुत्र खोटा नहिं तेरा ॥ पूरन तजे इमान जगतमें पडे अँधेरा ॥ १६१॥

दोहा राजाका.

मन्त्री०-तू क्या जाने कुँवरको, नेक चलन रणशूर ॥
पूरन प्राधी निर्गुनी, मनपापी मगरूर ॥

मनपापी मगरूर जहांमें मकर कुँवरकी करनी है ॥ करे जैसी करनी वैसी भरनी तैसी पार उतररी है ॥ तू भक्त देख मत भूल भरोसे झूठी हाथ सुमरनी है ॥ सुन्दर छबि शकल सजा देखे दिल अन्दर पाप कतरनी है ॥ मु ॥ यह भरी पापकी ॥ नजर है बुरी आपकी ॥ मासँग कीना फैल शरम ना करी बापकी ॥ १६२ ॥

दोहा वजीरका.

राजा०-किस्मतसे लाचार सब, आखिर जुग परवान॥
परलों होय असंख्य जुग, तो पूरन तजे इमान॥

पूरन तजे इमान कभी देखा नहिं मुख परनारीका ॥ सतसंगत है सिध साधनकी जगमें है भक्त विहारीका ॥ श्रीगोविंदनाम गोपा-

ललाल गुन गावे कृष्ण मुरारीका ॥ घट अन्दर मनमोहन मुरलीधर सुमिरन करे गिरधारीका ॥ मु ॥ करता है भारी ॥ सदा हरका हितकारी ॥ जपे अलख रघुनाथ राम लक्ष्मण बनवारी ॥ १६३ ॥

दोहा राजाका.

बात शरारतकी कहै, सुन मन्त्री बेशहूर ॥
एक बात पलटी नहीं, सब साबक दस्तूर ॥

सब साबक दस्तूर अरे हरवक्त मेरी बांधे धीरी ॥ तू कुँवर देख मतवज्जः हो गया सुन्दर देख जबां शीरी ॥ अजदहन सिर्फ शीरी जबानसे नाहक मुलक हुवा गीरी ॥ वे वचन विप्रके याद करो क्या कह गये पंडित कशमीरी ॥ मु ॥ ना रयनी चढेगी ॥ चढे तो फेर पड़ेगी ॥ रानी नहीं बदमाश झूठ तूफान जड़ेगी ॥ १६४ ॥

दोहा वजीरका.

राजा०-प्यास तजै नहिं धरतरी, भूख तजे नहिं काल ॥
सूर्य तजै नहिं रोशनी, जल नहिं तजे पताल ॥

जल नहिं तजे पताल जगतमा निर्गुण नहीं गुमान तजे ॥ कोई पंडित गुनी मुनी जोगी जन दिलसे नहिं गुरु ज्ञान तजे ॥ दो चन्द्र सूर्य नव लख तारोंमां ध्रुवजी नहीं अस्थान तजे ॥ युग चार पलट जांगे राजा कभि पूरन नहिं ईमान तजे ॥ मु ॥ पुण्य तजे न दाता ॥ प्यार तजती नहिं माता ॥ पूरन तजे इमान जगत घरलो हो जाता ॥ १६५ ॥

दोहा राजाका.

शंभू तिरिया देखके, शिवने तजा इमान ॥
कामदेव वश ना हुए, कन्धे चढा शैतान ॥

कन्धे चढा शैतान जाय अञ्जनीके कन्था बाप हुवे॥ मनमोहनका सत टूट गया कुबजासंग मेल मिलाप हुवे ॥ श्रीसूर्यदेवता कुन्ती ऊपर आशिक अपने आप हुवे ॥ इन्दर घर गन्धरवसेन कुँवरका बांदीके संग पाप हुवे ॥ मु ॥ शृंगी ऋषि हारे ॥ मछन्दरनाथ पियारे ॥ गये देवता भूल हैं पूरन कौन बिचारे ॥ १६६ ॥

दोहा वजीरका.

राजाजी-एक दूर अँदेशी बात है, पुरुष नारसे हीन ॥
सतरा विश्वे इस्त्री, पुरुष है विश्वे तीन ॥

पुरुष है विश्वे तीन इस्तरी दिल चाहे जिस विध बकती ॥ जब आप मुहारी हो जावे फिर लाज पुरुषकी नहिं रखती ॥ जब सतरा विश्वे जोश चढे फिर पुत्तर देख नहीं सकती ॥ वो छिनमातरमें डूबजावे और पुत्तरसे करतब करती ॥ मु ॥ ना करे समाई ॥ चाहे ब्राह्मण हो नाई ॥ ना कुछ करे विचार चाहे बेटा हो भाई ॥१६७॥

दोहा राजाका.

तू क्या जाने मन्तरी, मेरी रानी है बदमाश ॥
मेरी सभासे निकल जा, यही हुकम है खास ॥

यही हुकुम है खास तेरेपर तीन लाखका जुरमाना ॥ दो दाइ ददाको कर दीना छः छः महिने बंदिस्खाना ॥ सब पंडितोंके घर जप्त करो और काश्मीरका खैजाना ॥ पूरनको हुकुम कतल करनेका झट लिख दीना परवाना ॥ मु ॥ रानी दिल तारी ॥ त्याग दे चित्त बिसारी ॥ करो डेढ पाव चून नमक पैसाभर खारी॥ १६८॥

दोहा वजीरका.

राजा०-तीन वर्ष मोअतल किया, दिलसे दिया उतार ॥
जान माल जर जिंदगी, सबसे ताबेदार ॥

सबसे तावेदार राव अफसोस सभासे बहार किया ॥ कुल तीन लाखका जरिवाना मैं सब देना अखत्यार किया ॥ तें तुरक तन-कसी दास्तानका बड़ा बांध विस्तार किया ॥ पुत्तरको कतल कराते हो तुम औरतका एतवार किया ॥ मु ॥ जिसने विष बोया ॥ नाहक अपना घर खोया ॥ ले पूरनको गोद मन्तरी झुर झुर रोया ॥ १६९ ॥

दोहा राजाका.

राजा कहे सुन सन्तरी, यह मेरा इरशाद ॥
दौड झपट जा शहरमें, ल्यावो चार जलाद ॥

लावो चार चलाद याद कर कतल कुंवरको करना है ॥ बर-खातर रानी नूनादेके कलश खूनका भरनाहै ॥ मेरे ऐसे पूत कपूत कुँवरका शीश काटके धरना है ॥ चाहे पाप चढो चाहे धरम फलो अब नहीं किसीसे डरना है ॥ मु ॥ जलदीसे जावो ॥ लिये विन कभी न आवो ॥ जलदी चार जलाद पकड़ मेरेपे ल्यावो ॥ १७० ॥

दोहा संत्रीका.

चला शहरमें सन्तरी, झुर झुर रोता जाय ॥
सालवाहनके सामने, नहिं कुछ पार बसाय ॥

ना कुछ पारवसाय सन्तरी इसी सोचमां मर लीने ॥ क्या कमल फूलसा कुँवर देखकर नयन नीरसे भर लीने ॥ कुल चार जलाद पकड सन्त्रीने अपने आगे धर लीने ॥ जा सालवाहन महाराजरावके नजर साम्हने कर दीने ॥ मु ॥ संत्री ले आया ॥ हुकुम तुमने फरमाया ॥ हस बुल हुकम हुजूर सन्तरी हाजिर ल्याया ॥ १७१ ॥

दोहा जलादोंका.

हाथ जोडके साम्हने, हाजिर खडे जलाद ॥
किस कारन तुमने किया, हम लोगोंको याद ॥

हम लोगोंको याद राव वो कारन हमीको फरमाइये ॥ जो हमको कुछ इरशाद होवे सो हसबुलहुकम बजा लाइये ॥ जिस कदर हुकुम हो हाकिमका अलबत्तः वो करना चाहिये ॥ अब कौन सबब हम याद करे वह मकसद हमको बतलाइये ॥ मु ॥ सरकार हमारी ॥ हमी रैयत हैं थारी ॥ हाजिर खड़े जलाद हुकुम करते नहीं भारी॥ १७२॥

दोहा राजाका.

जलादो-इस पूरनको पकडके, कर दो पांव जुलान ॥
हाथों गेरो हथकडी, गलमां तोंक तलान ॥

गलमें तोंक तलान कुँवरको शहर बाहर ले चालो तुम ॥ किसी वाराडुनी उजाड़ बीचमें इसे कतल कर डालो तुम ॥ तन अन्दरसे भरके प्याले पूरनका खून निकालो तुम ॥ इस वखत कुँवरको कतल करो अब रत्ती प्रीत न पालो तुम ॥ मु ॥ हमने मरवाया ॥ हुकम ये सख्त लगाया ॥ जो कोइ देगा दरक काल उसकाभी आया ॥ १७३ ॥

दोहा जलादोंका.

हुकुम सुना जल्लादने, कुँवर किया गिरफतार ॥
चारों तरफको फिर गए, ले नंगी तलवार ॥

ले नंगी तलवार हुकुमका जल्लादोंको जोश हुवा ॥ डंड पकड कुँवरके बांध लिये तब पूरन भगत खमोश हुवा ॥ सुन्दर छबि देख जलाद रोवे हम लोगोंको अफसोस हुवा ॥ इन चारोंकी खैंचा-

तानीमें हँस २ कुँवर बेहोश हुवा ॥ मु ॥ ना पार बसाई ॥ कर्ममें लिखी सो पाई ॥ पकड़ कुँवरके हाथ खैंचकर मुश्क लगाई ॥ १७४॥

दोहा वजीरका.

देख कुँवरकी सुरतको, उलटा पडा वजीर ॥
छाती पीटे सिर धुने, नैनों जारी नीर ॥

नैनों जारी नीर सर्व रैयतकी काया भरनाती ॥ मध गगन सिंहासन डोल रहे चोमण्डल धरती थरनाती ॥ नर नार नगरके रुदन करें इंदर ज्यूं पिरथी घरनाती ॥ मेरे हूम हूम कण्डलाते हैं छबि देखो देही फरनाती ॥ मु ॥ काया कुँभलाती ॥ फिरे पिरथी मण्डलाती ॥ क्या मैं करूं उपाय कछू नहिं पार बसाती ॥ १७५॥

दोहा बांदीका.

क्या सोवे सुख ईछरा, लिये सहेली साथ ॥
तेरा कुलमण्डल दिल लाडला, दिया जलादों हाथ॥

दिया जलादों हाथ कुँवरकी कसके मुश्क मरोड़ चले ॥ गल तौंक जंजीरे डाल कुँवरके खुद जंगलकी ओड़ चले ॥ ले शूर साथ शमशेर हाथ दल लश्कर फौजें जोड़ चले ॥ कर रुदन लोग रोते तन खोते साथ कुँवरके दौड़ चले ॥ मु ॥ लाखों नर नारी॥ रोवे है खलकत सारी ॥ रोता खास दिवान मार सर लीक लकारी ॥ १७६ ॥

दोहा ईछराका.

सुनके रानी ईछरा, उलटी खाइ पछाड ॥
सिरकी मिंडी खोलके, लीने बस्तर फाड ॥

लीने वस्तर फाड रानीने सिरमें मिट्टी पा लीनी ॥ पूरनकी मुश्कें बँधी देखके सिरमें खाक रमालीनी ॥ ऐसी बेहोश खमोश

हुई इस पूरनकी गम खा लीनी ॥ अपघात किया सिर फोड़ लिया तन ताछ रक्तमें न्हा लीनी ॥ मु ॥ राजापे आई ॥ हाथमें अट्टी पाई ॥ सिरपर पल्लू गेर नाथकी दई दुहाई ॥ १७७ ॥

दोहा राजाका.

रानी०-क्यूं अपना तन ताछके, वदन किया नापाक ॥
क्यूं गल गेरी चूनरी, क्यूं सिर पाई खाक ॥

क्यों सिर पाई खाक नाहक हाथोंको खड़ी नचाती है ॥ कहो क्यूं रीती तनको खोती सब झूँठा फैल मचाती है ॥ तन ताछ रक्तमें भीज रही वस्तरमें खून रमाती है ॥ वो बात कभी हरगिज नहिं होगी जौन चीज तू चाहती है ॥ मु ॥ घर जावो रानी ॥ तेरी मैं बात पिछानी ॥ फिर तू देगी दरक सजा पावेगी स्यानी ॥ १७८ ॥

दोहा ईछराका.

राजा०-किस कारन मेरे कुँवरको, कतल करो होआज ॥
वो मकसद मुझसे कहो, मैं पूछूं महराज ॥

मैं पूछूं महराज आज तुम यह क्या पाप कमाते हो ॥ तुम किस पापिनके कहनेसे भक्तोंकी जान गमाते हो ॥ मेरा नौ कोठी-का चन्द्रभान सूरजकी किरन छिपाते हो ॥ फिर पीछेसे पछता-ओगे अब जान बूझ विष खाते हो ॥ मु ॥ समझावे रानी ॥ कौन तुम्हें देगा पानी ॥ बूंटा दोगे पाड़ कौनकी बैठो छानी ॥ १७९ ॥

दोहा राजाका.

रानीजी-पुत्तर होकर कुँवरने, धरी मायपर नीत ॥
मातासेभी ना टला, फेर यह किसका मीत ॥

फेर ये किसका मीत कुँवर घरबार नजरमें विष बोता ॥ कर जोरा जुलमी जंग युद्धसे चढ़ माकी सेजों सोता ॥ वह बेटा कहै यह यार बने कहिं ऐसा जुलम नहीं होता ॥ मैं महलोंमें मौजूद नहीं था मार खड्ग जिंदगी खोता ॥ मु ॥ रानी तरसाई ॥ पेंचमें बुरे फँसाई ॥ आन करी फरयाद और नहीं पार बसाई ॥ १८० ॥

दोहा ईंछराका.

राजा०-कन्या ना दिलसे त्यागिये, पुत्र अटक नहिंहोय ॥
तिरिया ना करिये लाडिली, चाहे कुलवन्ती होय ॥

चाहे कुलवंती होय तिरियाने बड़े बडे घर पाड़ दिये ॥ कोतरसौ कौरों पांडोंके तिरियाने वट्टे हाड दिये ॥ गढ लंक चकाबू नौ महले कुंदनके किले उखाड़ दिये ॥ ये तिरिया भरी चरित्तरकी इन वस्ती शहर उजाड़ दिये ॥ मु ॥ इतवार न करना ॥ बात चितपर नहिं धरना ॥ तिरिया बुरी बलाय फेलसे इसके डरना ॥ १८१ ॥

दोहा राजाका.

रानी०-नूनाका और कुँवरका, ना कुछ बाद विरोध ॥
ना कुछ लाग लपेट थी, ना कुछ सुख न किरोध ॥

ना कुछ सुख ना क्रोध विरोधनि झूंठ दोष कैसे धरती ॥ कहो क्या मतलब माता होकर वो पुत्तरकी छबपर मरती ॥ तकसीरवन्द रानी होती मेरे हरगिज कान नहीं भरती ॥ चुपचाप कुँवरसँग हो रहती कबि ऐसा जिकर नहीं करती ॥ मु ॥ सब बात छिपाती ॥ कान मेरे नहिं पाती ॥ कई वर्ष जां बीच कभी न खबर पहुँचाती ॥ १८२ ॥

दोहा ईछराका.

राजाजी-मासीने पृथुराजसे, बहुरि मँगाया चून ॥
मासीने गंधरवसेनको, किया गधेकी जून ॥

किया गधेकी जून रतनसिंह मासीने दृग वास किया ॥ मासीके मारे ध्रुवजीने अस्थान गगन आकाश किया ॥ श्रीरामचन्द्र सीता लछमनको मासीने वनवास दिया ॥ खुद चश्मसामने मासीने मेरे पूरन भक्तका नाश किया ॥ मु ॥ चश्मोंके अगाड़ी ॥ जमी हुई जड़े उखाड़ी ॥ सौतेली माताने पुत्र संग बात बिगाड़ी ॥१८३॥

दोहा राजाका.

चलो जलादो ले चलो, सालकोटसे बहार ॥
किसी वारां ढुनी उजाडमें, दो पूरनको मार ॥

दो पूरनको मार रानी ये नाहक निपट नदान हुई ॥ कुछ सोच होश नहिं करती है बेकूफ नार खफगान हुई ॥ यह ऐसा पूत कपूत जना क्यूं जान बूझ अनजान हुई ॥ अब यह मूरख बेअकल असल किस पापीपर कुरबान हुई ॥ मु ॥ मूरख है रानी ॥ नाहकमें भई दिवानी ॥ किस पापीके काज आज खोती जिन्दगानी ॥ १८४ ॥

दोहा जलादोंका.

जब पूरनको ले चले, पकड शहरसे बहार ॥
गैल कुँवरके हो लिये, नार नगर लखचार ॥

नार नगर लखचार कामिनी सब कुंजासी किल्लाती ॥ बेगिनत मर्द करैं दिगर दर्द बेधडक पेट पीटैं छाती ॥ रोरोके रुदन करै रानी मल हाथ सबूरी नहिं आती ॥ खुद मन्त्री आप विलाप करै

क्या कर ले पेश नहीं जाती ॥ मु ॥ भरते ससकारा ॥ सांस सबरीका मारा ॥ झुरता बालकराम मारता आहका नारा ॥ १८५ ॥

दोहा राजाका.

कुँवरजी-जो चाहे सो मांग ले, जो भावे सो खाय ॥
तेरा दिल किसमें पडा, मुझको दे बतलाय ॥

मुझको दे बतलाय तुझे खुद चश्मोंसे दिखला दूंगा ॥ किसी यार मित्रको मिलना हो जीतेजी तुझे मिला दूंगा ॥ जिस रकमकी सिरनी खानी हो मैं अपने हाथ खिला दूंगा ॥ कोइ मन महरम हो मरजीका हमसे कहो पास बुला दूंगा ॥ मु ॥ खानेको खाले ॥ मुखमें गंगाजल पा ले ॥ दूंगा तुझे मिलाय चाहें जिसको बुलवा ले ॥ १८६ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मेरादिल मेरी मायमें, जिन राखा गर्भ अस्थान ॥
जननीके दरशन करूं, जब होंगे मुक्त पिरान ॥

होंगे मुक्त पिरान लगा दो भवसागरसे पार मुझे ॥ बद्री विशालके दरशन कर लूं फिर होंगे दुश्वार मुझे ॥ तुम वरखुदा नाम लिह्वा जननीके बख्श दिदार मुझे ॥ दरशनकी अरज लगाता हूँ कुछ और नहीं दरकार मुझे ॥ मु ॥ मैं अरज लगाता ॥ मिले नूनादे माता ॥ दोनों मा मिलजायँ भँवर वैकुण्ठको जाता ॥ १८७ ॥

दोहा राजाका.

राजाजीने रानियां, दोनों लइ बुलवाय ॥
दोनोंके कर पकडके, दीनी आन मिलाय ॥

दीनी आन मिलाय कुँवर तेरी हाजिर हैं दोनों माता ॥ कर प्यार मुहब्बत मुलाकात जिस कदर तुम्हारा दिल चाहता ॥ इस

बखत तुझे अखत्यार खाय ले जो तेरे मनको भाता ॥ तेरा भरमत भँवर भटकता जाता जी रानीको ना ल्याता ॥ मु ॥ ना होता मेला ॥ तड़फता भँवर अकेला ॥ मिल लो मा और पूत आजका रोज दहेला ॥ १८८ ॥

दोहा ईछराका.

माताकी खुंची पडी, पूरनके गलमाहं ॥
एक पहर बराबर हो गया, हरगिज छोडे नाहं ॥

हरगिज छोडे नहिं रानी बेधडक कूक सरली मारी ॥ सुनतोंकी छाती भर आई नैनोंसे नीर हुआ जारी ॥ पूरनको लाके सीनेसे रोरोके रुदन किया भारी ॥ मा बेटेका विल्लाप सुना भर दृग रोवे खलकत सारी ॥ मु ॥ क्या करे बिचारी ॥ रोवें सब नर औ नारी ॥ छिपके रोवे वजीर नीर नैनोंसे जारी ॥ १८९ ॥

दोहा पूरनका.

बस माता मुझे छोड दे, तोड पुत्रसे प्यार ॥
अब तो पूरन पुत्रको, दिलसे देय विसार ॥

दिलसे देय विसार हाय भर घूट सबरकी मनमाहीं ॥ तू समझ सदा मैं बांझ रही न्यू जान कुँवर जन्मा नाहीं ॥ जो अमर इलाही रजा खुदाई दोष धरूं किसके ताईं ॥ यह लिखी करमगति वह माताने हकताला कुदरत साईं ॥ मु ॥ बीती तनमाहीं ॥ कहुँ माताके ताहीं ॥ करो जतन लख चार कर्मगति हटती नाहीं ॥ १९० ॥

दोहा ईछराका.

बेटारे-मैं दुखियारी जन्मकी, सहे दुःखोंके कोट ॥
ये दुःख मैं कैसे सहूँ, लगी पुत्रकी चोट ॥

लगी पुत्रकी चोट जिगरके अन्दर जखम जबर बच्चे ॥ मेरे तन मनकी मालूम रामको औरको नहिं खबर बच्चे ॥ तुझ जैसे लाल निगल करके क्या देखूं तेरी कबर बच्चे ॥ अब मैं पापिन चंद्रीनिर्भागिन कैसे करूं सबर बच्चे ॥ मु ॥ पौरख रहे जाते ॥ गये हट घर नहिं आते ॥ तुझविन मेरे लाल मुझे नित धक्के पाते ॥ १९१ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-जो मरजी भगवानकी, करी राम रघुनाथ ॥
मेरी कजा हरने लिखी, किबलेगाहके हाथ ॥

किबलेगाहके हाथ नाथनें चित्तके कलम चलाई है ॥ मेरा बडे राजघर जन्म दियां उसकी गत किसने पाई है ॥ मेरी मौत जलादों हाथ दई धनरबकी रजा खुदाई है ॥ मुझे माता दूध बकस रुखसत दे कुदरत हुकम इलाही है ॥ मु ॥ मेरेपर आया ॥ श्रीठाकुरकी माया ॥ तू माता न्यूं जान मेरे पूरन नहिं जाया ॥ १९२ ॥

दोहा इंछराका.

हाय पुत्र तेरे कारनें, सेये गोरखनाथ ॥
बारा बर्ष तप मैं किया, जब आया था हाथ ॥

जब आयाथा हाथ पुत्र नव महीने गर्भ कष्ट सह गई ॥ सभी आसरा टूट गया मेरी जिंदगानी जलमा बह गई ॥ मुझे सारी उमर दुख दिया रावने तेरी कजा कुलको दह गई ॥ अब मैं पापिनि चंद्रि निरभागिन जैसी थी वैसी रह गई ॥ मु ॥ कुछ तपमां गलती ॥ भाय इस तनमां बलती ॥ रही किनारे बैठ फिरूं हाथोंको मलती ॥ १९३ ॥

दोहा पूरनका.

माता०-शुक्र भेज दरगाहमां, जिस्तर राजी राम ॥
जो रचना हरने रची, खूब रची घनश्याम ॥

खूब रची घनश्याम समझके कुछ नहीं कसर गुजारी है ॥ जग पैदा कर नापैद करे उस रबकी कुदरत न्यारी है ॥ वोह नौ खंड चौदह तवकबीच हर आपी खेल खिलारी है ॥ सब लख चौरासी जिया जूनमें परघट कृष्ण मुरारी है ॥ मु ॥ सब हरकी माया ॥ कर्ममें लिखा सो पाया ॥ आखर शिरपर काल अमर होती नहिं काया ॥ १९४ ॥

दोहा इंछराका.

बेटारे-मैं जीऊं किसके आसरे, मुझ कौन कहेगा माय॥
ये दिन बडे कहरके, मैं काटूं किसकी छांय ॥

काटूं किसकी छांय सबरकी कैसे घूंट भरे मैया ॥ मेरा एक लाल था गया जानसे कैसे धीर धरे मैया ॥ एक जखम जिगरमें जबर पड़ा इसका क्या लाज करे मैया ॥ कुछ ऐसा जतन बता बच्चे घर जाते सार मरे मैया ॥ मु ॥ गल कफनी सीवे ॥ जहरका प्याला पीवे ॥ गया हाथसे लाल देख अब किसको जीवे ॥ १९५॥

दोहा पूरनका.

माता०-राख आसरा रामका, पैदा किया जहान ॥
इक दिन तुझको फिर मिलूं, इस दुनियामें आन॥

इस दुनियामें आन मिलूं तुझसेती आज वचन मारा ॥ जिस वक्त तेरी मैं नजर पडूं पिस्तांसे जा बत्तिस धारा ॥ मेरे दूध दहनमें आन पडे आगेसे चलके कदम ठारा ॥ जब जान कुँवर मिलनेको आया लीजो मेरी खबर सरा ॥ मु ॥ खुशियांकी तारा ॥ वर्ष जब बीते बारा ॥ ॥ लीजे मुझे पछानपडे जब दूधकी धारा ॥१९६ ॥

दोहा नूनादेका.

नूनाने चिट्ठी लिखी, लेकर कलम दवात ॥
राजाजीसें चोरियों, लिखी इश्ककी बात ॥

लखी इश्ककी बात कुँवर तू समझ तुझे बकसा लूंगी ॥ मेरी पिछली बात कबूल करे मरतेको तुझे बचा लूंगी ॥ तेरे मरनेमें कुछ कसर नहीं चश्मोंकेबीच छिपा लूंगी ॥ मन्दरमें दोनों ऐश करेंगे सीनेसेती ला लूंगी ॥ मु ॥ कर इश्क सजा० ॥ १९७ ॥

दोहा पूरनका.

मातारी-मेरे पिताके हुकुममें, डरते जबराईल ॥
इजराईलसे फरिसते, नित उठ करें तामील ॥

नित उठ करें तामील मुझे बकसा लेगी किस्तर माए ॥ यह बात सुनेंगे संखराव तन बिच मारें शस्तर माए ॥ तेरी दस्तावेज दिखा दूं तो तुझे मरवादे पेश्तर माए ॥ मुझे यह तेरी बात कबूल नहीं अब मरजाना बेहतर माए ॥ मु ॥ सुन माता म्हारी ॥ पुत्रकी पालनहारी ॥ शिरपर फेरो हाथ आया मैं शरन तुम्हारी ॥ १९८॥

दोहा नूनादेका.

पूरन-जैसी करी वैसी भरी, जो हठ किया कबूल ॥
तिरियाको तरसायके, होता मजा वसूल ॥

होता मजा वसूल कुँवरजी जैसी तिरिया तरसाई ॥ वो काल सेरीको कलपाके कहो क्या खूबी तुम्हने पाई ॥ तुझे मैं कलपा रसीस लई दो तरफ कजा सिरपर छाई ॥ तू जैसी करनी करता था तेरे वैसेही आगे आई ॥ मु ॥ अब भुगतो करनी ॥ सोई सिर पर धरनी ॥ जो पिछली तकसीर सोई आगेको भरनी ॥१९९॥

दोहा पूरनका.

कलीकालके समयमें, सब उलटा दस्तूर ॥
दाता होते धन विना, सूम रहे भरपूर ॥

सूम रहे भरपूर देख बलहीन हवा मदहीन पानी ॥ सतहीन जगत मतहीन इस्तरी दयाहीन राजा रानी ॥ अनहीन गुनी सम्पतविन शायर जुगतहीन चातुर ज्ञानी ॥ तपहीन तपी पुस्तकविन ब्रह्मा कलूकालकी नीशानी ॥ मु ॥ हरिके गुन पक्के ॥ भगत खाते हैं धक्के ॥ पापी करै विलास चोर ठग जार उचक्के ॥ २०० ॥

दोहा नूनादेका.

पूरन-कहती थी इस बातमें, मत जुलमी पर जाय ॥
एक बात मानी नहीं, बहुत रही समझाय ॥

बहुत रही समझाय मेरेसे क्यूं नहिं कौल करार किया ॥ वो जुलम खुदाको नहीं भाता हमसे तकरार मदार किया ॥ बेजुलमकी बात नहिं कहुँ थी दिलमाना सोच विचार किया ॥ तुझे भलमनसीसे कहती थी आखिर मरना अखत्यार किया ॥ मु ॥ तू भाजके आया ॥ जुल्मका हर्फ उठाया ॥ कालसिरी कलपाय कुँवर किसने सुख पाया ॥ २०१ ॥

दोहा पूरनका.

माताजी-जैसी जुलमी मैं करी, श्रीठाकुरको मालूम ॥
दरगाहमें हक मुझको मिले, पड़े मुलकमें धूम ॥

पडे मुल्कमें धूम जुल्मका हक मुझे होवे वसूल माए ॥ मुझे धर्मराजभी फरमा दे मैं कर लूं हुकुम अदूल माए ॥ श्रीठाकुर गुन्हा बकस कह दे जबभी मैं गेरूं धूल माए ॥ मुझे ऐसा जुल्म कबूल तेरी भलमसी नहीं कबूल माए ॥ मु ॥ सब दोष हमारा ॥ मान माताका मारा ॥ अस वस मेरा कसूर उलट दिया हुकुम तुम्हारा ॥ २०२ ॥

अब नूनादे लोगोंको सुनाके कहती है.

दोहा नूनादेका.

पूरन-मैं बुलवाई किस वासते, क्या मेरेसे काम ॥
अबलग दिल मुझमें पडा, वोही नियत हराम ॥

वोही नियत हराम रही तू अबलग बाज नहीं आया ॥ मुझे नाहकमें तकलीफ दई कहो क्या तेरा लेकर खाया ॥ तू अपनी खाक उडाय चला कहो इन बातोंमें क्या पाया ॥ क्या हासल जमा वसूल किया तपतीका दिल जो तरसाया ॥ मु ॥ क्यूं मैं बुलवाई ॥ बात तेरी नहिं पाई ॥ हट हट करता याद क्या तूने विजया खाई ॥ २०३ ॥

दोहा पूरनका.

माताजी-बुलवाई इस वासते, करना था दीदार ॥
तूं अपने दिलसे कहो, जाइए स्वर्ग सिधार ॥

जाइये स्वर्ग सिधार जबांसे ऐसा सुख सुना माए ॥ भवसागर पार लखा जननी जहां औघट घाट बना माए ॥ मैं चौरासीसे छुट जाऊं मुझे इसका फिकर घना माए ॥ मेरी दरगामें गत मुक्ती हो ठाकुरसे मांग पना माए ॥ मु ॥ दे बखशिस माता ॥ सेत्र वैकुंठको जाता ॥ यही वचन दे मुझे और कुछ मैं नहिं चाहता ॥ २०४ ॥

दोहा नूनादेका.

रहमभरी नूना डरी, नहीं कुँवरका खोट ॥
सुबक सुबक रोने लगी, कर घूंघटकी ओट ॥

कर घूंघट की ओट नारके मनमें रहम हुवा भारी ॥ कर खौफ खुदाका बैठ गई दर घूंघट चश्म अस्क जारी ॥ दरम्यान मुकदमें

दरक दखल दूं विना मौत जाऊं मारी ॥ चुपकी रहती मनकी नहिं कहती राजासे डरती भारी ॥मु॥ नहीं पार बसाती ॥ लौट घर अपने जाती ॥ बैठ महलके बीच बहुत मनमें पछताती ॥२०५॥

दोहा पूरनका.

नर नार नगरको बन्दगी, करता पूरन आप ॥
कहा सुना गाली गुनह, सब कर देना माफ़ ॥

सब कर देना माफ़ गुनह मैं हाथ बांध सब पास खड़ा ॥ बाबलको नेक जुहार करी मन्त्रीके कदमों बीच पड़ा ॥ खुद माताकी परिकम्मा दे दरम्यान गोदके आन बड़ा ॥ कर सात सलाम जलादोंको झट काल तखतपर आन चड़ा ॥ मु ॥ मतना तरसावो ॥ कुँवरको मजल पहुँचावो ॥ जितने भर नर नार लौट घर अपने जावो ॥ २०६ ॥

दोहा राजाका.

पूरन-हस्ब जाप्ते हुकुमके, करना चहिये कार ॥
जो अभरण कुल बदनपर, सब भूषण दो तार ॥

सब भूषण दो तार कुँवर ये चादर खेस दुशाला दो ॥ दस्तार पजामा अतलशका जोड़ा ज़रबफतीवाला दो ॥ रूमाल दुपट्टा बालेवर चीरागठ बूंदीवाला दो ॥ ये कण्ठे कड़े मुन्दरा तोडे तूं गल मोतीमाला दो ॥ मु ॥ कुछ नहिं ले जाना ॥ पहन अलवेस पुराना ॥ अब अभरन दो तार करो तुम्ह नीला बाना ॥ २०७ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-एक दिन ऐसा वक्त था, तुम्हने किया शृँगार।
अब दिन ऐसा आ लगा, सब अभरन लिया उतार।

सब अभरन लिया उतार पिता कुरती चपकन मुलतानी लो ॥ दस्तार जड़ाऊ रेशमके रूमाल खेश मुलतानी लो ॥ मेरा चुस्त पजामा अतलसका बालेवर हिंदुस्तानी लो ॥ सब बस्तर धनुक कनारीके चीरा रंग नाफरवानी लो ॥ मु ॥ सब जेवर निकाला ॥ कान कुण्डल गल माला ॥ करके नीला भेस कुँवरने आंसू डाला ॥ २०८ ॥

दोहा राजाका.

बे०पूरन-और तेरे दिलबीचमें, बाकी रही सवाल ॥
कोइ मनमें मत राखिये, कहो मुफस्सल हाल ॥

कहो मुफस्सल हाल बात कुछ रखनी नहिं मनके माहीं ॥ कुछ मकसद कहना बाकी हो तुम्ह बेशक कहो मेरे ताहीं ॥ खा कसम तुझे फरमाता हूँ तू मुखसे कहो करो वाहीं ॥ और जो कहेगा मंजूर मुझे एक जीती जान छुटे नाहीं ॥ मु ॥ जागी एक छिनमें ॥ जखम लगेगा तनमें ॥ जो बाकी हो बाब कुँवर रखनी नहिं मनमें ॥ २०९ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-अरज आखिरी बखतका, तुम्हसे करूं बयान ॥
जरा तनकसी बात है, जो तुम्ह लोगे मान ॥

जो तुम लोगे मान मेरी माताको मत दिलगीर करो ॥ दो छोड़ ददाको जिन्दासे पंडितोंकाभी दस्तूर करो ॥ कर बहाल कदीमी मन्त्रीको दर खिदमत खास हजूर करो ॥ ये अर्ज गुजारिश करता हूँ जो इतनी बात मंजूर करो ॥ मु ॥ ये अर्ज हमारी ॥ सोई मैं दकहदी सारी ॥ है सब वाजिब बात आगे है खुशी तुम्हारी ॥ २१० ॥

दोहा राजाका.

बेटा०--अरज आखिरी वख्तकी, हरदम रहेगी याद ॥
खुद चश्मों मंजूर है, चालिस दिनके बाद ॥

चालिस दिनके बाद तेरी माताके गल फुलमाल करूं ॥ दूं साफ रिहाई दाईको पंडितोंको बहुत निहाल करूं ॥ इस पुस्त कदीमी मंत्रीको मैं नवे सिरेसे बहाल करूं ॥ जहां तुमको सखत सजा मिल गई इन्हपर क्यूं जुल्म कमाल करूं ॥ मु ॥ यह बात हमारी ॥ चलनेकी करो तयारी ॥ अर्ज गुजारिश बात हमें मंजूर तुम्हारी ॥ २११ ॥

दोहा पूरनका.

जलद जलाद फौलादकी, सींत गेर शमसेर ॥
बिकट वाट रस्ता कठिन, मजल पडी है ढेर ॥

मजल पडी है ढेर फेर समशेर सिंत सिरपर धरना ॥ इस आदमको इस आलममें कोई खुशी बीच चहिये मरना ॥ दरगाहके बीच मुसाफिरको विस्तरका जाय फिकर करना ॥ उस धर्मराजके दफतरमें इस बदमाशीका हक भरना ॥ मु ॥ यमराज पुकारे ॥ दूत चारों ललकारे ॥ मोहकम इबराहीम गुर्ज मेरे शिरमें मारे ॥ २१२॥

दोहा जलादोंका.

हुकुम कँवरके कतलका, मांगे खडे जलाद ॥
खड्ग सेंत सिरपर खडे, अष्टधात फौलाद ॥

अष्टधात फौलाद यादकर राजा हमें हुकुम दीजे ॥ दुशवार कार सरकारोंके विन हुकुम कतल कैसे कीजे ॥ विन हुकुम तुम्हारे शहजादेकी हमसे नहिं काया छीजे ॥ क्या हासल जमा वसूल होवे विन हुकुम पाप सिरपर लीजे ॥ मु ॥ जल्लाद पुकारे ।

खड्ग सिर ऊपर मारे ॥ विना हुकुम महाराज कतल कैसे कर डारे ॥ २१३ ॥

दोहा राजाका.

बडा हुकुम महाराजका, दूजे हुकुम हजूर ॥
नूनादेके हुकुमसे, करो शीश धड दूर ॥

करो शीश धड दूर जलादो मत पूरनसे प्यार करो ॥ दो तीन हुकुम हाकिमके तुमको मत कुछ सोच विचार करो ॥ बेधडक जिबह जिंदगी कर दो पीछे न्हा धो जलपान करो ॥ इस कंचनवानी कायापर धर खड्ग सैंत कर पार करो ॥ मु ॥ मुहबत मता पालो ॥ क़तल इसको कर डालो ॥ भर भर प्याले आज बदनसे खून निकालो ॥ २१४ ॥

दोहा जलादोंका.

पूरनके जल्लादने, सिर गेरी तलवार ॥
तीन बूंद सिरसे छुटी, श्वेत दूधकी धार ॥

श्वेत दूधकी धार दिगर जालिमने जुल्म कमाल किया ॥ पग हाथ काट शहजादेके कर चौरस धन पर डालदिया ॥ सूरजकी किरन छिपा दीनी कुल मण्डल सूबा गाल दिया ॥ बरखातिर रानी नूनाके भर प्याले खून निकाल दिया ॥ मु ॥ खो दीनी काया ॥ रोशन चिराग बुझाया ॥ वह पूनोंकी रात जैसा कोइ चंद छिपाया ॥ २१५ ॥

दोहा खिलारीका.

कतल हुए जब कुँवरजी, थरक जिमि असमान ॥
पौन और पानी थंबे, गगन ठहर गये भान ॥

गगन ठहर गये भान जहानमें सब देवता विकराल हुए ॥ भर मण्ड फूट गया धरतीका उस दिनसे ताल भूपाल हुए ॥ इंदर इंदरासन डोल गए वासक घर छोड पताल हुए ॥ सब भरतखण्डमें शोक हुआ जब पूरन भगत हलाल हुए ॥ मु ॥ पक्षी भी रोवैं ॥ पीट तन अपना खोवैं ॥ नार नगर लख चार सेज सुखसे नहिं सोवैं ॥ २१६ ॥

दोहा ईछराका.

खाके घिरनी ईछरा, गिरी कुँवरपर आप ॥
इकवेर मुखसे बोलले, तेरी माता करै विलाप ॥

माता करै विलाप लाशपर टपक टपक आसूं चाले ॥ कहा चला अकेली जान कुँवर मैं कर दीनी किसके हाले ॥ तू आप चला मुझकोभी लेचल सूरजसी सूरतवाले ॥ तुझ पीछे माता कौन कहेगा ना कोइ मुझको संभाले ॥ मु ॥ कोइ मुहँ नहिं लाता ॥ मेरे दुख होता जाता ॥ तुझ विन मेरे लाल कौन मुझे कहेगा माता ॥ २१७ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०-किस दमसे बातें करे, बैठ रहो मनेमार ॥
वोह रावल रमता हुआ, छोड गया घरबार ॥

छोड़गया घरबार तपस्वी विकट वाटको सिधारा ॥ उस मानसरोवर सागरसे उड हंस पकड गया किनारा ॥ नौ दश गुलशन कुम्हलाय गए उड भँवर अधरमें भनकारा ॥ पुरखे पलुटा सब ठाट पडा लद गया अकेला बंजारा ॥ मु ॥ टांडेसे न्यारा ॥ मुसाफिर वाट सिधारा ॥ पूरन दरगाह बीच हुवा ठाकुरको प्यारा ॥ २१८ ॥

दोहा ईछराका.

बछडे अपनी मायसे, एकबेर कर ले बात ॥
ठा पल्लूं तेरा देख लूं; कञ्चनवरना गात ॥

कंचनवरना गात हाथ कुछ अबके होठ हला बच्चे ॥ रसभरी जबांसे माता कह एक बार तो मुझे बुला बच्चे ॥ जिस अजब अदासे मिलता था न्यूं हाथ चरणके ला बच्चे ॥ सूरजसी सूरत चन्दसी मूरत एकबार मुझे दिखा बच्चे ॥ मु ॥ जननी ये पुकारे ॥ नयनसे आंसू डारे ॥ बछडे एकबार बोल तेरी मा हांका मारे ॥ २१९ ॥

दोहा वजीरका.

रानीजी–जो पूरन होता तेरा, हरदम रहता पास ॥
जिसका था उसपे गया, छोड कुँवरकी आस ॥

छोड कुँवरकी आस रानी अब क्यूं रोती हरबार खडी रम गए रावल सूने भए अस्तल टूटी मटरिया मटक मडी ॥ उड गए वासंबे उजडे मंदिर टूटे काठ किवार कड़ी ॥ उड़ गया बोल छुटगईं खोड़ ये मरतक मिट्टी खाक पड़ी ॥ मु ॥ किसको पुकारे ॥ तेरा दुख कौन निवारे ॥ कुँवर हुआ इन्तकाल कौनको हांका मारे ॥ २२० ॥

दोहा ईछराका.

बछडे मुखडा खोल दे, दे मुझको दीदार ॥
अभी सहजादे देख लूं, कहां लगी तलवार ॥

कहां लगी तलवार तेरे देखनको जग संसार खड़ा ॥ तेरी सूरतकी जारत करनेको आलम बेसुम्मार खड़ा ॥ सतपुरुष बुजुरगोंका मंत्री तेरे दरशनका इन्तजार खड़ा ॥ इस आलमको दर्शन दे बच्चे

कैसा पैर पसार पड़ा ॥ मु ॥ कर चला अँधेरा ॥ मुझे दुख दिया घनेरा ॥ छोड दिया घरबार किया जंगलमें डेरा ॥ २२१ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०--जलविन ताल तलावडी, दलविन रनमें भंग ॥
बलबिन छल चलता नहीं, मलविन फीका जंग ॥

मलविन फीका जंग मनुषविन मन्दर भट्टी भाड पड़ा ॥ बिन रोब राज विन तखत ताज विन सारा नगर उजाड़ पड़ा ॥ निव-डाल मूलविन कली फूलविन गुलशन जंगल झाड पड़ा ॥ विन सांस मनुख विनदम आदमके कूड काठ कवाड पड़ा ॥ मु ॥ उड गया सलानी ॥ काम नहिं आवै रानी ॥ जिन्हपर नहीं मलाह खेप डूबै विन पानी ॥ २२२ ॥

दोहा ईछराका.

बेटा-तेरे दमपर मैं किया, सात मुल्कका राज ॥
सब आलम मेरी कोखका, करता रहा लिहाज ॥

करता रहा लिहाज आजतक ताबे मेरे जहान कुँवर ॥ एक लखत गौसता आन पडी मेरे छिनमें मर गए मान कुँवर ॥ सुख राज गया वह लाल नहीं मैं किसपर कहूँ गुमान कुँवर ॥ सौ वार पुकारा बोला नहिं तू पड गया लम्बे तान कुँवर ॥ मु ॥ उठ मिल ले बेटा ॥ वदनमें खून लपेटा ॥ महल चौबारे छोड आन जंग-लमें लेटा ॥ २२३ ॥

दोहा वजीरका.

रानीजी-शहर जखीराबादमें, बहुत बढा था पाप ॥
सतगुरु गोरखनाथने, जाके दिया सराप ॥

जाके दिया सराप हुए वहां पत्थर सब नर नारीके ॥ पत्थरके शुतर तुरंग हुए वहां हस्ती लाल अँबारीके ॥ पत्थरकी पलटन फौज बनी सब पीनसकार सवारीके ॥ वोह पत्थरपदम किरोडोंके विन जान पूतली चारीके ॥ मु ॥ कीतममें भारी ॥ शान शौकत सब न्यारी ॥ बिना जान तसबीर आवे किस काम विचारी ॥ २२४ ॥

दोहा ईछराका.

बेटा-मैं चन्द्री क्यूं ना मरी, तुझ बदले मेरे लाल ॥
जीती होगई ऊतनी, ये दुख पडा कमाल ॥

ये दुख पडा कमाल कुँवर तैंने जखम जिगर घाले बच्चे ॥ इस जननीकी मरनेके बाद मेरी कौन चिता जाले बच्चे ॥ कर किरपा चुगके फूल कौन ले गंगामां डाले बच्चे ॥ भर पिंड गया गत कौन करे मेरा कौन पेट पाले बच्चे ॥मु॥ जागी जिंदगानी ॥ फिरूं विन मुक्त परानी ॥ तुझविन मेरे लाल कौन देगा मुझे पानी ॥ २२५ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०-साहूकार था उठ गया, खाली किये मकान ॥
जौंहरी गया बजारमें, सूनी पडी दुकान ॥

सूनी पडी दुकान रानी ज्यूं आंख मीच सुपना आया ॥ ज्यूं रावणकी गढ़ लंकामें सब मर गए पुरुष पडी माया ॥ ज्यूं गुलशन तखत हजारेमें कट गए वृक्ष उड़ गई छाया ॥ यों सालकोटमां पूरनके अब निकसे प्राण पड़ी काया ॥ मु ॥ किस काम तुम्हारे ॥ गिरे सब फूल हजारे ॥ पड़ी निकम्मी खोड़ भँवर वैकुण्ठ सिधारे ॥ २२६ ॥

दोहा ईछराका.

तरुन उमर दुख विपतिके, कैसे करूं तमाम ॥
कुँवर चन्दसा छिप गया, मैं चन्द्री किस काम ॥

मैं चन्द्री किस काम कलेजे जखम जिगर कारी लोगो ॥ सब जर्रा वैद हकीम मेरे दुख दरदोंसे आरी लोगो ॥ खुले जखम जिगरके मिलते नहिं सब दिन परदिन जारी लोगो ॥ सुख अस-रत राजविलास करूं थी नूनाने मारी लोगो ॥मु॥ बैठी बिठलाई ॥ आन सौतनने खाई ॥ खोके मेरा लाल आपनी खुशी मनाई॥२२७॥

दोहा वजीरका.

रानी०-करनहार करतारके, हैंगे अधिक कमाल ॥
धरमी दुखिया निरधनी, पापी पदम निहाल ॥

पापी पद्म निहाल जगतमें निस दिन लहर उड़ाते हैं ॥ सत-धरमी ऊत निपूत फिरें पापी घर लाल खिलाते हैं ॥ घर भक्त दलिद्दर भूख रहें कपटी नित न्यामत खाते हैं ॥ बरवक्त आखिरी दरगाहमें सब करनीका फल पाते हैं ॥ मु ॥ पिछला हक पाते ॥ भगत वैकुण्ठो जाते ॥ पापी दरगाहबीच गैबसे गोते खाते ॥ २२८॥

दोहा ईछराका.

लोगो मेरेपर औसतां, दई रामने गेर ॥
मेरी नजरोंमें पडा, चारों तरफ अँधेर ॥

चारों तरफ अँधेर पडा अधरमें कली कच्ची टूटी लोगो ॥ दे लाल किनारे बैठ गई मेरी हाय किसमत फूटी लोगो ॥ सिर फोड़ जिमींसे मार चुकी मेरी खोड़ नहीं छूटी लोगो ॥ सब बस्ती इतने आलममें अब मैं केली लूटी लोगो ॥ मु ॥ नहीं रह

ठिकाना ॥ लूट लिया फटा पुराना ॥ अनधन लुटी खुराक एक छोड़ा नहिं दाना ॥ २२९ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०–एक तो कुवा उजाडमें, दूजे खुश्क तलाव ॥
तीजे जलपर बुलबुला, कहो इनसे क्या भाव ॥

कहो इनसे क्या भाव सांसविन काम नहीं आती काया ॥ कब ओस नेत्रके पानीसे कहो कौन शख्स मल २ न्हाया ॥ धन यौवन दुनिया जिंदगानी ज्यूं बादलकी होती छाया ॥ इस गफलतमें मालूम नहीं जूं सुपने बीच मिली माया ॥ मु ॥ सब निकम्मी काया ॥ ख्वाब गफलतमें आया ॥ जब खुल जावै आंख हाथ मलमल पछताया ॥ २३० ॥

दोहा ईछराका.

मंत्री०–इस मेरे फरजन्दपर, परियां थीं कुरबान ॥
गिरफतार थीं पदमिनी, आशिक थे चन्द भान ॥

आशिक थे चंद भान दिवानी नौलख नार रहीं लोगो ॥ मुश्ताक इंद्रकी परियां थीं सब तन मन वार रहीं लोगो ॥ जिस छबिपर नूना आशिक थी वो सुरत किधर गई लोगो ॥ मतलूब कुँवरका आलम था मुझे जबसे तलब रही लोगो ॥ मु ॥ मुझको दिखलादो ॥ पता उसका लगवादो ॥ उड़गया मेरा लाल हाय एक जाल लगादो ॥ २३१ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०–मनुष बबूला भाफका, भारी बँधा सतूल ॥
पग धरती सिर अकाशमें, चढी गगनमें धूल ॥

चढी गगनमें धूल घड़ी एक चमत्कार दिखला जाते ॥ रंग काट कुसुंभेका कारीगर प्रीत पीकसे नहिं लाते ॥ और वीनी चावल निखर जात सब मैल काग कुत्ते खाते ॥ विन तेल बात विन जान गात कुछ काम नहीं जगमें आते ॥ मु ॥ सुन मूरख हट्टी ॥ मिली मिट्टीसे मिट्टी ॥ ये दुनिया दिन चार सिर्फ धोखेकी टट्टी ॥ २३२ ॥

दोहा ईछराका.

बजीर०-खूब तरह मैं कुँवरका, देखा नहीं दिदार ॥
मुझ चंद्रीकी गोदमें, खेला नहिं दिन चार ॥

खेला नहिं दिन चार कुँवरनें जबसे जन्म लिया लोगो ॥ निरभागन अपनी जननीको कबी कुछ नहिं कष्ट दिया लोगो ॥ मुझ पापन करमों मारीका रतियों नहिं दूध पिया लोगो ॥ सूरजसी सूरत दिखा मुझको दो दिनभी नहीं जिया लोगो ॥ मु ॥ नहिं लाड़ लड़ाया ॥ चावसे नहीं खिलाया करके मुहबत प्यार कभी छाती नहिं लाया ॥ २३३ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०-प्यार मुहब्वत कुवरका, लाड चाव रंग राग ॥
तुझे मवस्सर ना हुवे, जा चंद्री निरभाग ॥

जा चंद्री निरभाग कसत्तन यह तेरी तकदीर रही ॥ नौ लाख पदम पुत्तर पाके दो दिनभी नहीं अमीर रही ॥ महताब सितारा साजनके इस हालतमें दिलगीर रही ॥ सलतनत तखतपर बैठ गई फिरभी तकदीर फकीर रही ॥ मु ॥ जा करमों मारी ॥ बैठ पापन हत्यारी ॥ पेश पड़ी तकदीर गरक तदबीर बिचारी ॥ २३४ ॥

दोहा ईछराका.

हाय मेरे परमेसरा, जलदी मुझे सँभाल ॥
उसी जगह ले डालदो, जहां पँहुचा मेरा लाल ॥

जहां पहुँचा मेरा लाल गैबसे जखम जिगर जा ले रब्बा ॥ जिन देव दैत्य दानो बनके मुझे झट मुहमां पाले रब्बा ॥ तूं शेर सरप अजदहाहोकर मुझ चंद्रीको खाले रब्बा ॥ इस वक्त कुँवर अंतकाल हुवा तूं मुझकोभी ठाले रब्बा ॥ मु ॥ रे राम हत्या रे ॥ मुए मुरदे क्यूं मारे ॥ दम ससकत मत छोड काढ ले प्राण हमारे ॥ २३५ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०–ये करतब करतारके, पंडितको मत पूंछ ॥
पैदा हुवे नापैद को, सब कर जांगे कूच ॥

सब कर जांगे कूच छोड दल लस्कर फौज हजारीको ॥ सलतनत राजसुख अशरतको धन दौलत दरब बखारीको ॥ गढ किले बुर्ज चौवारोंको छड़ मंदिर महल अटारीको ॥ शमशेर सिपर पिस्तौल तीर छड खंजर खड्ग कटारीको ॥ मु ॥ छड मित्तर मेली ॥ छोड घरबार हवेली ॥ बेवश होकर चला सिर्फ ले जान अकेली ॥ २३६ ॥

दोहा ईछराका.

मंत्री०–जिस रोज कुँवर पैदा हुवे, बांटे कञ्चन थाल ॥
मंदिर छाए मोतियों, बांधी बन्दरवाल ॥

बांधी बन्दरवाल मुलक सब सुनत मुबारिक आनदई ॥ मेरे राजाने जागीर यज्ञ कशमीर विलायत दान दई ॥ पुन बहुत किया फल नहिं पाया बछडेने लंबी तान दई ॥ बिन कजा रजा

अफसोस कुँवरने तडफ तरसकर जान दई ॥ मु ॥ सिर बहुत हिलाया ॥ पहरभर तडफी काया ॥ एकबार भज भगवान फेर बोलन नहिं पाया ॥ २३७ ॥

दोहा वजीरका.

रानीके सुन वियोगको, कलपन लगा दिवान ॥
जंगलमें मुख फेरकै, रोरो खोता जान ॥

रोरो खोंता जान सभी बिरछोंने गुल फल पान तजे ॥ उम्मेद उदरबंद कामिनियोंने गर्भ क्षीण आधान तजे ॥ वन पक्षी उडन पखेरूने मिरगोंने तृण जलपान तजे ॥ कुल हस्ती घोडे शुतरोंने सिर मार जिमींसे प्रान तजे ॥ मु ॥ रोते नर सारे ॥ गिरे घरबार चवारे ॥ हो गये खुश्क तलाव सूख गये बाग हजारे ॥ २३८ ॥

दोहा ईछराका.

मंत्री०-वरखातिर मेरे कुँवरके, गए हजारों लोग ॥
घरबार नगरमां पड गया, भरतखण्डमें शोग ॥

भारतखंडमें शोग सकल सब इन्दर वासक घबराया ॥ चन्द सूरज तारे टूट रहे राजाने खौफ नहीं खाया ॥ कँपे जिमीं आकास त्रास नूनाको दरद नहीं आया ॥ तुम्हें क्या मतलब रोते मंत्री क्यूं पीट पीट खोते काया ॥मु॥ नाहक दुख भरते ॥ तरस राजा नहिं करते ॥ विपत दरद दुख बीच विना आई क्यूं मरते ॥ २३९ ॥

दोहा वजीरका.

रानी०-जिनके दम रुखसत हुवे, व्याकुल हुए शरीर ॥
जिन्हके मरजांय बादशा, रुलते फिरें वजीर ॥

रुलते फिरैं वजीर रहे नहिं सखतां में नहिं हीनेमें ॥ जूं आक थुहरका दूध न आता खानेमें ना पीनेमें ॥ इस दमके

गमका जखम न आता फटनेमें ना सीनेमें ॥ बिन पुत्रमात आदर विनमन्त्री मरनेमें ना जीनेमें ॥ मु ॥ कन्थाविन नारी ॥ फिरेअध कटी बिचारी ॥ सर्व कुँवरकी साथ गईसुख मौज हमारी॥२४०॥

दोहा ईछराका.

रानी नजर बचायके, चली कदम दो चार ॥
झट मन्त्रीकी कमरसे, खैंच लई तलवार ॥

खैंच लई तलवार झपटकर गरदनपर खंजर फेरी ॥ अपघात कतल तन करती है समशेर सूंत सिरपर गेरी ॥ छह सात जखम बिच शिकम पडे ना जान निकल जाती मेरी ॥ जिंद जिगर जुदाई होती नहिं सब तनको ताछ लिया ढेरी ॥ मु ॥ नहिं कसर गुजारी ॥ जखम तन दीने कारी ॥ गात करूं अपघात जान नहिं होती न्यारी ॥ २४१ ॥

दोहा मंत्रीका.

झट मंत्रीने दौडके, जाके पकडे हाथ ॥
दस्त बांध विनती करे, सुन रानी मेरि बात ॥

सुन रानी मेरी बात घात कर आप हाथ भर जाते हैं ॥ जल डूबत अगन दग्ध होते और जहर फीम विष खाते हैं ॥ दब जाय जान गिर छुटे प्रान और मौत सरफसे पाते हैं ॥ ये इतने नर बेकाल मरैं सब प्रेत जूनमां आते हैं ॥ मु ॥ मुकती नहिं होती ॥ भटक कायाको खोती॥बिना काल बेहाल फिरे बन बनमें रोती॥२४२॥

दोहा ईछराका.

सुन सुलतांके मन्तरी, मतना मुझे हटाय ॥
विकटबाटको चलन दे, अब संग बिछडा जाय ॥

अब संग बिछडा जाय कुँवरके मैं भी संग सिधारूंगी ॥ मेरा लाल अकेला जाता है मैं ह्यां का कारज सारूंगी ॥ दो चार जखम लगजाने दो बछडे पर तनमन वारूंगी ॥ ले जलदी सैफ कटारीको झट सैंत कलेजे मारूंगी ॥ मु ॥ तन खोदूं सारा ॥ कुँवर परलोक सुधारा ॥ छोड मन्तरी हाथ बिछडता साथ हमारा ॥ २४३ ॥

दोहा मंत्रीका.

ईछराके हाथसे, छीन लई शमशेर ॥
गुलबदनीको ठायके, दी डोलीमें गेर ॥

दीडोलीमें गेर फेर झट कंधे धरी कहारोंके ॥ विलफोर हवाले डोलीको कर दीनी तुरक सवारोंके ॥ दिये साथ हिफाजतमें मन्त्रीने झुमके कइ नार हजारोंके ॥ ले जावो कहारो जा तारो डोलीको बीच चवारोंके ॥ मु ॥ सब हाजिर रहियो ॥ बोल बके सिर सहियो ॥ इस रानीके साथ बात मत कोई कहियो ॥ २४४ ॥

दोहा कहारोंका.

कहारोंने डोली चकी, कंधे लई उठाय ॥
हसबुल हुकुम दिवानके, दिया कूच ठहराय ॥

दिया कूच ठहराय हाय अफसोस कुँवर मर गया म्हारा ॥ एक लखत हजारो नारोंने सिर पीट २ रुक्का मारा ॥ भर सांस सबरके लेतेहैं सब मार चले हांका नारा ॥ ले कहार नारको चलते हैं फिर फौजोंका पड़ गया लारा ॥ मु ॥ हायहुंकार मचाई ॥ सर्व धरती थरनाई ॥ ऐसा मचा तिरास बात ना देत सुनाई ॥ २४५ ॥

दोहा ईछाराका.

आजिज हो रानी कहे, सुनो कहारो बात ॥
पलभर डोला थांम दो, जोड रही दो हाथ ॥

जोड़ रही दो हाथ नेक मैं बछडेसे मिल लूं जाके ॥ तन बदन सरद कर लूं अपना मैं पूरनके दरशन पाके ॥ कर मुहबत मुखडा चूम आऊं कर लाड़ चाव गलसे लाके ॥ कुँवर चला मुझे मिलने दो नहिं जहर फीम मर जाऊं खाके ॥ मु ॥ मत करो झमेला ॥ कुँवर उठ चला अकेला ॥ अब कर लूं दीदार फेर नहिं होगा मेला ॥ २४६ ॥

दोहा कहारोंका.

रानी०-हम लोगोंका वस नहीं, हुकुम पेश लाचार ॥
इस डोलीका थांमना, म्हारे नहीं अखत्यार ॥

म्हारे नहीं अखत्यार रानी हम जिल्लतको सारे जांगे ॥ इसवक्त कोई कुछ सुनता नहिं चारोंके सिर तारे जांगे ॥ एक दम भर डोला थांमैं तो हम विना मौत मारे जांगे ॥ इस अजलसे जो छुटजांगे तो दर जिंदाके डारे जांगे ॥ मु ॥ हम जांगे सारे ॥ नाहक सिर जांगे तारे ॥ डोलीको दें थाम नहीं अखत्यार हमारे ॥ २४७ ॥

दोहा ईछाराका.

बेटा तुझसे कब मिलूं, मालुम नहिं कुछ हाल ॥
आशा तृष्णा लगरही, तेरे मिलनकी लाल ॥

तेरे मिलनकी लाल हाथ मेरे दुशमन चार कहार हुए ॥ मेरी डोली साथ हिफाजतके कइ हमरा तुरक सवार हुए ॥ मिल झुलके कई जनानोंके चौतर्फ़ चौगिर्द हजार हुए ॥ अफसोस मुझे मिलने नहिं देते ले डोलीको पार हुए ॥ मु ॥ नहिं पार वसाती ॥ मेरी जलती है छाती ॥ आशीर्वाद ले मान तेरी मा घरको जानी ॥ २४८ ॥

दोहा कहारोंका.

जब रानीको ले चले, दौडे झपट कहार ॥
राजाके रंगमहलमें, डोला दिया उतार ॥

डोला दिया उतार पलकमें सब कट्ठा रनवास हुवा ॥ लख चार दुहत्थड पडता है सिर फोड वदनका नास हुवा ॥ छिड़काव रक्तका होता है महलोंमें जुलम तरास हुआ ॥ ये हालत जुलम कमाल देखकर सारा नगर उदास हुआ ॥ मु ॥ छोडा अन पानी ॥ जाय निकसी जिन्दगानी ॥ पीट हुई विकराल रावकी सत्तर रानी ॥ २४९ ॥

दोहा राजाका.

जलादो-इस मुरदेको ठायके, दो कूएमें डाल ॥
जितने भर सब आदमी, चलो हमारे नाल ॥

चलो हमारे नाल तालमें सब चलकर असनान करो ॥ गुन गुनत ज्ञान निज धरत ध्यान सतधर्म जान पुन दान करो ॥ धर धुनत धीर कर दूध खीर ले कन्द शीर जलपान करो ॥ चलो स्यालकोट रहो लोट पोट ले रबकी ओट गुजरान करो ॥ मु ॥ मतना घबरावो ॥ कुँवरको चित्त ना लावो ॥ मत करना अफसोस ऐसि तैसीमें जावो ॥ २५० ॥

दोहा जलादोंका.

ल्हास उठाके कँवरकी, दई कुएमें गेर ॥
हाथ पांव दफनायके, दीना दूध बखेर ॥

दीना दूध बखेर फेर हट सारे लोग घरको आये ॥ लबरेज भरे प्याले सुरखीके नूनादेपे पहुँचाये ॥ वो रक्त देख अंधी भई इंछरा

पहले दुख पीछे पाये ॥ सब नगरबीच अफसोस पड़ा ना भूख लगी भोजन खाये ॥ मु ॥ किल्लाट मचाया ॥ राजाने पाप कमाया ॥ रजपूतोंका मौड पून्योंका चन्द छिपाया ॥ २५१ ॥

दोहा नूनादेका.

नूनादेंने चूनरी, रँगी रक्तके वीच ॥
ओढ पलंगपर बैठ गई, भवें कमाना खींच ॥

भवें कमाना खींच बीच चश्मों हग अंजन डार लिये ॥ दो जम रहीं पटियां बालोंकी भर मांग मुसाफर मार लिये ॥ पग चोटी जेवर नख शिखसे छत्तीसों अभरन सार लिये ॥ दरपनको देख गुमान भरी जुलफोंने जुल्म गुजार लिये ॥ मु ॥ सब अभरन पहना ॥ ॥ हार नथ बिंदी गहना ॥ खुश होती मनमांहदेख मुख लेकर अयना ॥ २५२ ॥

दोहा चम्पादे बांदीका.

रानी०-सुन्दर छबि क्या कररही, दरपन देख गुमान ॥
हुस्नरूप रंग वदनका, सब फीका पकवान ॥

सब फीका पकवान सदा ऐसी नहिं रश्क कमर रहेगी ॥ तेरा मदजोबन रस ढल जागा कबी हरगिज नहीं जबर रहेगी ॥ तू पीछेसे पछतावेगी इस दिनकी तुझे खबर रहेगी ॥ पूरनसे लाल खपा करके अब क्या तू सदा अमर रहेगी ॥ मु ॥ यह पाप कमाके ॥ बैठ गई अभरन लाके ॥ खुश होती मनमाहँ बेगानापूत खपाके ॥ २५३ ॥

दोहा नूनादेका.

बांदी-अपने मनकी दास्तां, कहूं तुम्हारे पास ॥
मन रोवे हिरदा फटै, जियरा बहुत उदास ॥

जियरा बहुत उदास मेरी अब भरभरके आवै छाती ॥ पहले सिर पाप कलंक लिया फिर पीछे पेश नहीं जाती ॥ जो जानूं पूरन मर जागा मैं क्यूं उसको तुहमत लाती ॥ जिस वक्त दहनसे बात निकल गइ स्यात हाथ फिर नहिं आती ॥ मु ॥ सिर बदी उठाई ॥ कालसन माथे लाई ॥ पहले दई बिगाड समझ पीछेसे आई ॥ २९४ ॥

दोहा बांदीका.

रानी०-पूरनको मरवायके, क्या खट लिया सबाब ॥
साहबकी दरगाहमें, क्या कुछ करै जबाब ॥

क्या कुछ करे जबाब रानी उस वक्त तुझे खफगान चढ़ा ॥ सुन्दर छबि देख सहजादेकी कन्धेपै तेरे शैतान चढ़ा ॥ माता कह बाहर निकल गया तैं नाहक झूठ तुफान जडा ॥ उस पूरन जैसेका बांधा सतसे धरती असमान खडा ॥ मु ॥ तैं किया बखेडा ॥ राजाका किया निबेडा॥जहां तुझ जैसी नार उलट ऊजड हो खेड़ा॥२९५॥

दोहा नूनादेका.

बांदी मेरे मरमकी, मत ना पूंछे बात ॥
वारूं री उस स्यातको, बहुर न आवे हाथ ॥

बहुर न आवे हाथ कुँवरकी सख्त सजा सिरपर सहती ॥ जो जानूं पूरन छिप जागा मैं गलसे ला पुत्तर कहती ॥ बतोर कन्थके अदब राखती पुत्तर कह ऊपर ढहती ॥ हर वक्त राखती नजर साम्हने सूरतपर आशिक रहती ॥ सिर बदी० ॥ २९६ ॥

दोहा बांदीका.

रानीजी-सूरज जम्बूद्वीपका, रजपूतोंका मौर ॥
नव कोटीका चन्द्रमा, वो छिप गया किस ठौर ॥

वो छिप गया किस ठौर रानी पूरनको धडमें पा बैठी ॥ वो दलबन्धन कुलका मंडन रैयतका थंभन खा बैठी ॥ कुल राज छत्र सूबोंका सेहरा सरकस ताज खपा बैठी ॥ सुन्दर छब सकल सजादेकी सूरजसी सुरत छिपा बैठी ॥ मु ॥ तैं किया बखेडा ॥ राजाका किया निबेडा० ॥ २५७ ॥

दोहा नूनादेका.

बांदी–मेरि नजरों आगे फिरै, सहजादा गमगीर ॥
निस दिन मेरे मन बसी, पूरनकी तसबीर ॥

पूरनकी तसबीर कुँवरके गममे भोजन नहिं भाता ॥ अब मुझ पापन निरभागनको पूरन बिन कौन कहे माता ॥ भगवान कुँवरको दिखला दे मैं पुत्तरका कर लूं नाता ॥ म्हारा पूरन वर्गा सहजादा मुलकोंमें नजर नहीं आता ॥ मु ॥ ढूंढा नहिं पाता ॥ खबर नहिं कहां को जाता ॥ है मुझको अफसोस गया फिर हाथ न आता ॥ २५८ ॥

दोहा बांदीका.

रानी०–कहो तेरे क्या तन लगी, लई पापकी ओट ॥
जीती मर गइ ईछरा, लगी पुत्रकी चोट ॥

लगी पुत्रकी चोट जिगरमां जखम जुलमका पा दीना ॥ जनभार मरी रह गई तरसती ना कुछ लाड लडा लीना ॥ सूरजसा कुँवर भँवर जनके तेरी बल भेट चढा दीना ॥ उस एकलौतीका एक लाल था तैं पापनने खालीना ॥ मु ॥ तेरे क्या हाथों आया ॥ नाहक पूरन मरवाया ॥ सूरज जम्बूदीप चांदसी किरन छिपाया ॥ २५९ ॥

दोहा नूनादेका.

बांदी होकर सिर चढी, सनमुख करे जबाब ॥
भरभर मारे बोलियां, जलकर भई कबाब ॥

जलकर भई कबाब दाबके भरताने मारे तनमें ॥ तू बांदी हो गुस्ताखी कररही खौफ नहीं तेरे मनमें ॥ तेरी सुरख आंख बल माथेपर जैसा केहरी शेर खडा वनमें ॥ मुझे दुशमन माफिक ताड रही ज्यूं सूरा तेज हुआ रनमें ॥ मु ॥ ऐसा ललकारे ॥ खफा हो मसले डारे ॥ सुन बांदी कमजात बदन घायल कर डारे ॥ २६०॥

दोहा बांदीका.

रानी०-मैं तो अपनी दास्तां, कहती नहीं खिलाफ ॥
उस पूरनकी गोरपर, पिरथी करे विलाप ॥

पिरथी करे विलाप कभी भर नींद नहीं सुखसे सोती॥सब भरतखण्डकी नाजनियां तन ताछ वदन छिन छिन खोती ॥ कर याद कुँवर रानी इंछरादे सारी उमर फिरै रोती ॥ म्हारा रिजक दिहिंदा दाताथा फिर हमपर आन खफा होती ॥ मु॥ उलटे हैं पहरे ॥ बुरे हम सारे ठहरे ॥ कुँवर हुआ इंतकाल जखम तन लागे गहरे॥२६१॥

दोहा नूनादेका.

बांदीरी-हरबार कहूं हटती नहीं,सुन मूरख कमजात ॥
तुझकोभी रुखसद करूं, उस पूरनके साथ ॥

उस पूरनके साथ हाथ जल्लादोंके मरवा दूंगी ॥ जिस जगह कुँवरका काल हुवा उस धरतीमें धरवा दूंगी ॥ मुझे एकलोते बीरनकी कसम कल सुबह कतल करवा दूंगी॥ सब उलटी खाल कढा तेरी चमडीमें भुस भरवा दूंगी ॥मु॥ तूं ताने मारे ॥ बदन घायल कर डारे ॥ कौन करी मैं मुकर आन मुझको ललकारे ॥ २६२ ॥

दोहा बांदीका.

रानी०–इस बांदीकी जिन्दगी, क्या तेरे अखत्यार ॥
तुझ वर्गी बहुती फिरैं, हटलपचकनी नार ॥

हटलपचकनी नार रानी तेरे बांदी हाथ नहीं आवे ॥ कभी दूध दहीके धोखेमें तू रुई कपास निगल जावे ॥ अमरूदों सेव अंजीर जान कभी बड़ वट्टी गुल्हर खावे ॥ मुझको क्या कतल करा देगी तू साबित जान नहीं पावे ॥ मु ॥ ऐसी कहुँ लाके ॥ महलसे आगे जाके ॥ तू क्या रहैगी अमर बेगाना पूत खपाके ॥ २६३ ॥

दोहा नूनादेका.

बांदी–क्या मतलब मुझसे लडे, अपना कहो हवाल ॥
कजा इलाही आ लगी, सिरपर खेला काल ॥

शिरपर खेला काल खूब तन मनमें ताने ला ले तू ॥ मेरा जबलग राजा आता नहिं दुनियाकी ऐश उडा ले तू ॥ दिन रात बीच तेरा दिल चाहे सो अन पानी पी खा ले तू ॥ कल सुबह सांससे सबर करो जिंदगीकी आस चुका ले तू ॥ मु ॥ बचनेकी नाहीं ॥ कहूँ बांदी तेरे तांहीं ॥ छोड जिवनकी आस सबर कर मनके माहीं ॥ २६४ ॥

दोहा बांदीका.

रानी०–मरनेसे डरती नहीं, इक दिन मरूं जरूर ॥
जो मुझको मरवाय दे, क्या तेरी मकदूर ॥

क्या तेरी मकदूर रानी क्यूं बडे बोल बोले भारी ॥ मुझको क्या कतल करा देगी तू अपनी जान बचा प्यारी ॥ तेरा पाप छिपाया छिपता नहिं वह एक दिन लेगा ऊभारी ॥ जब आवेगा म्हारा संखराव तू विना मौत जागी मारी ॥ मु ॥ ऐसी कहुँ लाके ॥ महलसे० ॥ २६५ ॥

दोहा नूनादेका.

बांदी रबके वास्ते, ओड निभा तू साथ॥
लाज शरम हुरमत हवा, रखिये अपने हाथ॥

रखिये अपने हाथ तेरे संग फिर मैं नहिं तकरार करूं॥ धन दौलत दुनिया राजपाट सब ठाट तेरे अखत्यार करूं॥ जितनी भर बांदी लौंडी हैं खिदमतमें ताबेदार करूं॥ सत्तर दो बहत्तर महलोंकी मैं सिरफ तुझे सरदार करूं॥ मु॥ रानी हो रहना॥ पहन लाखोंका गहना॥ राजाजीके पास मेरी चरचा नहिं कहना॥ २६६॥

दोहा बांदीका.

रानी०- मैं तो तेरी तरफसे, जिकर करूं नहिं कोय॥
पाप छिपाया ना रहै, इकदिन परगट होय॥

इकदिन परगट होय जगतमें धरम तिरे पापी बहगा॥ जर जिन्दगीपर पूरन सह गया दरगाहमें राम नहीं सहगा॥ तू मौज मार कुछ कहती नहिं तेरा पाप छिपाया ना रहगा॥ कवि कविता बालकराम सुने दो चार बात अलबत कहगा॥ मु॥ चुपका ना रहगा॥ जगत हत्यारा कहगा॥ आखिर होवै न साफ पाप दरगाहमें दहगा॥ २६७॥

दोहा नूनादेका.

बांदी-तेरी जीते जी खातर करूं, सारी उमर गुलाम॥
फेर नहीं तुमसे करूं, ऐसा सख्त कलाम॥

ऐसा सख्त कलाम सदा दर हमेश रहूँ तेरी सरनी॥ सब जुलम जिगरमें ले लेके जालिमकी खता छिपा रखनी॥ है तुमको लाजिम कर हाजिम ये बात समझ जरना जरनी॥ संखरजा बालकराम पास कभी हरगिज नहीं खबर करनी॥ मु॥ चुपके

नहिं रहेंगे ॥ बात दो ज्यादा कहेंगे ॥ ऐसा जुलम कमाल कभी हरगिज नहिं सहेंगे ॥ २६८ ॥

दोहा खिलारीका.

कूवेमें दम कुँवरके, दे दीनी घनश्याम ॥
अलख नाम रटते हुए, बारा वर्ष तमाम ॥

बारा वर्ष तमाम कुँवर जलके आधार रहे जीते ॥ अन भोजन सांसा सुपनेमें नित तीन घूट पानी पीते ॥ कुल बारा वर्ष दुख विपतामें श्री अलख नाम रटते बीते ॥ ध्रुव लगन कठन तप किया कुँवरने बाली उमर जनम जीते ॥ मु ॥ करके कठिनाई ॥ साफ मन पदवी पाई ॥ योगारम्भका ख्याल अगमसे दिया दिखाई ॥ २६९ ॥

दोहा खिलारीका.

आदि पुरुष रिध सिध धरी, सतगुरु गोरखनाथ ॥
उतरी उतराखण्डसे, जोगीकी जम्मात ॥

जोगीकी जम्मात नाथके गगनमें झण्डे फरनाये ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्धोंके शंख रणसिंहे बजते आये ॥ चौसठ जल जोगन बावन बीर छप्पन लख जादू सिर छाये ॥ षट दरशन बारा पन्थ संत जा कूवेपर आसन लाये ॥ मु ॥ तेतीसों चेले ॥ गुप्त परघट डण्ड पेले ॥ कई नाथके साथ कई वन फिरैं अकेले ॥ २७० ॥

दोहा सुरतनाथका.

सतगुरुने किरपा करी, बारा वर्षके बाद ॥
कूवे पर आसन लगे, जंगल हुवा अबाद ॥

जंगल हुआ अबाद साध कोइ न्हा धोके सुख रास करे ॥ कोइ भंग चरस मध पीता है कोइ पूजा पाठ विलास करे ॥ कोइ

आक धतूरा खाता है कोइ तपकर गतकी आस करे ॥ एक बालकराम गुरू गोरखका सुमरन बारामास करे ॥ मु ॥ धन पालनहारी ॥ रहे दरशन हितकारी ॥ देख भेखकी टेक लाज रख आज हमारी ॥ २७१ ॥

दोहा गोरखनाथका.

गुरु गोरखके वचनको, सुन चेला सुरज्ञान ॥
जा कूवेसे जल लिया, करना है असनान ॥

करना है असनान ध्यान श्री अलख निरंजनका लावें ॥ कर तुर्त अगमकी सुर्त शब्द श्रीजोगारमका गुन गावें ॥ रट अलख नाम ओंकार बचा हम चौरासीसे छुट जावें ॥ अमरापुरकारन राग रंग तज राज फकीरीपन पावें ॥मु॥ कूवेपर जावो ॥ झपट जल जलदी लावो ॥ कर सतगुरुकी टहल सुफल संगत फल पावो ॥ २७२ ॥

दोहा सुरतनाथका.

सुन सतगुरुके वचनको, चेला चला शिताब ॥
कूवेके ऊपर गया, भरनेको जल आब ॥

भरनेको जल आब जायकर डोल कुवेमें लटकाया ॥ दो तीन दफे जल खींच चुका फिर कर कुरले मलमल न्हाया ॥ मुख धोने पानी पीनेमें कुल सारा नीर खरच आया ॥ गुरु गोरखके असनान कारने फिर तुम्बा जलमें पाया ॥ मु ॥ हटके नहिं आया ॥ गुरू गोरखकी माया ॥ क्या लीला गइ लपट खौफ जोगीने खाया ॥ २७३ ॥

दोहा पूरनका.

कँवर डोलको पकडके, हो बैठा हुशियार ॥
साहबकी दरगाहमें, भेजे शुक्र हजार ॥

भेजे शुक्र हजार यार तेरे मिलनेका इन्तजार रहा ॥ भरमण्ड खण्डमें डाल दिया मैं सब बातों लाचार रहा ॥ अन वस्तर आंखों नहिं देखा पग हाथोंसे बेमार रहा ॥ मैं बारा वर्षतक जल पीके एक अलख नाम आधार रहा ॥ मु ॥ कर पूरी आसा ॥ तेरे दरशनका प्यासा ॥ सृष्टि उपावनहार तेरा एक अजब तमासा ॥ २७४ ॥

दोहा सुरतनाथका.

अवाज सुनी जोगी डरा, मनमें हुआ उदास ॥
भाग हकीकत जा कही, गुरु गोरखके पास ॥

गुरु गोरखके पास गुरू कूवेमें एक असर देखा ॥ विन घर दर नर जबर जानवर वो पक्षी विन पर देखा ॥ विन खबर अधर घर कर बैठा खुद चश्मोंसे वेसर देखा ॥ वो सख्श हुश्न रंग रूप बीचमें अस वसतर बरतर देखा ॥ मु ॥ हो रहा उजाला ॥ डोल कूवेमें डाला॥लिया डोलको पकड़ मेरा था रब रखवाला ॥२७५॥

दोहा गोरखनाथका.

गुरू गोरख उठकर चले, सुरतनाथके साथ ॥
कूवेके ऊपर खडे, कहैं सधारन बात ॥

कहैं सधारन बात बचा तू कौन कुवेमें आ बैठा ॥ तू क्या जिन भूत परेत असुर इस जगह झोंपडा छा बैठा ॥ कहो क्या कोइ पीर फकीर तपी पानीमें बिस्तर ला बैठा ॥ क्या देव औलिया ख्वाद खिदर अपने घर जोर जमा बैठा ॥मु॥ क्या मढी मसानी ॥ क्या कूवेकी रानी॥लिया तोंबेको पकड़ भरन देता नहिं पानी ॥२७६॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी–ना मैं देवी देवता, ना मैं पीर फकीर ॥
ना जिन भूत परेत हूं, ना भैरों ना वीर ॥

ना भैरों ना वीर नाथजी नहिं मैं देव सलानी हूँ ॥ नहिं ख्वाज खिजर ना हवा असुर मैं ना पागल खफगानी हूँ ॥ ना सेड़ शीतला फूलनदे ना डाकन मड़ी मसानी हूं ॥ दिन चार देखना जगतबीच आदम विन मुक्त परानी हूं ॥ मु ॥ विपताका मारा ॥ पाप कोइ उदय हमारा ॥ इस कूवेके बीच पकड़ किसमतने डारा ॥ २७७ ॥

दोहा गोरखनाथका.

कूवेमेंसे कुँवरको, गुरुने लिया निकाल ॥
कुल मण्डलका हो रहा, मजनू केसा हाल ॥

मजनूकेसा हाल सूख कर विटप रूप विकराल हुए ॥ तन पिंजर खून खुश्क दुबला झट रक्त मांस बेहाल हुए ॥ पग हाथ डुंड सिर झुण्ड बंधा ऊपर गजगजके बाल हुए ॥ सूरत बेहोश खमोश देखकर सतगुरु आप दयाल हुए ॥ मु ॥ झट गोद उठाया ॥ पकड़ छातीसे लाया ॥ ऊपर डाल सुलेफ पलंगपर आन लिटाया ॥ २७८ ॥

दोहा खिलारीका.

सारे चेले टहलमें, रहन लगे दिन रात ॥
पूरनका दिन चारमें, निखर गया सब गात ॥

निखर गया सब गात कुँवरका दिन दिन रूप रमकता है ॥ सूरजकी किरनें छुटती हैं मद जोबन हुसन चमकता है ॥ जूं रोशन हुआ चराग वदन कुन्दनकी तरह दमकता है ॥ कह बालकराम सहजादेका बिजली जूं गात झमकता है ॥ मु ॥ चन्दा शरमाया ॥ हाथ जब गुरुने लाया ॥ जब गुरु हुए दयाल रूप चढ गया सवाया ॥ २७९ ॥

दोहा गोरखनाथका.

चौथे दिन सिध कुंवरसे, करता एक सवाल ॥
सतगुरु पूरनभक्तका, पूंछा सभी हवाल ॥

पूंछा सभी हवाल कुँवरको नजर साम्हने बिठलाया ॥ कहो कौन पिताका पुत्र बचा तू किस माताका है जाया ॥ क्या नाम कौनसा वतन तेरा किस जगह जनम तुम्हने पाया ॥ सब अपने मनकी दास्तान कहो हमसे जोगी फरमाया ॥ मु ॥ किसका सहजादा ॥ तेरा क्या दिलका इरादा ॥ साँच बात बतलाय तेरा कुछ इसमें फादा ॥ २८० ॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी-ना भाई ना बन्धु ना, ना माई ना बाप ॥
एक मेरे सिरपर वही, अलख निरंजन आप ॥

अलख निरंजन आप रहा मेरी जिन्दगानीका रखवाला ॥ उस अँबरने मैं पटक दिया धरतीने मुझको संभाला ॥ धरती बी आंख चुरा बैठी भरमंड खण्डमें ले डाला ॥ उस जोतिसरूप रूप रघुवरने उसी जगहपर आ पाला ॥ मु ॥ कुदरतकी माया ॥ भगवतने मुझे दिखाया ॥ विन सींचे जल नीर जिमींपर वृक्ष लगाया ॥ २८१ ॥

दोहा गोरखनाथका.

बेटारे-मात पिता विन आदमी, कभी न पैदा होय ॥
आजतलक असमानने, भूं पटका नहिं कोय ॥

भूं पटका नहिं कोय पुरुषको नहिं भरमड बफा होता ॥ सच साफ सिदकसे बोलेगा सब सुन्दर वदन सफा होता ॥ जो हमसे कूट कपट कहैगा झूठेपर अलख खफा होता ॥ अपना कहो हाल

फकीरोंसे दुनियामें नाम रफा होता ॥मु॥ तन्दुरुस्त तुम्हारा ॥यही है वचन हमारा ॥ नहीं सांचको आंच भेद बतला दे सारा ॥२८२॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी-मेरी पैदायश जन्मका, स्यालकोट है गाम ॥
मुझ पापी कमबख्तका, निज पूरन है नाम ॥

निज पूरन है नाम गुरू विपतामें उमर गुजारी है ॥ संखराजाका फरजन्द कि जिसका तेज जगतमें जारी है ॥ उसके घर रानी इंछरादे निरभागन मात हमारी है ॥ सब अपने घरमें ऐश करें मेरे-पर गरदिश भारी है ॥ मु ॥ ना टरती टारी ॥ अक्ल गरदिशने मारी ॥ बीते चौबिस साल कर्म ना लेत उभारी ॥ २८३ ॥

दोहा गोरखका.

बेटा-क्या तैंने चोरी करी, क्या हडालखीना माल ॥
क्या नकबजनी क्या रहजनी,क्या रहा बदोंकी नाल॥

क्या रहा बदोंकी नाल बता क्या परजन सेज तुरंग चढा ॥ क्या सूरवीर बल जोधोंसे तेरा रणमें जा जुध जंग पड़ा ॥ चढा गनीमोंपर भटमार दुजदके संग लड़ा ॥ क्या तू कहां करवाया क्या तेरी करनीमें भंग पडा ॥ पग हाथ कलम साला ॥ सजा दे बाहर निकाला ॥ क्या पिताने तुझे कूवेमें डाला ॥ २८४ ॥ पग कर कलम कराय

दोहा पूरनका.

गुरुजी-ना मैंने चोरी करी, ना हडालखीनो माल ॥
ना नकबजनीना रहजनी, ना रहा बदोंकी नाल ॥

ना रहा बदोंकी नाल गुरू ना परजनसेन तुरंग चढा ॥ ना शूर वीर बल जोधोंसे मेरा ना रणमें जुधजंग पडा ॥ ना मकसद

पडा गमीनोंसे भटमार दुजदकी संग लडा ॥ तकदीर उलट गरदिशमां बड गइ विपत मुसीबत भंग पडा ॥ मु ॥ तँग किया भतेरा ॥ कोइ नहीं दोष था मेरा ॥ पग कर कलम कराय मुझे कूवेमें गेरा ॥ २८५ ॥

दोहा गोरखका.

बेटारे-ऐसी क्या गरदिश पडी, नलराजासे तेज ॥
असल हाल हमसे कहो, मत कुछ करो परहेज ॥

मत कुछ करो परहेज साफ कही क्यों उलटी तकदीर हुई ॥ क्या पिसर तुझसे किबले गाहने कर बेअदबी तकसीर हुई ॥ क्या जालिम खुर्द विरादरसे तेरे मारनकी तदबीर हुई॥क्या दिगर बालदः चश्मबदीदः देख सुरत दिलगीर हुई ॥ मु ॥ गुस्सा नहिं झाला ॥ शहरसे बाहर निकाला ॥ पग कर कलम कराय तुझे कूवेमें डाला ॥ २८६ ॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी-अलबत हलफदरोगका, जादे ऐब अजाब ॥
सखुन रास्ती अदलके, सानी नहीं सबाब ॥

सानी नहीं सबाब गुरू क्या कहूँ रामको नहिं भाती ॥ सच साफ कहूँ सिर पाप चढ़े में झूंठ कहूँ इज्जत जाती ॥ सच बोलेसे देह नरककुण्डमें विना पूंछ गोते खाती ॥ मा बाप बहनकी चरचा करते दिलमें बहुत शरम आती ॥ मु ॥ राहमें विष बोता ॥ जीतके पूंजी खोता ॥ जो कहता सच साफ हाल क्यों ऐसा होता ॥२८७॥

दोहा गोरखनाथका.

बेटारे-सच बोलेसे वहिश्तको, गया खपरिया चोर ॥
सरवण पहुँचे स्वर्गको, अपने सतके जोर ॥

अपने सतके जोर सांचसे सदन कसाई पार हुए ॥ वो धनसिंह जाट विसमचंद माली सतसे कालू कहार हुए ॥ परधान पारधी विसन लुटेरा सच्चे रैदास चमार हुए ॥ वहसेन भगत नरसीके तपसे ताबे कृष्ण मुरार हुए ॥ मु ॥ कहो सतकी बानी ॥ साच है मुकत नसानी ॥ जबलों घटमें सांच सांच मत तजो पिरानी ॥ २८८ ॥

दोहा पूरनका.

गुरु०--मेरे एक पिता दो वालदह, एक मासी एक माय ॥
मासीको मिलने गया, मेरी कसके पकडी बाँय ॥

मेरी कसके पकडी बांय मानकर पाप नीत जप्फी पाई ॥ सतधरम समझ मैं भाग गया ना माकी बात पसन्द आई ॥ अब किबलेगाह रनवास गये तब माताने चुगली खाई ॥ बेपूंछ पिताने कतल किया मेरे तनको ताछ जबर लाई ॥ मु ॥ मैं पापी जाना ॥ कहा माताका माना ॥ नहीं किया इनसाफ दूध पानी नहिं छाना ॥ २८९ ॥

दोहा गोरखका.

सुन पूरनकी दास्तां, सतगुरु हुए उदास ॥
रे संखराजा निरगुनी, क्यूं गुल दिया तरास ॥

क्यूं गुल दिया तरास पराधी यह क्या पाप कमा बैठा ॥ तेरे एक गुल बीच चमनके था उस गुलको धडमां पा बैठा ॥ दरम्यान गुलिस्तांके एक फल था सो कच्चेको खा बैठा ॥ बरखातर पगकी जूतीके सिरका सिरताज खपा बैठा ॥ मु ॥ छलसे सत लीना ॥ बहुत तपभी नहिं कीना ॥ हम मारनके जोग तुम्हें पुत्तर नहिं दीना ॥ २९० ॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी-नलराजापर औसतां, बीतीं बारह साल ॥
तन राजी मन खुश रहा, अनखाया धन काल ॥

अनखाया धनकाल रहा जंगलमें विपत गुजार गए ॥ भर भंगीके घर नीर हरीचन्द वो वैकुण्ठ सिधार गए ॥ प्रह-लाद भगत गिरिवरसे गिरके भवसागरसे पार गए ॥ मैं चौबिस बरस विपत भुगती तोभी हर मुझे विसार गए ॥ मु ॥ कुछ सुध ना लीनी ॥ विपत बहुती लिख दीनी ॥ सतगुरु मेरे साथ रामने कैसी कीनी ॥ २९१ ॥

दोहा गोरखका.

तरस खाय किरपा करी, नौ नाथोंके नाथ ॥
एक फलमां साबित किये, पूरनके पग हाथ ॥

पूरनके पग हाथ नाथने ऐसा रूप दिखाया है ॥ जब अलखरूप ओंकार शबद सरजीवन नाद बजाया है ॥ पूर-नपर हुश्न बलंद चढ़ा दो चन्द सुरज सरमाया है ॥ तूं जा बच्चा गढ सालकोट जोगीने न्यूं फरमाया है ॥ मु ॥ तड़फै विविधाता ॥ तड़फती तेरी माता ॥ तडफे बालकराम सदा तेरा गुन गाता ॥ २९२ ॥

दोहा पूरनका.

गुरु०-धन मेरे सतगुरु धन तुम्हें, धन आदि पुरुषओंकार
मुझनिरगुनबिन मुक्तका, दीना जनमसुधार ॥

दीना जन्म सुधार गुरू मैं हटके आज जनम पाया ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्धोंमें एक अलख नजर मुझको आया ॥ सब वदन साफ देह कंचनवर्णी कर दीनी सुन्दर काया ॥ पग हाथ नाथने

दुरस्त किये ये धन सतगुरु तेरी माया ॥ मु ॥ पूरन नहिं जाता ॥ फेर गुरु हाथ न आता ॥ आप मेरे हो बाप पूरनकी माता ॥२९३॥

दोहा गोरखका.

बच्चारे-जा मिल अपने परिवारसे, सबसे करो परीत ॥
जितने दिन थे विपतके, सब हो गये वितीत ॥

सब होगये वितीत देखके इंछरादे गल लावैगी ॥ जिस वक्त नजर सानी नूनादे तुझपर सदके जावैगी ॥ वो आदत हवा पलट जागी तेरी सुरत देख अन खावैगी ॥ क्या खलक अलक क्या सब रय्यत तेरी नित उठ दरशन पावैगी ॥मु॥ क्या राजा रानी ॥ करेंगे हाथों छानी ॥ रूपेसाह दिवान वार पीवेगा पानी ॥ २९४ ॥

दोहा पूरनका.

गुरु०-क्या मकसद परिवारसे, नहिं मात पितासे काम॥
अब तो तुमरे चरणमें, कर दूं उमर तमाम ॥

कर दूं उमर तमाम तुमने पूरनका दुख निवार दिया ॥ मुझ बेगतकी आ मुक्त करी मेरा पिछला जन्म सुधार दिया ॥ निरगामीको निजधामी कर भवसागर पार उतार दिया ॥ सिर हाथ धरा बखसोस दई अपनाकर कुल निस्तार दिया ॥ मु ॥ कहां छोड़ो वनमें ॥ भेष भगवां दो तनमें ॥ करौ फकीरी हाल जोगकी मेरे मनमें ॥ २९५ ॥

दोहा गोरखका.

बेटा-रे कठिन मामला जोगका, विषम सख्त दुशवार॥
विकट पन्थ मुशकिल बडा, है खांडेकी धार ॥

है खांडेकी धार बचा बे थल दरयाव अधिक खारी ॥ भरमण्ड गगन जहां तारोंतक है अनहद धुनमें जल जारी ॥ ना किश्ती

जहाज समुन्दर है ना खेवटिया ना झखधारी ॥ एक जोग गहर-
पर लहर कहरका औघट घाट बना भारी ॥मु॥ पार कैसे होजाना ॥
कठिन है कान फडाना ॥ और सब बात आसन कठिन है
जोग कमाना ॥ २९६ ॥

दोहा पूरनका.

गुरु०-मुश्किल मारग जोगका, अलबत काल समान॥
जहां तुम जैसे गुरु मिले, सब मुश्किल आसान ॥
सब मुश्किल आसान सिदकसे सब मारग बतलावोगे ॥ तुम
भँवरफूल हम मूंड धूल बन मित्तर पार लखावोगे ॥ तुम धर्मरूप
हम पाप भूप ले अमरापुर दिखलावोगे ॥ तुम पारस कोह हम अन-
घढ लोह कर कंचन गले लगावोगे॥मु॥कहां छोड़ोवनमें०॥२९७॥

दोहा गोरखका.

बेटा रे-चैत चमक चित चल चुके, वैशाखवदन वट
खाय॥जेठ जिगरपर जुलम है,साढ सभी खो जाय॥
साढ सभी खो जाय समै सावन सुख सांस समझ आवे ॥
भर भादौं भँवर भटकता फिरता आसज अशरत सुख पावे ॥ करे
कातक कतल कलेजेको मघसरमें मान मरम जावे ॥ पोह
पेट पटे पट पालेसे माह मान मेरा मन मुरझावे ॥ मु ॥ यह पन्थ
दहेला ॥ रहे जंगलमें केला ॥ फल फूल फटक फिलौर फाग फल
मिले न चेला ॥ २९८ ॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी-मैं बारा बरस पातालमें, विस्तर मिली नखाट ॥
मुझे मुसीबत जो पडी, सतगुरु दीनी काट ॥
सतगुरु दीनी काट तुम दर कदमोंसे बेदार रहूँ ॥ अरबाब

इश्कके कूंचेमें दरवहर गर्क गिरफतार रहूं ॥ दर सागर आब शरीक बनूं निस दिन तेरा ताबेदार रहूं ॥ वो रोज विपत वस डाल रहा मैं तौ भी शुक्र गुजार रहूं ॥ मु ॥ कहां छोडो वनमें० ॥ २९९ ॥

दोहा गोरखका.

बेटा रे–तुझै सजे राज अकलीमका, मन्दर महल ॥
मकान ॥ बंगले सहन चबूतरे, बारहदरी दलान ॥

बारहदरी दलान जहांमें फरस फनूस समान सजे ॥ छतबन्दी पलंग मुसहरी मसनद मन मेवा मिष्ठान सजे ॥ गल जर तोड़े वा दस्त कड़े वरसर तुर्रा मुख पान सजे ॥ शमशेर सिफर पिस्तौल कटारी तरकस तीर कमान सजे ॥ मु ॥ पोशाक रँगीली ॥ सजे घर नार छबीली ॥ छोड जोगका ख्याल देख दुनियां चटकीली ॥ ३०० ॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी–मेरे सजै गलेमें गूदडी, दस्त माल मृगछाल ॥
कानन मुद्रा शिर जटा, तन भगवां मन लाल ॥

तन भगवां मन लाल लंगोटा आड़बन्द डंड पानेको ॥ अब तुम्बी पत्तर दस्तपना मद आक धतूरा खानेको ॥ ये झोली खप्पर वाघम्बर कर मण्डल नाद बजानेको ॥ अब कूंडी कुतका तूरम तंगा अंग विभूत रमानेको ॥ मु ॥ गिलसफा सुपारी ॥ सजै गल सेली कारी ॥ भगवा कमर कोपीन भस्म रुद्राक्ष ओंकारी ॥ ३०१ ॥

दोहा गोरखका.

गुरुने कर्द निकालके, लीनी अपने हाथ ॥
सुरत सजादी देखके, थरथर कांपा गात ॥

थर थर कांपा गात हाथसे करद उछल नीचे आई ॥ माह

आफताब अफरोज बनीदर दिल अन्दर दहशत खाई ॥ अजपेश दस्त खुदवाज गस्त फिर कर्द कानके नहिं लाई ॥ मैं फिरा कहता घर जा पूरन तैं सभी फकीरी भर पाई ॥ मु ॥ नितका करना समरन ॥ तेरा सब जोग सपूरन ॥ मत फड़वावो कान तुम्ही घर जावो पूरन ॥ ३०२ ॥

दोहा पूरनका.

गुरु०-तुम्हैं कसममछन्दरनाथकी,अलखपुरुषकीआन॥
मुझे अधरबीच मतछोडना,मेरे जलदी फाडो कान॥

मेरे जलदी फाडो कान गुरु किस काज पकड गये किन्नारा ॥ बेसबब न राजी सतगुरुके शिर आन फरिश्ता ललकारा ॥ इस जमसे पिंड छुटा जलदी भर भजन सबरका भण्डारा ॥ कानोंमें करद चला जलदी कर धरमनादका ओंकारा ॥ मु ॥ क्यूं हाथ हटाये ॥ फेर हटके नहिं लाये ॥ वो मकसद दो खोल गुरू कैसे घबराये ॥ ३०३ ॥

दोहा गोरखका.

बे०-इस आलम अकलीममें, तुझ सानी नहिं कोय ॥
तेरी सूरत चन्द सुरजसी, कभि पैदा हुई न होय॥

कभि पैदा हुई न होय कुँवर तेरी सूरत देख तरस आता ॥ मखमलसे कान कुन्दरीसे रेशमसे फाडूं भयखाता ॥ संखराजा बच्चा विना तेरे हो गरक नाम निरफल जाता ॥ तेरी कञ्चनवरणी कायाके मैं डरता हाथ नहीं लाता ॥ मु॥ दुख जादे होगा ॥ जान रो रोके खोगा ॥ दरद पीड दुख बीच रात दिन कभी न सोगा ॥३०४॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी- मुझ जैसे इस जगतमें, हो हो गये नपैद ॥
बाकी हैं सो जायँगे, है मुझको उम्मैद ॥

है मुझको उम्मैद वदनका फीका रंग पतंग बना ॥ दरी अमर जुस्तजूं करूं गुफ्तगुह हरसे मांगूं रोज पना ॥ दिन रात तसब्बुर जारी हैइस सुन्दर देहका फिक्र घना ॥ बिच रोज कयामतके काया हो एक दिन साफ मदान फना ॥मु॥ झट करद चलावो ॥ जोगका घर बतलावो ॥ जलदी दो उपदेश हाथ पूरनके लावो ॥ ३०५ ॥

दोहा गोरखका.

करद चलाई नाथने, गई आरसे पार ॥
झारे उतरे दूधके, किया नाद ओंकार ॥

किया नाद ओंकार बचा तू जोगारमका सबर हुवा ॥ तैं आज जनम जग जीतलिया तू सब चेलोंसे जबर हुआ ॥ तेरा अनहद सबर सबूरीका सब अनहदधुनमें खबर हुआ ॥ गुरु धारन कारन बहुत फिरैं अब जा बच्चा तू अमर हुआ ॥ मु ॥ ये हुसन तुमारा ॥ अटल हो वचन हमारा ॥ बालेपनके बीच जनम जुग जीता सारा ॥ ३०६ ॥

दोहा पूरनका.

गुरु०-सादत मन्द इम रोजको, करूं याद खुरशैद ॥
गुरु गोरखके लुत्फसे, सब दुख हुए नपैद ॥

सब दुख हुए नपैद आज सुख मिल गया विपत गुजारीका ॥ अब बीस चहारम साल बाद गुन दीना जाननिसारीका ॥ हाल मेरे मतवज्जह हो फल बखशा खिदमतगारीका ॥ वर सिध जोग इनायत करके हक फरमावर दारीका ॥ मुझे रिध लखाया ॥ अमर करदीनी काया ॥ लख चौरासी कठिन जोनिसे पिंड छुटाया ॥ ३०७ ॥

दोहा गोरखका.

चेलेरे-तुम्ह बकसा बाना जोगका, रिध सिध सब भरपूर॥
सिर टोपी तन गूदडी, मस्तक तेल सिंदूर॥

मस्तक तेल सिंदूर मुन्दरा मृगछाला माला मन्तर॥ वाभूत भग वरभद्राणी और रुद्राणी भगवें वस्तर॥ डण्ड आडबंद गोरख धन्धा और मोतंगा तूंबी पत्तर॥ और कुंडी कतका दस्तपना दिया कर मंडल झोली खप्पर॥ मु॥ दरशन गुलशफनी॥ हाथ आसा पग रखनी॥ रणसिंघा संखनाद कान कुंडल गल कफनी॥३०८॥

दोहा पूरनका.

गुरु०-अब गुरु मुझको ले चलो, जहँ तिरसठ अस्थान॥
कुलतारन भवतरनका, करवादो असनान॥

करवादो असनान चलो श्रीरघुवर वीर मनानेको॥ गढ गया गोमती कुल छत्तर कुल अरसठ तीरथ नहानेको॥ गंगा यमुना तिरवेणी तीरथ घटमें गोता खानेको॥ जहँ बालकराम निकटपर बैठा तुमरे दर्शन पानेको॥मु॥ चल दरशन कीजो॥ लाज उसकी रख लीजो॥ जो नर तुमको भजै पार उसको कर दीजो॥३०९॥

दोहा गोरखका.

पूरनको गुरु ले चले, सैल करनके काज॥
गये चीनके मुलकमें, जहँ सुन्द्राका राज॥

जहां सुन्द्राका राज कुँवर से इश्कपाक गोरख रखते॥ हर बखत नजर आगे रखते पूरन बिन गुरू नहीं सजते॥ महरूप गुरू मुश्ताक हुवे एक घड़ी नहिं दिलसे तजते॥ सिध गोरख तलब दिदार कुँवरको सूरत देख नहीं रजते॥ मु॥ कितने दिन बीते॥ देख पूरन को जीते॥ करें जान कुरबान वारके पानी पीते॥३१०॥

दोहा पवननाथका.

सारे चेले खिज गये, जलबल हुए कबाब ॥
पूरनको पीरी मिली, हमको मिला जबाब ॥

हमको मिला जबाब नाथ संग सारी उमर हैरान हुए ॥ सब चेलोंको गुरु भूल गये गुलबदन देख खफकान हुए ॥ म्हारी सब मिहनत बरबाद गई सौ सत्तर वरष बिरान हुए ॥ एक पूरन पूरन करता है गुरु हमसे सर गरदान हुए ॥ मु ॥ म्हारी सुध ना लीनी॥ दया पूरनपर कीनी ॥ रिध सिध बखशा जोग अमर काया करदीनी ॥ ३११ ॥

दोहा सुरतनाथका.

सब चेले मिलके कहैं, किया मसवरा याद ॥
इस शहरकि रानी सुन्दरा, काफिर बुरी जलाद ॥

काफिर बुरी जलाद नार महापुरुषोंको मरवा देती ॥जब जोगी जन ह्वां जाता है बिलफौर कतल करवा देती ॥ ऐसा बेहाल कमाल करै बिच खाल निमक भरवा देती ॥ सिर काट ताक दरम्यान धरे और धड़को जलपर बहा देती ॥ मु ॥ जो पूरन जावे ॥ फेर हटके नहीं आवे ॥ ला ताने दो भेज गरक फौरन हो जावे ॥ ३१२ ॥

दोहा सुरतनाथका.

पूरनजी–यहां बैठा बातें घढै, करै मुफतमें मौज ॥
परमांगे टुकड़े चुगे, ऐश करै सब रोज ॥

ऐश करै सब रोज कुँवर भप्फेमें पीरी पाई है ॥ दिन उदय अस्त मालूम नहीं घर बैठे मौज उड़ाई है ॥ बेफ़िकर फ़कीरी जोग कमा कबी भीख मांग नहिं खाई है ॥ ना कूचे गली बजार फिरा ना घर दर अलख जगाई है ॥ मु ॥ ना माँगन जाता ॥ बैठेको कौन खिलाता ॥ गुरु गोरखके पास बैठके हुकुम चलाता ॥ ३१३ ॥

दोहा पूरनका.

हाथ जोड़ पूरन कहे, सुन सतगुरु महाराज ॥
सहरपनामें मैं चलूं, सतभिक्षाके काज ॥

सतभिक्षाके काज गुरू घर घरमें अलख जगाऊंगा ॥ एक पहर बराबर नगरीमें नित भीख मांगकर खाऊंगा ॥ दो पहर गुरूके कदमोंमें कर सेवा जोग कमाऊंगा ॥ रट अलख तुम्हारी किरपासे कवि ब्रह्मज्योति मिल जाऊंगा ॥ मु ॥ वस्तीमां जाता ॥ मांगके भिक्षा ल्याता ॥ सतगुरु दीजो हुकुम नगरमें अलख जगाता॥ ३१४॥

दोहा गोरखनाथका.

बे०-तुझे नौनिधि बारह सिध दई,अनधन भरे भंडार ॥
करामात कुदरत दई, और क्या तुझको दरकार ॥

क्या तुझको दरकार बच्चा घर बैठे जोग कमाते रहो ॥ तुमें अन्नपूर्णा सर्व दई नित जी चाहे सो खाते रहो ॥ तिरघटका मारग बख्श दिया सन्तोंका दरशन पाते रहो ॥ खिदमतमें बालकराम दिया उसकोभी दिलसे चाहते रहो ॥ मु ॥ रहगा हितकारी ॥ जाय तुमपर बलिहारी ॥ अलबत बालकराम करेगा सिफत तुम्हारी ॥ ३१५ ॥

दोहा पूरनका.

हेगुरु०-जोगारमके बीचमें, है सभीतरहकी बात ॥
अलख निरंजन लिख गये, लेकर कलम दवात ॥

लेकर कलम दवात लिखो है अशरत ऐश अमीरोंको ॥ लिखि हुकुम हकूमत राजोंको रिध करामात गुरु पीरोंको ॥ घर अलख जगाना मंगल्याना मंग खाना लिखा फकीरोंको ॥ जिनको दिन रात मुशीबत है दुख विपता सकल शरीरोंको ॥ मु ॥ विस्तरपर

सोना ॥ काखमें मसनद होना ॥ अलख जगाके काज रोज सब तनको खोना ॥ ३१६ ॥

दोहा गोरखनाथका.

जा बच्चा आज्ञा दई, मांग करो गुजरान ॥
सहर नगर घर घूमके, आ टिकना अस्थान ॥

आ टिकना अस्थान बचा मत सहरपनाकी कर त्यारी ॥ बेमोत मजा नहिं अजल रजा बिन कजा जाग जागी मारी ॥ दर-चश्म तसब्बुर ख्याल रहे मुझे तेरे मिलनेकी इन्तजारी ॥ दिन मुश्किलसे तड़फत कटता सब कटती अख तर संभारी ॥ मु ॥ जलदी हट आना ॥ देर जादा नहिं लाना ॥ इसी शहरके बीच बचा हरगिज नहिं जाना ॥ ३१७ ॥

दोहा पवननाथका.

पूरनजी-सतगुरुने इस वास्ते, दीना खौफ ठहराय ॥
कभि रानी सुन्द्राके हुश्नपर, गाफिल ना हो जाय ॥

गाफिल ना हो जाय रानीपर इस विध सतगुरु समझावे ॥ दिल अन्दर खौफ बढ़ाते हैं उस रानीसे दहशत खावे ॥ वो रानी बड़ि दातार सुन्दरा कर खातिर भिक्षा पावे ॥ तुझे बड़ा जोगीश्वर जब जानूं उस रानीसे भिक्षा लावे ॥ मु ॥ इस शहरमें जावे ॥ महलमें अलख जगावे ॥ रानीसे ले भीख लौट विस्तरपर आवे ॥३१८॥

दोहा पूरनका.

अलख करनको कुँवरजी, चले शहर दरम्यान ॥
देख हजारों इस्तरी, सूरतपर कुरबान ॥

सूरतपर कुरबान नाथका सब आलम दीदार करे ॥ क्या वैश्य ब्राह्मण कायथ खत्री दस्तवस्त गुफतार करे ॥ उमराव अमीर दो

वीर खड़े खलकतका कौन शुमार करे ॥ एक कहता बालकराम कुँवरपर अपनी जान नसार करे ॥मु॥ जा अलख जगाया ॥ शहर सारा भरमाया॥नगर हुवा कुरबान नाथका दरशन पाया ॥३१९॥

दोहा शहरके लोगोंका.

लोग कहैं सब नगरके, कुल उमराव अमीर ॥
रश्ककमर सुन लीजिये, गुंचे दहन फकीर ॥

गुंचे दहन फकीर धीरकर आगे कदम नहीं ठाना ॥ जो लेना हो सो ले हमसे जिस न्यामतकी तुमको चाहना ॥ अब ज़वां मुबारक जिकर करो कुछ सखुन लुतफसे फरमाना ॥ ले नकद अशरफी सोनेकी कर भोजन घर वापिस जाना ॥ मु ॥ यहांसे मत आना॥ जिगर जिंद जान बचाना ॥ जो चाहिये धन दाम खोल दें अभी खजाना ॥ ३२० ॥

दोहा पूरनका.

गुरु गोरखका काफला, पडा शहरसे बहार ॥
जोगी जबर जमातके, साढे तीन हजार ॥

साढ़े तीन हजार पडे कहो कितनी भीख निकालोगे ॥ भंग चरस नसा वे खात सवामन कैसे बोझ सँभालोगे ॥ एक मेरा भार सह सकते नहीं सहस्रोंको कब पालोगे ॥ सौ मनका रोज खरच होता तुम कितनी भिक्षा डालोगे ॥ मु ॥ आगे जातेहैं ॥ पलमां वापिस आते हैं ॥ नहिं पीछेसे काम काम धुक भिख खाते हैं ॥ ३२१ ॥

दोहा शहरके लोगोंका.

गुरु०-भोजन तीन हजारका, क्या मुश्किल बडि बात ॥
हमको कुछ मुश्किल नहीं, चहे दो लाख होवे जमात॥

चहे दोलख होय जमात गुरू तुम अब जाना भोजन करके ॥ रानी सुन्दरा बादसाहजादीसे जावो निकल रहना डरके॥ नग हीरे मोती लाल रतन तुम ले जाना खप्पर भरके ॥ दस बीस पकड़ दें मजदूरोंको ले जाना सिरपर धरके ॥ मु ॥ गड्डे लदवा दें ॥ चाहे सुतरोंपै पादें॥ चाहे ले जाना साथ चाहे हम आप पहुँचा दें॥३२२॥

दोहा पूरनका.

बाबा०-चलती भिक्षा हम करैं, नहिं बैठीसे काम ॥
अडकर हम लेते नहीं, अन होवे चहे दाम ॥

अन होवे चाहे दाम द्रव्य धन ना तेरा न मेरा है ॥ एक घड़ी पलककी खबर नहीं किसका धन सांझ सबेरा है ॥ धन जोड़ जमा कर जावेंगे आखिर जंगलमें डेरा है ॥ परदेश मुसाफिरका चलना चिड़ियोंका रैन बसेरा है ॥ मु ॥ अब कूच ठहरावे ॥ खेत अगले घर जावे॥ ये योगीका काम सभी घर अलख जगावे॥३२३॥

दोहा शहरके लोगोंका.

लहर तुम्हारी नाथजी, जल जोजन दरयाव ॥
बालेपन बीता नहीं, दुनियाका परभाव ॥

दुनियांका परभाव चावसे आगे कदम उठावोगे ॥ दर जिंदाके गिर जावोगे मुश्किलसे जान बचावोगे ॥ फिर सख्त तदारुक पावोगे अगले घर अलख जगावोगे ॥ बस नाथ खता तुम पावोगे तशरीफ पेश फरमावोगे ॥ मु ॥ आगे नहिं जाना ॥ राह मत कदम उठाना ॥ ले लो लाल जवाहर गुरुकी भेट चढ़ाना॥ ३२४ ॥

दोहा पूरनका.

लोगो०-ऐसा क्या कुछ गजब है, इस नगरीके मांह ॥
भिक्षा करनेके वास्ते, क्यों करते हो नांह ॥

क्यों करतेहो नाहं नगरके भूत भगावन नहिं देते ॥ तुम इस बेनिगुरे नग्गरको उपदेश लगावन नहिं देते ॥ गुरभाइयोंकी मन इच्छाका कुछ नियम पगावन नहिं देते॥रानी सुन्द्रा बादशाजाहदीके अलख जगावन नहिं देते ॥मु॥ नहिं देते जाने ॥ लगे गल जफ्फी पाने॥विना जगाये अलख कभी जोगी नहिं माने॥३२५॥

दोहा शहरके लोगोंका.

जोगी०-सुन्द्रादेके मुलकमें, बडा जुलमका राज ॥
सत्रहसो जोगी हनदिये, दर्द दया गई भाज ॥

दर्द दया गइ भाज पेश्तर नफरोंके सारत करती ॥ कर गिरफतार दरवेशोंको रख कहर नजर जारत करती ॥ बिलफौर दे हाथ जलादोंके महापुरुषोंको गारत करती ॥ दर जगत जमात जबर जोगी जगपरलय महाभारत करती ॥ मु ॥ तन शस्त्र लगाती ॥ दया इसको नहिं आती॥बेदर्दन बेरहम खौफ रबका नहिं खाती॥३२६॥

दोहा पूरनका.

लोगो०-जो रानी सुन पायगी, जोगी दिया भगाय॥
तुम लोगोंको पकडके, देगी तोप दगाय ॥

देगी तोप दगाय रानी विन आई कतल कजा देगी॥ जो जाने जोगी फरार किया नहिं रुखसद रफत रजा देगी ॥ जैसी जिद हमसे करते हो इस जिदका जबर मजा देगी ॥ मेरा असवस हाल मालूम होवे जब तुमको सख्त सजा देगी॥मु॥सब जांगे मारे॥जप्त घरबार तुम्हारे॥मर जा सब परिवार चढ़ै सिर पाप हमारे॥३२७॥

दोहा शहरके लोगोंका.

नाथजी-तुझ एवज हम सर्वकी, जाय जिगरसे जान॥
घरबार जप्त धन कुर्क हो, सब हमको परमान ॥

सब हमको परमान नाथ कहां ले आई तकदीर तेरी ॥ महताब वदन दमकत दामन लालनकी चमक अकसीर तेरी ॥ शशि भान चश्मसे चश्म लड़े छुटि किरन जजीर नजर तेरी ॥ हम चाहते सदा सलामत रहो खुरशैद शकल तसवीर तेरी ॥ मु ॥ दे कूंच नगारा ॥ इसीमें भला तुम्हारा ॥ आप बचावो जान फिकर मत करो हमारा ॥ ३२८ ॥

दोहा पूरनका.

लोगो०-दिलका गम करते हो तुम, हौ सब दुनियादार॥
हम जोगी वनके गम करैं, क्या कहेगा संसार ॥

क्या कहेगा संसार जगतमें ना हम कारगुजारी हैं ॥ ना नगरीके नरपतीभूप ना महाजन वनज व्यापारी हैं ॥ ना नोकर नफर दिवान गनी ना पंच ठाकुर घरबारी हैं॥ जग जोगी जनको जानत नहिं हम दम आदम ब्रह्मचारी हैं ॥मु॥ किसका गम करते ॥ नहीं मरनेसे डरते ॥ इतनी कह कह बात कदम आगेको धरते ॥ ३२९ ॥

दोहा साहुकारिणीका.

महल खडी साहुकारिनी, संग सहेली चार ॥
नजर पडी जोगीराजपै, सुध बुध गई विसार ॥

सुध बुध गईं विसार देखकर दीद शुनीद जमालोंसे ॥ पुखराज गोहर मणि हीरोंसे भर थाल जवाहर लालोंसे ॥ सब पुक्त खाम व्यञ्जन भोजन षट चटनी रची मसालोंसे॥ संग चार सहेली अलबेली ले आई ढांफ रुमालोंसे ॥ मु ॥ लाई शाल दुशाले ॥ नाथके किये हवाले ॥ ले भिक्षा घर जावो सुनो जोगी मतवाले ॥ ३३० ॥

दोहा पूरनका.

हे मातारी-कौन जात क्या नाम है,कौन वतनकी नार॥
कौन तेरा गुरुदेव है, कौन तेरा भरतार ॥

कौन तेरा भरतार जनम निस्तार पार कर लिये सारे ॥ गुरु मात तात खुद आप पती जीते अमरापुर सूधारे ॥ चौदह कुल पित्तर पशोपेश सतशील धर्मसे निस्तारे ॥ तेरा अचपल भाग सुहाग रहो पुन फलो गंगके कन्नारे ॥ मु ॥ हम आगे जावें ॥ महलमें अलख जगावें ॥ सुन्द्रादेके जात हाथकी भिक्षा लावें ॥३३१॥

दोहा मोहनादेका.

गुरुजी-जात महाजन मोहती, गढ गँजनीकी नार ॥
गुरू गुसांई सुरसती, हीरामन भरतार ॥

हीरामन भरतार हुये हैं वर्ष चार परदेश गया ॥ बिच भाग सुहाग त्याग दिल अपना करके मैला भेष गया ॥ चौ वरष गये घर आये नहिं कर तनमें बहुत कलेश गया ॥ अगली सुध सार खबर नाहीं सब पिछली पट्टी मेस गया ॥ मु ॥ घर रही अकेली ॥ सकल उड गई लबेली ॥ मन परचावन काज संग रहीं चार सहेली ॥ ३३२ ॥

दोहा पूरनका.

नगर तेरा सुवस वसो, रहियो सदा अबाद ॥
गुरु गोरखके हुकुमसे, तेरी हासिल होय मुराद ॥

तेरी हासिल होय मुराद याद रख आज कन्थकी जारत है ॥ न्यूं वाक हुवे दरवेशोंके नहिं जोगी वचन नकारथ है ॥ सिध कारज वाक अटल होता मुख पूरन वचन इसारत है ॥ दो चार घड़ी दर कन्थ मिले सँग छत्तिस पांच पदारथ है ॥ मु ॥ सुन्द्राके जाना ॥ महलमें अलख जगाना ॥ रानीसे ले भीख लौट विस्तरपर आना ॥ ३३३ ॥

दोहा मोहनादेका.

सुन्द्रादेके महलमें, मतना जाव फकीर ॥
विन आई जिंद जायगी, कर दे गरक शरीर ॥

करदे गरक शरीर झपट खो देगी जान तुम्हारीको ॥ नहिं जाने जोगी जंगमको नहिं जाने फकिर भिखारीको ॥ नहिं जाने गुरू गुसाईंको नहिं जाने जपतपधारीको ॥ सिध साध सन्त जोगी जनको नहिं जाने दरशनहारीको ॥ मु ॥ नहिं भिक्षा पाती ॥ दगेमां पास बुलाती ॥ करके रहिमी बात शीस शमशेर चलाती ॥३३४॥

दोहा पूरनका.

हे मातारी-आज फजरकी बात है, सत गुरु गये मदान॥
पीछे मेरे शरीकने, मारे गजबकी बान ॥

मारे गजबके बान आनकर दिये ताने तनमें भारी ॥ मेरे बेदरदी गुरुभाइयोंने तन भर भरके बोली मारी ॥ बहो सिफत सजादीकी करते बड़ी पुण्यवान सुन्द्रा नारी ॥ जो सुन्द्रासे भिक्षा ल्यावे तब जाने जोगी ब्रह्मचारी ॥ मु ॥ न्यूं पहुँचे आके ॥ जांयगे दरशन पाके ॥ ये काफिरका काम भागजा पीठ दिखाके ॥३३५॥

दोहा मोहनादेका.

हे जोगी०--तुम मत जाना महलमें, सुन्द्राके रनवास ॥
सब कुछ चीज मौजूद है, जो तुमको दरखास ॥

जो तुमको दरखास नाथ जंगल में खर्च पौंचा दूंगी ॥ तुम कहते जोगी तीन हजार मैं नौ लख नाथ जिमा दूंगी ॥ हररोज भण्डारा रच दूंगी लोगोंमें धूम मचा दूंगी ॥ पशमीना अतलस खीमखाप मखमलके बिस्तर ला दूंगी ॥ मु ॥ आगे मत जावो ॥ व्यंजन जी चाहे सो खावो ॥ बैठो मौजां मार वरषभर लहर उड़ावो ॥३३६॥

दोहा पूरनका.

ना मानी ना कुछ सुनी, ना कुछ किया विचार ॥
मोहनासे रुखसद हुवा, आगे चला सिधार ॥

आगे चला सिधार जाय घरदरमें अलख जगाई है ॥ ॐकार अलख धुनकार मचा सुन शब्द सृष्टि शरमाई है ॥ ठा॰ कदम किलेकी तरफ चला छबि देख जगत पछताई है ॥ कवि बालकराम विचार करै कुछ जुगत नहीं बन आई है ॥ मु ॥ किसमतके तालक ॥ मने करती सब खालक ॥ बरज रही सब नार सर्व बूढा क्या बालक ॥ ३३७ ॥

दोहा वरकमदाजका.

सुन्द्रादेके खिदमती, मिलगये वरकमदाज ॥
गिरफतार पूरन किया, जोगी जनका ताज ॥

जोगी जनका ताज तुरकने तुरत हंससा जा पकड़ा ॥ गल तौंक कमरमें जंजीरा जौलान डाला करलिया तकड़ा ॥ दर हाथ हथकड़ी डाल दई फिर मुश्क बांध कसके जकड़ा ॥ जा कोतवालको सौंप दिया दे हवालात पगमें लकड़ा ॥ मु ॥ कुछ दरद न आवे ॥ शहर सब शोर मचावे ॥ रो रो खोते जान कछू नहिं पार बसावे ॥ ३३८ ॥

दोहा मोहनादेका.

तीन घडीमें आ गये, हीरामन साहुकार ॥
मोहनादे मनसे मिली, कर सोलह शृंगार ॥

कर सोलह सिंगार नार भरताको पास बुलाया है ॥ जब नर नारीका प्यार हुआ जोगीका जिकर चलाया है ॥ मैं तेरी तरफका प्रश्न किया जोगीने लगन लगाया है ॥ कह तीन घडीमें कन्थ

मिले करताने आन मिलाया है॥ मु॥ उन घडियों माईं॥ वचनसे मिल गये साईं॥ खबर नहीं क्या कहर हुआ जोगीके ताईं॥३३९॥

दोहा खिलारीका.

जब जोगी पकडा गया, पडा शहरमें शोर॥
हीरामनके महलमें, खबर गई बिलफोर॥

खबर गई बिलफोर लोग सुन्दर छबि देख बेजार हुए॥ खुद हवालातमें दाखिल है इतनी सुन बेइकरार हुए॥ अफसोस पड़ा बिच सभा सकल नर नार नगरके ख्वार हुए॥ कह बालकराम महरम रजसे व्याकुल दिल सख्त लचार हुए॥ हुए गममें सारे॥ टपाटप आंसू डारे॥ रलमिल सब उमराव पुलिस दरम्यान सिधारे॥ ३४०॥

दोहा लोगोंका.

आये पञ्च सिफारसी, कोतवालके पास॥
तमाम कचहरी पुर हुई, ऐसा सजा इजलास॥

ऐसा सजा इजलास सुनो कोतवाल नाथको बुलवा लो॥ जवाहरात बराबर जोगीके तुम धर कांटेमें तुलवा लो॥ नग खोटे खरे बड़े छोटे हलके भारी सब मिलवा लो॥ जहां तलब करो दाखिल कर दें चल साथ खजाना खुलवा लो॥ मु॥ सँग भेज सिपाही॥ नाथको देउ रिहाई॥ आज तलक तुम्ह पास सिफारस कोई न आई॥ ३४१॥

दोहा कोतवालका.

तुमलोगोंका आवना, मुझ सिर किया अहसान॥
जितने पग धरती धरे, कदम कदम कुरबान॥

कदम कदम कुरबान जान ये दिलसे आजिज बहार नहीं ॥ सुन्द्राका हाल मलूम तुम्हें मैं जोगीसे बेजार नहीं ॥ धन द्रव्य तुम्हारी किरपासे बस यार मुझे दरकार नहीं ॥ विन हुकुम नाथको छड़ देना एक यह मेरे अखत्यार नहीं ॥ मु ॥ रानी सुन पावे ॥ मुजरम कर पास बुलावे ॥ कब्ज करे जिंद जान जिगर धरनन दफनावे ॥ ३४२ ॥

दोहा लोगोंका.

कोत०-हफ्त विलायत हम फिरे, देखे मुलक अनूप ॥
किसी आलममें देखा नहीं, इसकी माफिक रूप ॥

इसकी माफिक रूप जगतमें हमरी नहीं नजर आया ॥ अकलीम हफ्त नव खंध फिरे कोइ ऐसा नहीं शख्स पाया ॥ खुरशेद शशी अखतर चमकत दामन दककत लसकत काया ॥ इस रश्ककुँवर नर गुंचे दहनको काल करम कहां ठा ल्याया ॥ मु ॥ कहां जान गमाई ॥ मृतक मिट्टी ठा ल्याई ॥ कोतवाल कर रहम दया हमकोभी आई ॥ ३४३ ॥

दोहा कोतवालका.

लोगोजी-अमर इलाही सामने, नहीं किसीका दोष ॥
इस जोगीके इन्तकालका, हमको भी अफसोस ॥

हमकोभी अफसोस हुकुमपर क्या कहुं किसका चारा है ॥ ये निखद हुकुम हमनाम हुवा सब खोटा काम हमारा है ॥ इस शिकम अगाडी क्या कर लूं दूं जां नहिं और गुजारा है ॥ गुलबदन माहरू जोगिराज हमकोभी तुमसे प्यारा है ॥ मु ॥ छोड़ा नहिं जाता ॥ छोडूं तो मैं नहिं पाता ॥ तुम हो पंच सुजान मारा मैंभी नहिं चाहता ॥ ३४४ ॥

दोहा लोगोंका.

कोतवालजी-हम जोगीके कारने, खोदेंगे घरबार ॥
कुटुँब कबीला बेंचके, भरें दंड सरकार ॥

भरें दंड सरकार हुकुम साबिक दस्तूर हटा देंगे ॥ खुद अपनी जान गँवा देंगे जोगीको तुर्त छुटा देंगे ॥ अपना घर खाक मिला देंगे इसका दुख दरद मिटा देंगे ॥ इस रमते रावलकी खातिर धन दौलत दरब लुटा देंगे ॥ मु ॥ तुम मित्र हमारे ॥ आये हम पास तुम्हारे ॥ जोगीको दो छोड़ दाम लो खरे करारे ॥ ३४५ ॥

दोहा कोतवालका.

हे लोगो०-रहे दीनों दरम्यानमें, आप खुदा भगवान ॥
हमरे तुम्हरे बीचमें, गंगाजली कुरान ॥

गंगाजली कुरान नाथको विना रपट नहिं मारूंगा ॥ मैं देखूं दफा हिदायतकी जा खुद कानून विचारूंगा ॥ कोइ वजह कुतुबसे निकली तो मैं सरेआम ललकारूंगा ॥ अब आब खुर्श अखत्यार इसमें देखो क्या कारज सारूंगा ॥ मु ॥ हयात होवेगी ॥ नहीं कुछ बात होवेगी ॥ जो बाकी है इयात बातसे मात होवेगी ॥ ३४६ ॥

दोहा लोगोंका.

हे कोत०-कहो किस राह कनूनसे,क्या कुछ हो तदबीर॥
वो हिकमत गत कौनसी, कैसे बचै फकीर ॥

कैसे बचै फकीर धीर धर कैसे सबर यकीन होवै ॥ करै दममें शमा फनूस हमारा लंप वदनभी मलीन होवे ॥ क्या कहूँ अकलमें आती नहिं कुछ समझ नहीं बुध छीन होवे ॥ तुम्ह बराह गुजारिश समझाना बुध अकल हवा परवीन होवे ॥ मु ॥ फिर घरको जाते ॥ गंग जमुना जल न्हाते ॥ अब अपने घरमांय जाय अन पानी खाते ॥ ३४७ ॥

दोहा कोतवालका.

लोगो०-रातों देख कानूनको, दिनभर करूं विचार ॥
सुरत हरिनाई फकीरकी, करदूं मिसल तयार ॥
करदूं मिसल तयार नार मतवज्जह सुने सुनाता हूँ ॥ जितने भरवस्फ बलन्द पड़े जो रानी गिने गिनाता हूँ ॥ बेदर्द बादशाजादीको जिसतरहसे मने मनाता हूँ ॥ यह बात जोगी सरजिंदेकी जिस तरहसे बने बनाता हूँ ॥ मु ॥ सब हर हर जपना ॥ जमाखातर सब रखना ॥ बरखातर जोगिराज माल खो दूंगा अपना ॥३४७॥

दोहा खिलारीका.

लोग चले घर आपने, कर मनको दिलगीर ॥
तरफ नाथके देखके, नैन भरे जल नीर ॥
नैन भरे जल नीर चले रो रो अपने घरबारोंमें ॥ कोई सेजोंपर गुलतान हुए कइ रम गए नार विहारोंमें ॥ कोइ तान डुपट्टा सोय रहे कइ चढ गए महल चबारोंमें॥एक बालकराम कलम कागज ले बड़ गया सोच विचारोंमें ॥ मु॥ दिल हुवा रञ्जीदा ॥ कहीं लगता नहिं दीदा ॥ खूनकुशीकी बात कहांतक करूं पोशीदा ॥ ३४९ ॥

दोहा कोतवालका.

हे मुनसी०-आये सिफारसी नगरके, सोचतहैंकोतवाल॥
मुनशीसे कहने लगा, क्या कुछ लिखें हवाल ॥
क्या कुछ लिखैं हवाल नाल कुछ हाल सुनाना लाजिम है ॥ उस ताजिरातके हिंद दफासे वजह बताना लाजिम है ॥ इस रश्ककुँवर परदेशीपर ना छुरी चलाना लाजिम है ॥ इस सुन्द्रासे यों बात जनाना लाजिम है ॥ सरकार हमारी क्यापै कुछ करना चाहिये ॥ मु ॥ क्या बात बनाइये ॥ किस विध जोगीराज राजकी जान बचाइये ॥ ३५० ॥

दोहा मुनशीका.

मुनशी कहे कोतवालसे, सुनो तुम हाल हवाल ॥
रानीको दिखलाय दो, जोगीका जम्माल ॥

जोगीका जम्माल नाहकमें सबको मार बरून करे ॥ कुछ काम हिमायत आती नहीं विन खता वदनका चून करे ॥ रानी धर्मशास्त्र कुछ जानै नहिं पुर जफा जुलमसे खून करे ॥ नित नेम नियम जुलमी आगे क्या ताजीरात कनून करे ॥ मु ॥ तारीफ सुनावो ॥ वस्फ सारे गिनवावो ॥ जिस विधसे बचजाय वही विध समझ बनावो ॥ ३८१ ॥

दोहा कोतवालका.

हे जो०-कोतवालकी बातको, सुन ले यार फकीर ॥
हाय पापी कहां आ फँसा, नाहक खोया शरीर ॥

खोया व्यर्थ शरीर जोगीश्वर क्या तू हो गया खफगानी ॥ इस वारदातकी खबर मुलकमें परगट है सुन्द्रा रानी ॥ किस आलममें मालूम नहीं इस खूनकुशीकी हैं कहानी ॥ तूं जान बूझ अनजान हुआ नाहकमें खो दइ जिंदगानी ॥मु॥ कंचनसी काया ॥ काल तेरे सिर छाया ॥ अब पावे नहिं जान मौतने आन दबाया ॥ ३८२ ॥

दोहा पूरनका.

हे बाबा०-मैं रानीका क्या लिया, कुछ ना दिया बिगाड ॥
ना जारी ना दुजदगी, ना नकब दिया ना पाड ॥

ना नकबदिया ना पाड धाड विन चोरी क्यों गिरफतार किया ॥ ना भट मारी ना इश्तहारी नाहकमां पकड लचार किया ॥ ना जाल साज ना गठ कतरां दे मुशकां बेअखत्यार किया ॥ ना सख्त असीर मियादीको मुहबतसे दुजद फिरार किया ॥

॥ मु ॥ ना लूट मचाई ॥ नहीं चोरी कर खाई ॥ इतना मेरा कसूर नगरमें अलख जगाई ॥ ३६३ ॥

दोहा कोतवालका.

है जो०-खास हुकुम सरकारका, हम लोगोंके नाम ॥
बिन इजाजत करते नहीं, ऐसा निखद अंजाम ॥

ऐसा निखद अंजाम नाथजी करते करते हम हारे ॥ उस रानी सुन्द्रा बेदर्दनने सत्रासौ जोगी मारे ॥ कोइ एक गया नहिं जीते जी सब दरवेशोंके शिर तारे ॥ कहो उनकी क्या तकसीर हुई नाहकमें मर गये बेचारे ॥ मु ॥ ना पार बसाई ॥ जान यहां आन गमाई ॥ जो कोइ देगा दरक कजा उसकीभी आई ॥ ३६४ ॥

दोहा पूरनका.

बाबाजी-जोगीके मरवानेसे, रानी उतरे पार ॥
लो बाबा मुझे मार दो, है तुमको अखत्यार ॥

है तुमको अखत्यार यार अब नहीं मौतसे डरना है ॥ ये जिंदगानी बद्दलकी छानी एकदिन सबको मरना है ॥ दम आया न आया गम खाया किस जगह छिपाके धरना है ॥ उस अखतर रोज कयामतके जिंदगानीका दुख भरना है ॥ मु ॥ अखत्यार तुम्हारे ॥ खड्ग सिर मारो म्हारे ॥ छुट जावेगी खोड़ दरद दुख मिट जां सारे ॥ ३६५ ॥

दोहा कोतवालका.

रानीसे कोतवालने, जाकर किया बयान ॥
एक गिरफतार जोगी किया, सितम सजीली शान ॥

सितम सजीली सान गदाकी खुदलब सुरख रँगीली है ॥ दरदहन बतीसी चुस्त जबां मिसरीसे तेज रसीली है ॥ गरदन ताऊ-

सकी लायरकी दो अबरू गजब छबीली है ॥ नकवीनी खूब पेशानी नाथकी अखतरसे चटकीली है ॥ मु ॥ क्या हुकम तुम्हारा ॥ खिजल होता जग सारा ॥ सच्च करूं तामील नहीं कुछ उजर हमारा ॥ ३६६ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे को०-उस जोगीको पकडके, लेजा बीच मदान ॥
नोश जान करवायदो, दूध भात पकवान ॥

दूध भात पकवान खिलाकर गरदनपर खांडा मारो ॥ धड़ धरतीपर मत गिरने दो कर होस सँभलके शिर तारो ॥ शिर काट ताक दरम्यान धरो ठा ल्हास समुन्दरमां डारो ॥ दो चश्म काढ़ मुझको दीजो उस जगह जिमीको नुचकारो ॥ मु ॥ कोइ औरभि आवे ॥ जान जीती नहिं पावे ॥ एक जोगी दो मार राम कोइ दूजा लावे ॥ ३६७ ॥

दोहा कोतवालका.

हे जो०-कजा तुम्हारी आ लगी, हँस हँस दे दो जान॥
हुकुम इलाही हो गया, तू दमका महिमान ॥

तू दमका महिमान खाय लो जो कुछ तुमको खाना हो ॥ मैं हस्ब जाबतः सब मँगवा दूं जौन चीजकी चाहना हो ॥ तुझे न्हाना धोना जल पीना कुछ मँगवाना कहिं जाना हो ॥ मैं खिदमतमें हाजिर तेरी कुछ मुझको भी फरमाना हो ॥ मु ॥ बेशक फरमाइये ॥ करम कर जबां हिलाइये ॥ सब कुछ चीज मौजूद आपको जो कुछ चाहिये ॥ ३६८ ॥

दोहा पूरनका.

बाबा-ना खाना ना लेखना, ना जाना कहीं बहार ॥
एक रानी सुन्द्राके हाथकी, भिक्षा है दरकार ॥

भिक्षा है दरकार रानी खुद आप डाल जा झोलीमें ॥ इस भिक्षाकारन जान दई मैं गुरुभाइयोंकी बोलीमें ॥ मुझे बहुत गुरुने मना किया चल आया देखन भोलीमें ॥ कह बालकराम राजा हासिल ये गुरुकी हुकुम अदूलीमें ॥मु॥ भूलो मत कोई॥गुरू कहे करना सोई ॥ विन सतगुरुके हुकुम आज जिंदगानी खोई ॥३५९॥

दोहा कोतवालका.

कोतवाल हटके चला, रानीजीके पास ॥
उस जोगीके बाबमें, आन करी दरखास ॥

आन करी दरखास नाथ दो दिनसे भूखा मरता है ॥ गुफतार नहीं रफतार नहीं ना मौत कजासे डरता है ॥ ना न्हाता है ना धोता है ना खानेमें चित धरता है ॥ एक तेरे हाथकी भिक्षा कारन अरज गुजारिश करता है ॥ मु ॥ गुरुपां पचवावे ॥ फेर खानेको खावे ॥ सिरसे फर्ज उतार फेर जोगी मर जावे ॥ ३६०॥

दोहा सुन्द्राका.

हाजिर करो फकीरको, मतना लावो देर ॥
पहले भिक्षा डारके, फिर मारूं शमशेर ॥

फिर मारूं शमशेर नाथका धड़से सीस उतारूंगी ॥ जिस वक्त नजर जोगी आवे उस वक्त क़तल कर डारूंगी ॥ दे अलबत भीख भिखारीको फिर खड़ग सींत कर मारूंगी ॥चाहे जुलम बधो चाहे धरम घटो अपना नहिं नेम विसारूंगी ॥मु॥ मै मार गमाऊं॥जखम गरदनपर लाऊं ॥ जोगीको दूं मार हक्क सारा भर पाऊं ॥३६१॥

दोहा कोतवालका.

कोतवालने नाथको, हाजिर किया शिताब ॥
रनवास बीचमें छोडके, करता एक जबाब ॥

करता एक जबाब रानि ये जोगी हाजिर हजूर किया ॥ तुमने इरशाद दिया मुझको मैं बिला उजर मंजूर किया ॥ जिस मफरूरीकी तलबी थी दर खिदमत फर्ज गँजूर किया ॥ ये नाथ तुम्हारे ताबेमें मैं हसबुल हुकुम जरूर किया ॥मु॥ ये काम हमारा॥होवे सो हुकुम तुम्हारा॥चाहे मार चाहे छोड़ उजर ना करे बिचारा॥३६२॥

दोहा सुन्द्राका.

रानी उतरी महलसे, करके हरष हँकार ॥
एक हाथ भिक्षा लई, एक हाथ तलवार ॥

एक हाथ तलवार कुँवरके मारनको नीचे आई ॥ जब सुरत सुरजसी देखि नारने चट उलटी गिरदी खाई ॥ शमशेर उछल पत्थरपर गिर गई भिक्षा देने नहिं पाई ॥ ऐसी बेहोश खमोश हुई गिर कमलफूलसी कुम्हलाई ॥ मु ॥ तड़फै है रानी ॥ जैसे मछली विन पानी ॥ लगा इश्कका तीर विरहकी हुई दिवानी ॥ ३६३ ॥

दोहा बांदीका.

बांदी आई दौडके, लेकर गडुवा हाथ ॥
सिर झाडे पग दाबती, हाथों मलती गात ॥

हाथों मलती गात नारका शरद आबसेमुख धोया ॥ किस सायत महलसे निकली थी गिर कमलफूलसा तन खोया ॥ दे तुरब बतीसी खोल दई फिर दहन बीच पानी चोया ॥ कर जोश बदन खामोश हुई कर होश कामिनी क्या होया ॥ मु ॥ उठ मिरगानयनी ॥ चन्द्रबदनी गुलदहनी ॥ क्या तन बीती बात हकीकत हमसे कहनी ॥ ३६४ ॥

दोहा सुन्द्राका.

बांदी कहो कोतवालसे, अपने घरको जाय ॥
तू बांदी इस नाथका, दे तड्डा पलँग बिछाय ॥

दे तड़ा पलँग बिछाय सनमकी मुश्क खोल कर दो खाली ॥ इन्ह कुमकुम बनें चरनोंमें जंजीर हथकडी किन डाली ॥ गल तौंक तोड़ जौलान काढ़कर गुफ्त शीरि बोला चाली ॥ तुम चरन दाब सिर छत्र करो कुछ चेहरेपर आवे लाली ॥ मु ॥ कर दो खुशयाली ॥ भरो कंचनकी थाली ॥ रखना होश सँभाल कभी मत देना गाली ॥ ३६५ ॥

दोहा बांदीका.

बांदी कहे कोतवालसे, चातर जबां शहूर ॥
जा तुझको रुकसद दई, हो गया हुकुम हुजूर ॥

हो गया हुकुम हुजूर जायकर अपना कार करो लाला ॥ फिर मुश्क नाथकी खोल दई झट तौंक गलेसे नीकाला ॥ जौलान काट जंजीर तोड़ दई और हथकड़ीका ताला ॥ बमुजिब हुकुम मिरगनयनीके ड्योढ़ी बीच पलँग डाला ॥मु॥ ऊपर बिठलाया ॥ नाथका दरशन पाया ॥ बांदी हुई आनन्द देख खुबसूरत काया ॥३६६॥

दोहा सुन्द्राका.

हाथ जोड सुन्द्रा खडी, घूंघट बदन छिपाय ॥
अर्ज गुजारिश मैं करूं, गलमें पल्लू पाय ॥

गलमें पल्लू पाय बोल बांदीका शरद शरीर करो॥मेरी गुस्ताखी बेअदबीको कर माफ बदन अकसीर करो ॥ तुम गुन्हा बखश भोजन पावो घरबार नगरकी सैर करो॥कह बालकराम शरण पड़ गई मेरी माफ गुन्हा तकसीर करो ॥ मु ॥ जोगीके चेले ॥ सकल सूरत अलबेले॥एक बेर मुखसे बोल जगत दरशनके मेले॥३६७॥

दोहा पूरनका.

जो तेरी यह आरजू, मुझे मारे सुख होय ॥
बेशक मुझको मार दे, जरा उज्र नहिं होय ॥

जरा उज्र नहिं होय मुझे हंकार हरष कुछ जोश नहीं ॥ तकदीर फ़कीरी आगमकी और जोगारमकी होश नहीं ॥ मेरी किस्मत कौतक करती है कर क़तल तुम्हारा दोष नहीं ॥ बेधड़क मार तलवार नार कुछ जिंदगीका अफसोस नहीं ॥ मु ॥ दम आया न आया ॥ गया हटके नहीं पाया ॥ दमका कर अफसोस कोई मूरख पछताया ॥ ३६८ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे जो०-तुम आये किस मुलकसे,कहां लाये तशरीफ़॥
कौन तुम्हारा वतन है, क्या है इस्मशरीफ़ ॥

क्या है इस्मशरीफ़ आपका किस नगरीका रादा है ॥ एक जगे झूफ़ड़ा पा बैठो इस फिरनेमें क्या फादा है ॥ इस उमर फकीरी क्यों पाई क्या कठन फकीरी कादा है ॥ सच सच हमैं बताय कुँवर किस चीज बीच दिल ज्यादा है ॥ मु ॥ क्यों करी फकीरी ॥ नहीं कुछ इसमें पीरी ॥ हाथ माल मृगछाल कान कुंडल कश्मीरी ॥३६९॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-हम आये औघट विकटसे, जहांकी विकटी
वाट ॥ आदमकी उम्मेद है, तिरबेनीका घाट ॥

तिरबेनीका घाट ठाट जहां टूट अलखका भण्डारा ॥ जहां परमजोत परघट तिरघटमें अनहद धुनमें धुनकारा॥एक विषम वेद जुग जो गरमका अगम शब्द धुन विस्तारा ॥चित धरनन मरनन हित करनन गिर चरनन सरनन निस्तारा॥मु॥निर्मल कहैं बानी ॥ हमैं भिक्षा दे रानी॥मैं जोगी अवधूत निपट निर्गुण निर्ज्ञानी ३७०॥

दोहा सुन्द्राका.

हे नाथजी-तेरी सुरत फकीरी है नहीं, तू मान चाहे ना
मान ॥ मुझे किसी सुलतानका, दीखे राज दिवान ॥

दीखे राजदिवान तेरी सब शान शकल गमगीरोंकी ॥ रफतार गुफ्तगू सूलतांकी तनकी कुल वजह वजीरोंकी ॥ सुन्दर छवि सकल सजादेकी खुबसूरत शान अमीरोंकी ॥ तू मान चाहे ना मान कुँवर तेरी यह नहीं शकल फकीरोंकी ॥ मु ॥ ऐसी चटकीली ॥ दहन दर जबां रसीली ॥ सब राजोंके बस्फ वदनकी आब छबीली ॥ ३७१ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-हम जोगी हैं जनमके, धुरके फक्र फकीर ॥
इस आगे तकदीरके, क्या कर लें तदबीर ॥

क्या कर लें तदबीर रानी इस किस्मतपर जाइये वारे ॥ कहीं राजा राव अमीर गुनी कहिं दुनियां खिजल समर सारे ॥ कहिं राजी खुशी मगन मनमें कहिं निरधन आजिज बीचारे ॥ हम जो रानी सुलतां होते फिर क्यों फिरते दरदर मारे ॥ मु ॥ घर राज कमाते ॥ ऐश अशरत सुख पाते ॥ इन नगरीके बीच आन क्यों अलख जगाते ॥ ३७२ ॥

दोहा सुन्द्राका.

नाथ०-मुल्क खलकमें क्यों फिरौ, बैठ करो गुजरान॥
रहो हमारे महलमें, खा मेवा मिष्टान ॥

खा मेवा मिष्टान नाथ मत भटकत भरम फिरौ वनमें ॥ मसनंदपर बैठ आराम करो रहो हशमत माल दरब धनमें ॥ नो आब बीच असनान करो सब अतर फुलेल मलो तनमें ॥ नित बंदी ताबेदार रहै कुछ उजर नहीं करती मनमें ॥ मु ॥ रहके पतियाले ॥ चाहे कच्चीको खाले ॥ निस दिन हाजिर खास तेरी सौबार कहा ले ॥ ३७३ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-दासदिरम दौलत दरब,हशमत मालनमाल॥
तुम्हें मुबारिक धन रहो, हीरे मोती लाल ॥

हीरे मोती लाल रतन सब तुझे मुबारिक रहो तेरा ॥ हम वनबासी वनमें राजी नहिं महल बीच लावें डेरा ॥ एक भिक्षाकारण जोगीने तेरे महल बीच पाया फेरा ॥ दे भिक्षा रुखसत कर रानीजी नहीं गुरू मारे मेरा ॥ मु ॥ ना रहता रानी ॥ घड़ी नहीं पीवै पानी ॥ विन सतगुरुकी टहल सफल ना हो जिंदगानी ॥ ३७४ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे जो०-मुद्दतसे दिलमें मेरे, था एक ख्याल सवार ॥
चश्म दीदभर पावती, अप देखा भरतार ॥

अप देखा भरतार तभीसे विरह बदनमें बन्द हुवा ॥ मेरे लाखों मरद नजर आये कोई एक नहिं नजर पसन्द हुवा ॥ जिस वक्त नाथ तशरीफ लाये मुझे आज ईदका चन्द हुवा ॥ छबि सुरत तुम्हारी देखेसे बांदीका दिल आनन्द हुवा ॥ मु ॥ गलसेती लाले ॥ सेज चढके पतियाले ॥ निस दिन हाजर खास तेरी सौ बार कहाले ॥ ३७५ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-मन मुरशद तन तख्तको, दिलको ले समझाय ॥ अब सबरका गेरके, देनी भाय बुझाय ॥

देनी भाय बुझाय तेरी सेजोंपर शूर रनवीर सजे ॥ तेरे पलँग मसहरी मसनदपर एक राजा राव अमीर सजै ॥ इन्ह मन्दर महल चबारोंमें राजाका खास वजीर सजै ॥ तुझ नाजुकवदनीके गलसे नहिं जोगी फक्र फकीर सजै ॥ मु॥ हो हमसे हेठा ॥ खाक बिस्तरमां लेटा ॥ तुझे सजे कोइ कुँवर किसी राजाका बेटा ॥ ३७६ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे जो०-तुम माफिक इस जगतमें, ना उमराव अमीर ॥
ना राजा ना बादशाह, ना सुलतान वजीर ॥
ना सुलतान वजीर कुँवर ना शूरवीर ना बलकारी ॥ ना सुफल सौदागर ना जोहरी ना महाजन बणिया पटवारी ॥ ना साहूकार कायथ खत्री ना राजपूत ना बेपारी ॥ एक तुझ माफिक अलबत होंगे श्रीकृष्ण कन्हैया गिरिधारी ॥ मु ॥ नँदलाल उतारी ॥ जैसे फिरते वनवारी ॥ रहो रानीके पास तेरी छबिपर बलिहारी॥ ३७७॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-जौन इरादे महलसे, ले आई तरवार ॥
जो साबिक उम्मेद थी, मेरी गरदनऊपर मार ॥
मेरी गरदन ऊपर मार रानी इस अजाब अजलसे छुट जाऊं॥ मेरी क़िसमतकी यह खूबी है मैं जहां जाऊं वहाँ दुख पाऊं ॥ इस जीनेसे मरना बेहतर सतगुरुकी आप कसम खाऊं ॥ विनिकम्मी खोड़ छुटा रानी तेरा धुर दरगाहमें यश गाऊं ॥ मु ॥ छुट जाऊं गमसे ॥ जरा नहिं राजी दमसे ॥ शीश गेर शमशेर अर्ज करता हूँ तुमसे ॥ ३७८ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे जो०-इस आलम अकलीमका, कर जोगीजन राज ॥
सलतनत बनी अपनी करो, धरो शीशपर ताज ॥
धरो शीशपर ताज आज रय्यतपर हुकम करो भारी ॥ सलतनत बड़ी बावन सूबे सब आन करें ताबेदारी ॥ दल लशकर पलटन फौजोंमें लिख हुकुम भेजदो सरकारी ॥ में निसदिन हाजिर खिदमतमें दुलहनसे इश्क करो जारी ॥ मु ॥ दे त्याग

फकीरी ॥ तखतपर करो अमीरी ॥ हरचन्द हुकुम सँभाल साथ सलतनत वजीरी ॥ ३७९ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०--भरतखण्ड पंजाबका, संखराजा सरमन्द ॥
स्यालकोटका भूप है, उसका मैं फरजन्द ॥

उसका मैं फरजंद महल मन्दर अपने घरबार तजे ॥ सलतनत वो हफ्त विलायतकी दल लश्कर बेसुम्मार तजे ॥ कुल हुकुम हुकूमत बादशाहत धन दौलत लाल जवार तजे ॥ सत्रहसो कोशमें भरतखण्डके मसनन्द तख्त हजार तजे ॥मु॥ दुस्तार घनेरे ॥ काम नहिं आये मेरे॥अपनी अशरत छोड़ कौन घर लावे डेरे ॥३८०॥

दोहा सुन्द्राका.

इतनी सुनके सुन्दरा, रही जमी नुचकार ॥
शुक्र आजके रोजको, म्हारे पूरन आये वार ॥

म्हारे पूरन आये वार दौडके रानी गले लपट जाती ॥ लब हँस २ बोले लेती है कुंदनसा वदन लगा छाती ॥ चश्मोंसे चश्म मिलाती है कस कमर बीच जप्फी पाती ॥ कर पकड़ पलंगपर बैठगई लख बार नार सदके जाती ॥मु॥ जोबनमदमाती ॥ इश्कमें अन्न न खाती ॥ ऐसे घरका पूत आज जोगी वर पाती ॥३८१॥

दोहा पूरनका.

दस्त वस्त पूरन कहै, सुन सुन्द्रादे बात ॥
तुझे कसम भगवानकी, मेरे मतना लावे हाथ ॥

मेरे मतना लावे हाथ गुरू जोगाराम वेद विचारेगा ॥ वहां बैठो हाल मलूम हुवे सब वदन भस्म कर डालेगा ॥ अघोर मन्त्र में खा जायगा सब तनकी खाल उतारेगा ॥ अब दे भिक्षा रुख-

सत कर रानी नहीं परम गुरु मारेगा ॥ मु ॥ घर खोदे तेरा ॥ गुरू भूखा है मेरा ॥ नगरी दे उलटाय कूंच कर जागा डेरा॥३८२॥

दोहा सुन्द्राका.

इतनी सुनके सुन्दरा, हो गया बदन सफेद ॥
सतगुरु पूरन भगतका, करदे नगर नपेद ॥

कर दे नगर नपेद बता दे कौन नाथ गुरु तेरा है ॥ इस शहर पनाकी सरहदबिच किस जगह नाथका डेरा है ॥ सिध साध संत जोगी जनके मिलनेका चाव घनेरा है ॥ एक सतगुरु पास सवाल मेरा जिस न्यामतमें दिल मेरा है ॥मु॥ हो मनसा पूरी ॥ टहलकी मिले मंजूरी ॥ चल सतगुरुके पास लाऊंगी हुकुम हजूरी ॥३८३॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-तीन कोसपर नाथके, तंबू लग रहे लाल ॥
बैठी चौंसठ जोगनी, गुरु गोरखके नाल ॥

गुरु गोरखके नाल हाल संग छप्पन लख जादू सजते ॥ मध-गगन सिंहासन सतगुरुके संख रणसिंहे नौबत बजते॥तेतीसों चेले चरनोंमें श्री अलखनाम गोरख भजते ॥ कवि बालकराम नाम सतगुरुका हरगिज नहिं दिलसे तजते ॥ मु ॥ गोरखको रटते ॥ रटत पीछे नहिं हटते॥जो नर धरते ध्यान पाप कायाके कटते ॥३८४॥

दोहा सुन्द्राका.

रानीने पकवानके, भरे हजारों थाल ॥
विप्रोंके शिरपर धरे, चली कुँवरके नाल ॥

चली कुँवरके नाल हाल सन्तोंको झोल जिमाऊंगी ॥ कर सिदक सबूरी तन मनसे संतोंके दर्शन पाऊंगी ॥ बरखातिर अपने मतलबके चरणोंमें शीश नवाऊंगी॥जब सतगुरु आप दयाल होवे

फिर पीछे मुड़कर आऊंगी ॥मु॥ ध्याऊंगी नरको ॥ मांग लाऊंगी वरको ॥ गोरख किरपा करे जबी आऊंगी घरको ॥ ३८५ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०--संग हमारे तूं चली, देखन जोग जमात ॥
मेरे गुरुको हाल मालुम है, जो खून किये दिन रात ॥

जो खून किये दिन रात तैंने दरवेश हजारों मारे हैं ॥ तुझे समझ सजादी दुवा दई तैं तुरत कतल करडारे हैं॥उन्हें सुन रानी भक्तनके जान बन कपटन सीस उतारे हैं ॥ उन्ह महापुरुषोंके मरनेसे तुझपर गुरु खफा हमारे हैं ॥मु॥ मारेंगे रानी ॥ मार खोदें जिंदगानी ॥ सत गुरु पूँछे बात क्याय तू कहगी रानी ॥ ३८६ ॥

दोहा सुन्द्राका.

महाराज आपके कारने, जो जानूं शिर जाय ॥
बेउजर गुरूके सामने, दूंगी शीश झुकाय ॥

दूंगी शीश झुकाय जरा दर गुजर नहीं करती दमका ॥ इस रोजकी खिजां खिजालतमें देखी आदत पलटा हमका ॥ दरपेश मशूकोंके आशिक फिर क्या अफसोस फिकर गमका ॥ तुझ साथ मरनको जाती हूँ नहिं खौप करूं हजरत जमका ॥ मु ॥ उससे नहिं डरती ॥ खौफ जमका नहिं करती ॥ क्या ल्याऊं तुझे साथ मरन तुझ खातर मरती ॥ ३८७ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०--वो जोगी मत समझना, जो तैंने दीने मार ॥
ये जोगी जुगके धनी, रहते बेअखत्यार ॥

रहते बेअखत्यार नाग मृत्यू वैकुण्ठ चशम करते ॥ वे सतगुण रजगुण तमगुणको तीनों गुण एक रसम करते ॥ जल पृथ्वी वायु

आकाश अगन तत्व पांच पचीसों सम करते ॥ मोह काम क्रोध हंकार लोभ तमगुणको मार भसम करते ॥ मु ॥ तू बडी हंकारण॥ खून किये किसके कारण ॥ इसविध गोरखनाथ आये तुझ रिपुको मारण ॥ ३८८ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे जोगी०-इस साढ तिहत्थी देहका, है तुमको अखत्यार॥
नाशुदनी बदवख्तके, आप बचावनहार ॥

आप बचावनहार सनम मुझ भरपुर औगनहारीको ॥ तुम अपने कुलपर ख्याल करो मत देखो सितम गुजारी को ॥ उस वीर विक्रमा गंध्रव कुल खलपर दुख भंजनहारीको ॥ तुम जगरावल जोगी होके क्यों खोते जान हमारीको ॥ मु ॥ क्या लो मरननमें ॥ पड़ी तुम्हरे चरननमें ॥ चाहे मारे चाहे छोड़ आई पूरन शरननमें ॥ ३८९ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-जोगी हतके बाबत, जो पूंछे गोरखनाथ ॥
शीतल सहज स्वभावसे, ऐसी कहनी बात ॥

ऐसी कहनी बात एक दिन काशीसे पंडित आया ॥ गत मुक्त मोक्षका प्रश्न किया उन्ह जोतिष साध लगन लाया ॥ रंधर घर मृत्यु बिचार किया कर किरपा मुखसे फरमाया ॥ गुरु गोरखके चेले मारो हो परमधाम निर्भय काया ॥ मु ॥ यों जोगी मारे ॥ सुनके गुरु आवैं म्हारे ॥ मुक्तधामके काम करें भवसागर पारे॥ ३९० ॥

दोहा सुन्द्राका.

महाराज आपने समझके, अच्छा किया विचार ॥
खूब कही मेरे दिल लगी, सुलतां जिंदगीदार ॥

सुलतां जिंदगीदार मेरी यह अलबत वजह बचानेकी॥क्या बात अकलसे ठाय लई मुझ बिरहिनके बच जानेकी॥ बालेपनमें नारायणने तुझे दे दई अकल जमानेकी॥ हिकमतकी खूब तहरीर बँधी सब कह दी बात ठिकानेकी॥ मु॥ क्या मीठी बतियां॥ ख्वाबमें रहती रतियां॥बात बसी मेरे चित्त पकड गल लालूं छतियां॥३९१॥

दोहा खिलारीका.

नृपति नारि दोनों चले, संग सारे असवार ॥
नौसो साथ मुसाहबा, पलटन चारहजार ॥

पलटन चार हजार चढ़ी बड़ि धूम धामसे उठधाई॥ धरती उठ गरद आकाश गई सूरज नहिं देता दिखलाई॥ फरकत नैसान बजे बाजे चलै तोप गई धरती थरनाई॥ गुरु गोरखके पग पूजनको गढ़ गँजनीसे सुन्द्रा आई॥ मु॥ दल बादल छाये॥ अधिक शृंगार बनाये॥ मुकुट साज सिरताज चमर शिर ढलते आये॥ ३९२॥

दोहा पवननाथका.

भाईजी-पूरन गया था अलखको, सुंद्रादेके पास॥
साबिक कायदे पकडके, देने लगी तिरास॥

देने लगी तिरास पकड़के जान कबज बसमें लाई॥ उस जिंदकदनीकी हालतमें फिर पूरनने चुगली खाई॥ चल जोगी तीन हजार बता दूं क्या हमसे लेगी माई॥ उस रानी सुन्द्राकी हमको मारनको फौजें चढ़ आई॥मु॥ अरया पूरन थारा॥ लया संग काल हमारा॥आगे सुन्द्रा नार पीछे दल लश्कर सारा॥३९३॥

दोहा सुरतनाथका.

सुरतनाथ चढ देखता, सब गुरुभाइयों साथ॥
दल लश्करको देखके, कांपन लगी जमात॥

कांपन लगी जमात गजब है साबित तन पूरन आया ॥ मुख-बरी हमारी कर करके सुन्द्राकी फौज चढ़ा लाया ॥ पलटन कइ लाख नजर आती वह दल बादल लश्कर छाया ॥ तुम्ह बचना हो तौ भाग चलो नहिं सुन्द्रा कतल करे काया ॥ मु ॥ यहांसे चल जाना ॥ करो कोई और ठिकाना ॥ बदल जोगका भेष पहर अलबेस निमाना ॥ ३९४ ॥

दोहा खिलारीका.

कई नर घास पुरालमें, वहीं गए दड मार ॥
कई नर सिर धर ठींकरे, गये शहरसे बहार ॥

गये शहरसे बहार कोई जा निकले बंक उजाडोंमें ॥ कई ओढ गूदड़ा दबक गये कइ ल्हुक गये जंगल झाडोंमें ॥ कई घूरिखोलमें जा बैठे कई छिप गये पोल पहाडोंमें ॥ कइ दर कूवेके लटक गए कइ घुस घुस बढ गए बाडोंमें ॥ मु ॥ भागे घर लौटे ॥ पडे रहे कूंड़ी सोटे ॥ किसीकी रही कौपीन पास रह लँगोटे ॥ ३९५ ॥

दोहा पूरनका.

रानीजी तुमको देखके, सब डर गए फकीर ॥
मारे खौफके चल पडे, होइ जमात बहीर ॥

होइ जमात बहीर उन्होंने हुकुम गुरूका नहिं माना ॥ मैं मौत हवाले भेज दिया तन वदन बीच मारा ताना ॥ इसलिये गुजारिश करता हूँ इरशाद फौजपर फरमाना ॥ कर गिरफतार हाजिर ल्यावो तुम महापुरुषोंको दबकाना ॥मु ॥ फिर खौफ दिखाना ॥ खूब इनको धमकाना ॥ हवालातके बीच पकड़ इन्हको बिठलाना ॥ ३९६ ॥

दोहा सुन्द्रादेका.

सुन्द्रादेने फौजमें, दीना हुकुम पुकार ॥
गिरफतार कर लावना, जोगी हुए फिरार ॥

जोगी हुए फिरार तुम्ही मत मार आप मरके लावो॥ जो जोगी जाय बडे जंगलमें गिरफतार करके लावो॥कोइ आगेसे कुछ उजर करे तुम कठकडपर धरके लावो॥ जो भागनका कुछ कसद करे तुम गलजप्फी भरके लवो॥मु॥ जो चले अकडके॥उसे तुम लावो जकड़के॥ एक मत दीजो जान सभीको लाओ पकड़के॥३९७॥

दोहा नफरोंका.

चार तरफ फौजै फिरीं, लिया चौगिर्दा घेर॥
सब जंगलमें फिर गए, देखन लगे चौफेर॥

देखन लगे चौफेर कुवेसे ऊपर खैंच उछाल लिये॥ जो झाड उजाड बाडमें थे सब गरदन पकड निकाल लिये॥ दर पर्वतमें बेहोश पड़े सब ठा मंजों पर डाल लिये॥ कोई एक जोगीश्वर छोड़ा नहिं गिन तीन हजार सँभाल लिये॥ मु॥ काबूमें कीने॥ आगे कर लीने॥ रानीजीके पास नजर आगे धर दीने॥ ३९८॥

दोहा सुरतनाथका.

हे रानी०-जो हम ऐसा जानते, आव कयामत रोज॥
पूरन होता जमातमें, क्यों चढ आती फौज॥

क्यों चढ़ आती फौज हमी पूरनको भेजके पछिताए॥ फूल माल समझ अहि पकड लिया दादमविसियर गलमें पाए॥ जब बात तनकका दाव लगा विष घोल जिगरमें डंक लाए॥ इस विषका गारुडु नहिं मिलता अब सबके काल शिरपर छाए॥ मु॥ ना बचे बचाये॥ जैसे कुछ करम लखाये॥ जैसे करतब करे आज वैसे फल पाये॥ ३९९॥

दोहा सुन्द्राका.

सुनो जोगी जुगरावलो, अब कहां चले सिधार॥
तुम जाते वनखण्डमें, दीजो सीस उतार॥

दीजो सीस उतार शुक्र है जोगी बेसुम्मार मिले ॥ सब एक उमर एक चाल चलन एक सुरत शकल एकबार मिले ॥ कभी एक मिला कभी दोय मिले कभि तीन मिले कभि चार मिले ॥ परताप भगत सिध पूरनकी यहां कट्ठे तीन हजार मिले ॥ मु ॥ काबूमें आये ॥ बहुत मुद्दतमें पाये ॥ धन पूरन महाराज बहुत जोगी बतलाए ॥ ४०० ॥

दोहा सुरतनाथका.

रानीजी हम मंगते, दरदुनिया दरवेश ॥
पेट भरनके कारने, फिरते देश विदेश ॥

फिरते देश विदेश तेरा हम मारे कारज सरता नहिं ॥ जग बीच बुजुर्गी पाती नहिं कोई निरप अस्तुती करता नहिं ॥ हम जोगी संतत होती नहिं और गंज खजाना भरता नहिं ॥ सलतनत दूसरी मिलती नहिं सिरताज तान कोइ धरता नहिं ॥ मु ॥ ना मिले बड़ाई ॥ नहीं तुझे खौफ खुदाई ॥ नाहक खोती जान आन बनी अजल इलाही ॥ ४०१ ॥

दोहा सुन्द्राका.

नियम नेम अलबत यही, मारूं विना कसूर ॥
जौन शख्स जोगी मिले, करदूं क़तल जरूर ॥

करदूं क़तल जरूर मेरे तुम असबस बहोत कसूरी हो ॥ तुम दग़ाबाज हो जालसाज मुजरम सरकार हजूरी हो ॥ जिंद मरन पूरनको भेज दिया तुम महापापी भरपूरी हो ॥ कर दगा जगेसे भाज गये सब सख्त जिगर मफरूरी हो ॥मु॥ साबत नहिं जाते ॥ फेर ढूंढे नहिं पाते ॥ गुरुभाई मरवाय द्रव्य गोरखका चाहते॥४०२॥

दोहा पवननाथका.

जोगी जिगरसे जानकी, दीनी आस चुकाय ॥
ना उमेद बेवस हुए, कहां जिंदगी लुकाय ॥

कहां जिन्दगी लुकाय फिकरमें रुचता नहिं कुछ अन पानी ॥ हम आप विना आई मर गये मुरदे मत मारो रजरानी ॥ बैखोफ हमें क्यों क़तल करो पूरन पर करी मेहरबानी ॥ कर किरपा पूरन बख्श दिया हमरीभी बखसो जिंदगानी ॥ मु ॥ मत मारो रानी ॥ हमी बेउजर पिरानी ॥ पूरन माफिक समझ सारे जोगीश्वर ज्ञानी ॥ ४०३ ॥

दोहा सुन्द्राका.

क्यों जिद पूरन भगतसे, करते हो तुम लोग ॥
काल कज़ाके सामने, दिया अगाडी झोक ॥

दिया अगाड़ी झोक कहो क्या तुम्हारा इसने लीना ॥ क्या चुगली निंदा करता था कहो क्या मुफलसका धन घीना ॥ क्या गद्दी द्रव्य दबा बैठा इसने कोइ काम बुरा कीना ॥ तुम दाना होकर बालकको किस लिये कालके मुख दीना ॥ मु ॥ क्यों जलगये सारे ॥ भेज दिये पास हमारे ॥ पूरनकी छबि देख आग लग गई तुम्हारे ॥ ४०४ ॥

दोहा पवननाथका.

हे रानीजी-हमरे गुरुने कुँवरको, राजा नजर हजूर ॥
पूरनपर किरपा करी, हमपर नजर करूर ॥

हम पर नजर करूर गुरूने अधिक कमाल कसूर किया ॥ जब सतगुरु सरगरदान हुवे अपना दिल हमसे दूर किया ॥ पूरनपर नजर निहार रहे चन्द सूरजकी सम नूर किया ॥ इस सबब तुम्हारे

पेश किया अलबत ये दगा जरूर किया ॥ मु ॥ गुरु हुआ सदाई ॥ करन लग गये जुदाई ॥ हम देखत जलजाय पूरन लख बँटत बधाई ॥ ४०५ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे जो०-पिता पती गुरु निर्पका, होता वो अखत्यार ॥
उसे तरक्की देत हैं, जो होता कारगुजार ॥

जो होता कार गुजार कुँवरने क्या किसका दिल पाड दिया ॥ अपनी नालायकी समझी नहिं इसने क्या काम बिगाड़ दिया ॥ गुरु गोरख तुमको चाहते नहिं इससे क्या खेत उजाड़ दिया ॥ ज्यों रजकी पर पार बसाती नहिं जा खरका कान उपाड दिया ॥ ॥ मु ॥ अब तुम्हैं सुधारूं ॥ पकड़के शीश उतारूं ॥ नहिं पूरनका दोष पेश्तर तुमको मारूं ॥ ४०६ ॥

दोहा पवननाथका.

रानी तेरी नजरमें, एकमुखी रुद्राक्ष ॥
सो रणसिंगी मुन्दरा, सम कञ्चन भद्राक्ष ॥

सम कञ्चन भद्राक्ष गूदडा और ये कम्मल काला ले ॥ संख रणसिंहा गोरख धंधा ये नाद बजानेवाला ले ॥ डंड कड़ा मुन्दरा मौतंगा ये लख उमरोंकी माला ले ॥ और झोली खप्पर बाघम्बर ये सिंहचरम मृगछाला ले ॥ मु ॥ मत मारो रानी ॥ हमी दरवेश सलानी ॥ किरपा करके बख्श हमारी यह जिन्दगानी ॥ ४०७॥

दोहा सुन्द्राका.

घूंघटमें रानी हँसी, मन्द मन्द मुसकाय ॥
पूरनके चरणों परो, तो ज़िंदगी बच जाय ॥

तो जिन्दगी बच जाय नाथ मत बनो दिवाने अलगरजी ॥ कुल बादशाहके लश्करको एक किश्त मात कर दे फरजी ॥ थारी जालसाजीकी पूरनने जा दई अदालतमें अरजी ॥ वो मुद्दई तुम मुदाला हो आपसमें एक करो मरजी ॥ मु ॥ दो राजीवन्दा ॥ करो आपसमें धंदा ॥ राजी रजा न होय एक नहिं छोडूं जिंदा ॥४०८॥

दोहा सुरतनाथका.

सब जोगी मिलके चले, गये पूरनके पास ॥
हाथ जोड चरणों परे, भाइ हम सब तेरे दास ॥

भाई हम सब तेरे दास कुँवर मरतोंका काल हटा दो तुम ॥ गऊ घेर व्याघ्रने पकड़ लई बन बनियां पिंड छुटा दो तुम ॥ द्विजराज तुरकने घेर लिया वन क्षत्री फंद कटादो तुम ॥ जालिमने जोगी रोक लिये इनका दुख दरद मिटादो तुम ॥ मु ॥ विन आई मारे ॥ जान अखत्यार तुम्हारे ॥ हम सब तेरे गुलाम, आप सरदार हमारे ॥ ४०९ ॥

दोहा पूरनका.

करनी भरनी तुम भरो, करतबकी करतूत ॥
हम तुम जोगी एकसे, एकसरा अवधूत ॥

एकसरा अवधूत गजबसे किस विध तुम्हैं बचालूं मैं ॥ कोइ राजा राव अमीर नहीं अपने दरदेश छिपा लूं मैं ॥ कोइ देव औलिया पीर नहीं धरणीसे पकड़ उठा लूं मैं ॥ कोइ साहूकार धनवान नहीं दे रिशवत बन्द छुटा लूं मैं ॥ मु ॥ नहिं हुकुम हमारा ॥ हुकुम आगे नहिं चारा ॥ हँस हँस दे दो जान बहुत दिन किया गुजारा ॥ ४१० ॥

दोहा खिलारीका.

इतनी सुन जोगी डरे, रहा नहीं तन जोश ॥
खा गिरनी धरनी गिरे, हो गये होश बेहोश ॥

हो गये होश बेहोश वदनसे सुध बुध सब विसराय दई ॥ जिंदगीसे ना उम्मेद रही जीवनकी आस चुकाय दई ॥ मिच दन्द किड़ी मुँह बन्द हुआ हर जवांकी गील सुखाय दई ॥ सब हाथ जानसे धो बैठे सिर रब ये मौत झुकाय दई ॥ मु ॥ अँखिया पथराई ॥ कजा शिर ऊपर छाई ॥ गिन गिन लेते सांस सकल सुध बुध विसराई ॥ ४११ ॥

दोहा पूरनका.

गुरुभाइयो क्यों मर गये, क्यों छुट गये पिरान ॥
मैं सुन्द्राने वस किया, तुम क्यों खोते जान ॥

तुम क्यों खोते जान तुम्हें ऐसा दुख दरद कमाल नहीं ॥ चक चान अचानक मरते हो कुछ तनकी होस सँभाल नहीं ॥ तुम अपने मनमें सोच लिया कुछ पूरनका अकबाल नहीं ॥ क्या ताकत तुमपर चोट करे किसी फारिश्तेकी मंजाल नहीं ॥ मु॥ जो मारे कटारी ॥ रानी तो कौन बिचारी ॥ पूरनके रूबकार बादशाह दे जा गारी ॥ ४१२ ॥

दोहा सुरतनाथका.

दिया दिलासा कुँवरने, सब उठ खडे फकीर ॥
पूरनके परतापसे, बढ गया खून शरीर ॥

बढ़ गया खून शरीर भाइ ये कैसी खिलकत नाल लिये ॥ ये किसका लश्कर आता है जर सीम जडाऊ थाल लिये ॥ कितने कुछ भरे जवाहरोंसे कितनेमें मोती लाल लिये॥कुछ म्हारी नजरमें

आता है जाते हैं नजर भूपाल लिये ॥ मु ॥ बतलाना भाई ॥ देख दिल हुवा सुदाई ॥ पूरन तेरे साथ फौज कैसी चढि आई ॥४१३॥

दोहा पूरनका.

हे जो०-जो मरजी फरकैनकी, होवे मुफस्सल जैल ॥
बमुजब फरमाने जैलके, करी नगरकी सैल ॥

करी नगरकी सैल जाय घरदरमें अलख जगाई है ॥ सब कूचे गली बज़ार फिरा सुन्द्रा घर सुता उठाई है ॥ दुलहनके करनमें भनक पड़ी भरथार जवाहर ल्याई है ॥ सब मांगी भीख हमारी है संग सृष्ट उठा ले आई है ॥ मु ॥ तुम खावो भाई ॥ भीख सब मांगी आई ॥ साढे तीन हजार जीमें दो वक्त मिठाई ॥ ४१४ ॥

दोहा सुरतनाथका.

धन गोरखके लाडले, म्हारी मंडलीके सरदार ॥
क्या डर जोगी बन गया, आखिर राजकुमार ॥

आखिर राजकुमार जबर क़िस्मत बड़भागी ज़रखाने ॥ पग लगी लक्ष्मी फिरती है जहँ जावे खुल जायँ खजाने ॥ हम दिन-भर अलख जगाते हैं कहिं मिलते नहिं पाप्या दाने ॥ कई वरष घूमते फिरते हैं कभि मनभर चणे नहीं आने ॥ मु ॥ ये सत पकवानी ॥ भीख लाखों मन आनी ॥ भर कञ्चनके थाल संग आई कोई रानी ॥ ४१५ ॥

दोहा पूरनका.

हे जो०-ये भिक्षा सरकारकी, आवेगी दिन रात ॥
मोहनादेकी वरषभर, जीमो जोग जमात ॥

जीमो जोग जमात वर्षभर इहां सबका अन पानी है ॥ दिन-सात भँडारा सुन्द्राका फिर मोहनाकी जग खानी है ॥ जिस पास

कपटकर भेज दिया देखो वही सुन्द्रा रानी है ॥ गुरुभाइयोंके दिखलानेको मैं सुन्द्रादे संग आनी है॥मु॥संग चलके आई ॥ साथ ले पान मिठाई॥गुरु गोरखकी शरण चरन चित्तसे लौ लाई ॥४१६॥

दोहा पवननाथका.

हे पू०-सुन्द्रा सूरत सुरजसी, सुन्दर सकल अनूप ॥
चमक किरन महताबकी, आफताब सम रूप ॥

आफताब सम रूप सदा गल तान हुस्न मगरूरीमें ॥ मुसकभर अतर फुलेल लौंग लाचियाँ मुश्क काफूरीमें ॥ सलताज चँबेली गुलखेरा गुलदम केशर कस्तूरीमें ॥ गुलनरगस कमल गुलाब केवडा मध साविक दस्तूरीमें ॥मु॥ जोबन मदमाती ॥ बाहर घरसे नहिं जाती ॥ जोगीको दे मार आप नहिं सुरत दिखाती ॥ ४१७ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-पट घूंघट चट खोल दे, दे अपना दीदार ॥
संतोंके दरशन करो, हो भवसागर पार ॥

हो भवसागर पार कपटका दिलसे परदा दूर करो ॥ रंग रूप हुस्न छबि सुंदरका मत मन चन्दर मगरूर करो ॥ सिध साध सत जोगी जनके दरशन साबक दस्तूर करो॥बरखातिर अपनी मुक्तीके गोरखका रटन ज़रूर करो ॥ मु ॥ फिर कुछ नहिं डर है ॥ बात इसमें बेहतर है ॥ मिल जागा वैकुंठ जहां मुक्तीका घर है ॥४१८॥

दोहा सुन्द्राका.

सुन्द्रा साल्लू सीससे, सहज सहज सरकाय ॥
बादलसे शशि सुरजकी, किरन निकसके आय ॥

किरन निकसके आय चमक चश्मोंकी चोट चलाती है ॥ दरनाक बुलाक पडी मछली लटकनकी छबि दिखलाती है ॥

जैसी पुतली साह सिकन्दरकी खडी जलमें हाथ हिलाती है ॥ कह बालकराम समझ शायर यह पुतली क्या बतलाती है ॥ मु ॥ ना पास बुलाती ॥ सैन दे परे हटाती ॥ जो जावेगा डूब दूर नहिं पार बसाती ॥ ४१९ ॥

दोहा खिलारीका.

हुसन चमकता देखके, चढ आये मद कास ॥
विरह अगनकी लगनसे, हो गये काम खलास ॥

हो गये काम खलास चश्म जादूकी दिलको छीन गई ॥ दिलवरकी भवंगी भौंहसे फसती तुरत जिगरको बीन गई ॥ आशिकपर चोट मशूकोंकी क़तल साफ संगीन गई॥बलि कामदेवकी सोहबतमें कुल सबकी बिगड कोपीन गई ॥मु॥ हो गई देह नंगी॥चकोर चन्दाके संगी॥निशि दीपकके साथ जले सिर मार पतंगी॥४२०॥

दोहा पूरनका.

गुरुभाइयोंको देखके, पूरन आया दौड ॥
मारे तमाचे गालपर, दीने कान मरोड ॥

दीने कान मरोड सबनको मुख भरके दीनी गारी ॥ टांगोंसे पकड घसीट लिये दो दो लातें सबके मारी ॥ तुम किस कारन अवधूत बने जब क्यों नहिं होगये घरबारी ॥ ये सुद्रादे जगमाता है क्यों नीत बिगड गई तुम्हारी ॥ मु ॥ खोते जिंदगानी ॥ गरक होते विन पानी ॥ जगमाता दातार नार सुन्द्रादे रानी ॥ ४२१ ॥

दोहा सुरतनाथका.

हे पूर०–तन मन तुम्हरा कुँवरजी, शब्दज्ञानकाकोट ॥
परदाराके इश्ककी, कहीं लगी नहिं चोट ॥

कहीं लगी नहिं चोट जिगरमें चाहे औरत हरबार फिरे ॥

इश्त्याक बदनमें होता नहिं चाहे संग कामन लख चार फिरे ॥ कहीं अनी इश्ककी खुवती नहिं चाहे सेंत सेंत तलवार फिरे ॥ अलमस्त हुशनपर होता नहिं चाहे सुन्दर नार हजार फिरे ॥ मु ॥ धन पूरन प्यारे ॥ बालपन जती कुँमारे ॥ एक सुन्द्राको देख बिगड गये होस हमारे ॥ ४२२ ॥

दोहा पूरनका.

कर भिक्षा पूरन चले, रानीको ले साथ ॥
सतगुरु गोरखनाथके, चरनों गेरा हाथ ॥

चरनों गेरा हाथ नाथको करि आदेश पेश आके ॥ अपना पी देख खुशी होता नौ नाथोंके दरशन पाके ॥ रिध कामधेनुसी काढ़ दई भर पत्र धरा आगे जाके ॥ गुरुभाइयोंको परनाम करी दो चार कदम आगे ठाके ॥ मु ॥ सतगुरु मैं आया ॥ मांगके भिक्षा लाया ॥ सतगुरु दीजो हुकुम नगरमें अलख जगाया ॥ ४२३॥

दोहा गोरखनाथका.

देख कुँवरको खुश हुवे, गोरखनाथ फकीर ॥
गलसे ला खिलखिल हँसे, हो गया शरद शरीर ॥

होगया शरद शरीर शकलपर अपना तन मन वारत हैं ॥ खुद गोरख जान नसारत हैं तबभी धरती नुचकारत हैं ॥ ला गलसे नहीं बिसारत हैं तन झाडे खाख उतारत हैं ॥ मुख चूम सीस पुचकारत हैं अज जश्मों नजर निहारत हैं ॥मु॥ डारत हैं पानी॥ सुनो बेटा एक बानी ॥ जौन तुम्हारे संग कौन राजाकी रानी ॥ ४२४ ॥

दोहा पूरनका.

हे गुरु०—गढ गजनीकी नाजनी, करे चीनका राज ॥
रूम सामके मुल्ककी, सुलतानोंकी ताज ॥

सुलतानोंकी ताज सुन्दरा नाम बादशाहजादी है ॥ सलतनत हजारों कोसोंमें रैयतकी बहुत अबादी है ॥ सिध साध सन्तकी कदर नहीं पुर जफा जुलमकी गादी है ॥ यह जुलम जफा बख्शानेको तुम पास आन फिरयादी है ॥ मु ॥ इस कारन आई ॥ संग ले पान मिठाई ॥ हुई दरश लौलीन खबर अब तुम्हरी पाई ॥ ४२५ ॥

दोहा गोरखनाथका.

कहो रानी किस कारने, आई हमरे पास ॥
वह मकसद हमसे कहो, क्या तेरी दरखास ॥

क्या तेरी दरखास बता किस काज यहां आ खड़ी हुई ॥ क्यों फिरे अकेली जंगलमें नग लाल जवाहरों जड़ी हुई ॥ कंठमाला हार दुकर्दा दुलड़ी तिलड़ी गलमें पड़ी हुई ॥ कहो बात तुम्हारा क्या मतलब क्यों खड़ी शीशपर चढ़ीहुई ॥ मु ॥ हमको बतलाना ॥ किधरसे हो गया आना ॥ वो मकसद बतलाय झपट घर अपने जाना ॥ ४२६ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हाथ जोड सुन्द्रा कहै, होकर निपट अधीन ॥
बहु मुद्दतसे नाथके, दरशनकी लवलीन ॥

दरशनकी लवलीन चरनमें आई ध्यान लगानेको ॥ ले पान फूल फल पूंगर मैं सतगुरुकी भेट चढानेको ॥ कुछ मिस्सी कुस्सी परसादी मैं लाई भेषके खानेको ॥ इस जङ्गलमें इस विध फिरती सतगुरुके दरशन पानेको ॥ मु ॥ किरपा कर दीजो ॥ भेट अपनी ले लीजो ॥ सब जोगी परसाद रानी सुन्द्राका कीजो ॥ ४२७ ॥

दोहा गोरखनाथका.

रानी०-तेरी हम लोगोंसे दुश्मनी, मारे नाथ हजार ॥
किस मतलब सादत बनी, इसका कौन बिचार ॥

इसका कौन विचार हालकर कैसी बात सतूल करे ॥ मुफसिद हो मिले गनीमोंसे क्या हासिल जमा वसूल करे ॥ क्यों शिरपर बोझ ठहरातीहै नाहक क्यों फरज फजूल करे ॥ इस जफा जुलमकी ज्याफतको कोइ जोगी नहीं कबूल करे ॥मु॥ घर जावो रानी॥तेरा पीते नहिं पानी ॥ जुलम जफाका दूध रक्त मुरदार नशानी॥४२८॥

दोहा सुन्द्राका.

गुरु०-अलबत फक्र फकीरको, देती कतल कराय ॥
करामातके कारने, कोइ मिले जोगीश्वर आय ॥

कोइ मिले जोगीश्वर आय मुझे कुछ चमत्कार दिखलावेंगे ॥ सुनकर गुरु गोरख आवेंगे भूलीको राह बतावेंगे ॥ कुछ टहल मुझे फरमावेंगे किरपा कर भोजन पावेंगे ॥ जुलमोंसे बख्श बचावेंगे कर मुक्ती पार लखावेंगे ॥ मु ॥ लाना मत देरी ॥ खडी खिदमतमां तेरी ॥ भोजन करौ कबूल यही मनशा है मेरी ॥ ४२९ ॥

दोहा गोरखनाथका.

रानी०-जो तेरी यह आरजू, हाजिर हो सो लाव ॥
जो तेरे हरने दिया, म्हारे मुखमें पाव ॥

म्हारे मुखमें पाव बचा जो यथा शक्ति है तुम्हारी ॥ जो तेरे मनकी यह इच्छा कर उदर पूरना हम्मारी ॥ सिध साध सन्तकी खातिरमां जो सरधा रसत करो जारी॥ मकदूर अलखने दिया तुझे इससे क्या बेहतर कर त्यारी॥ मु ॥ जो इच्छा मनकी ॥ मुक्त होती है तनकी ॥ धरम सुखनके काज प्रीत ना करनी धनकी ॥४३०॥

दोहा सुन्द्राका.

हजार किसमकी शीरनी, लाख चीज नमकीन ॥
सर्व चीज सिखरन दही, और मेवा रसभीन ॥

और मेवा रसभीन रानीने रचा भेषका भण्डारा॥ गढ गजनीसे ला जंगल तक अन भोजनका लग गया लारा॥ नौ नाथ चौरासी सिद्ध साध सब करते हैं जैजैकारा॥ गुरु गोरखनाथ दया करके अब करौ नादका ओंकारा॥ मु॥ मैं अर्ज लगाई॥ सिदकसे भोजन लाई॥ सतगुरु कर परसाद सुफल हो मेरी कमाई॥४३१॥

दोहा गोरखनाथका.

गुरु गोरख जीमन लगे, किया नाद ओंकार॥
चेलोंको आज्ञा हुई, अटाटूट भण्डार॥

अटाटूट भण्डार नाथने निश्चय कर भोजन पाया॥ खा न्यामत बहुत अनन्द हुए हुई पूरन ब्रह्म तृप्त काया॥ फिर रानीपर प्रसन्न हुए कर नजर इनायत फरमाया॥ अब हम तूठे तू मांग बचा जो अब कुछ तेरे पसन्द आया॥ मु॥ हम देंगे रानी॥ कहे जोगी निरवानी॥ करते नहीं हराम तेरा खाके अन पानी॥ ४३२॥

दोहा सुन्द्राका.

गुरुजी-जो मांगूं दोगे नहीं, नाहक करूं सबाल॥
जो मुझपर किरपा करो, दीजो वचन निकाल॥

दीजो वचन निकाल हाल जो खातिर मेरी मंजूर होवे॥ कुल तीन बार मुख बचन करो जो सन्तनका दस्तूर होवे॥ अब वचन बाद कुछ मांगूंगी जो दिलका फरज जरूर होवे॥ तुम अपनी जबां मुबारकसे दो वचन हमें मंजूर होवे॥ मु॥ ये बात हमारी॥ आपसे अर्ज गुजारी॥ दीजो कौल करार मेरे पर दया तुम्हारी॥ ४३३॥

दोहा गोरखनाथका.

सुन्द्रादेको नाथने, दीना कौल करार॥
दस्त पकडकर दस्त पर, तीन वचन दिये मार॥

तीन वचन दिये मार नार तू कौन चीज हमसे चाहती ॥ इस वक्त जवांसे जिकर करो नहिं स्यात समय निकली जाती ॥ कर याद घडी पछतावेगी गइ स्यात हाथ फिर नहिं आती ॥ तेरी टहल सुफल मंजूर हुई तू गुरु सेवाका फल पाती ॥ मु ॥ हो मुक्ती तनकी ॥ बात कहो अपने मनकी ॥ दूध पूत परिवार तुझे क्या चाहना धनकी ॥ ४३४ ॥

दोहा सुन्द्राका.

हे गुरु०-धन दौलत सलतनतकी, नहीं मुझे दरखास ॥
जिस बरकी मुझे आस है, वह वर तुम्हरे पास ॥

वह वर तुम्हारे पास आस जो मेरी पूरी करनी चाहो ॥ गुरु तुम दाता मैं मँगती हूँ मुझे खैर खरायत दिलवावो ॥ मैं आजिज अर्ज करौं तुमसे मेरे बेड़ेको बन्ने लावो ॥ दरबार खडी भिक्षा मांगू मेरे पल्लेमें पूरन पावो ॥ मु ॥ ला गले निहारूं ॥ राज लडकेपर वारूं ॥ पूरन पर कुरबान जान अपनी कर डारूं ॥ ४३५ ॥

दोहा गोरखनाथका.

जा लंडीकी छल लिया, मेरे ले गई काढ पिरान ॥
पूरन बारह पन्थकी, षटदरशनकी जान ॥

षटदरशनकी जान जिगर जिसमें हित प्रेम हमारा था ॥ नौ नाथ चौरासी सिद्धोंका एक अखतर चन्द सितारा था ॥ जर जिंदगी और कलेजेकी पुतली दरचश्म सितारा था ॥ गुरु गोरखको सब चेलोंसे ये सुन्दर अधिक पियारा था ॥ मु ॥ ना लाड लडाया ॥ वचन देके पछताया ॥ पूरनको ले गोद गुरू आंसू भर आया ॥ ४३६ ॥

दोहा सुन्द्राका.

रानीने गुरु सामने, पल्ला दिया पसार ॥
तुम दाता मैं मंगती, पूरन भिक्षा डार ॥

पूरन भिक्षा डार गुरू तुम देनहार कुलतारन हो ॥ तुमही गुरु युग विस्तारन हो तुमही तिथि वेद विचारन हो ॥ तुमही दुख कष्ट उभारन हो तुमही विध विपत विसारन हो ॥ तुमही बँद फंदन मारन हो तुमही गुरु विपतनिवारन हो ॥मु॥ पाडो तुम पूरी ॥ दीजियो हुकम हजूरी ॥ किरपा करके बख्श वचन तीनों दस्तूरी ॥४३७॥

दोहा गोरखनाथका.

ले रानी मेरे लालको, महलबीच ले जाय ॥
चन्द्र सुरजसी किरनका, लीजो दिल परचाय ॥

लीजो दिल परचाय कुँवरकी नित रखना खातिरदारी ॥ जा पूरन तुझको बख्श दिया मुझे हुई वचनकी लाचारी ॥ इस रानीके संग जा बेटा कर गढ़ गजनीकी सरदारी॥मैं हुकुम दिया मत उजर करै मेरी जबां उलट गई हत्यारी ॥मु॥ रानी संग जावो॥मेरे मत वचन हटावो॥करो चीनका राज आज अपना सुख पावो॥४३८॥

दोहा पूरनका.

गुरुजी-बेउजर आपके हुकुमसे,अलबत करौं तमील॥
विपता मेरे नसीबकी, लगी सारकी कील ॥

लगी सारकी कील गुरू तुमनेभी दिलसे तार दिया ॥ इस ब्रह्मजोतके उजियालेसे अंधे घोरमें डाल दिया ॥ सरजीवन किया ससकतेको मैं फिर जीतेको मार दिया ॥ पूरनकी किस्मत फूट गई सतगुरुने आज विसार दिया ॥मु॥ मुख व्याकुल होया॥ कलप तन अपना खोया ॥ सुन पूरनकी बात गुरू गोरखभी रोया ॥४३९॥

दोहा सुन्द्राका.

अब पूरनको ले चली, मिरगानयनी नार ॥
सिकरमें बिठलायके, दिया अश्व पुचकार ॥

दिया अश्व पुचकार तुरंगके बदन बीच चाबुक लाई ॥ पूरनको पकड़ खुशी होती हँस हँसके गलजफ्फी पाई ॥ कर दीदम ईद मनाती काहूका गूंज उठा लाई ॥ मुझ विरहिनको हासिल होय गई अकलीम हफ्तकी भारि आई ॥ मु ॥ कर मुहबत फूली ॥ हौसमें सुध बुध भूली ॥ इश्क इश्त्याक मस्त मदरा में टूली ॥ ४४० ॥

दोहा पूरनका-

जिसी वक्त सिकरम गई, शहरपनाहके पास ॥
पूरन नीचे उतरकर, रुल गये बीच किलास ॥

रुल गये बीच किलास कुँवर आगेसे अन्तरध्यान हुये॥ जा दूर नूर दिखलाते हैं रानीसे अदल पछान हुये ॥ हुआ बाल भभूका जौ उडकर मिलजुलकर हवा समान हुये ॥ कह बालकराम रमे रावल रानीके मुक्त पिरान हुये ॥ मु ॥ चल पूरन प्यारे ॥ रानीके डरके मारे ॥ मोह ममताको त्याग कुँवर वनखण्ड सिधारे ॥ ४४१ ॥

दोहा सुन्दराका.

अटारीपर प्यारी खडी, सरली दई पुकार ॥
पूरन मुख दिखलायदे, मतना मुझको मार ॥

मतना मुझको मार कुँवर तुम मुझ जीतीको मार गये ॥ तुम आप गये मुझको दुख दे गये तन मन आतिश डार गये ॥ मैं अब जीके क्या कर लूंगी जब पूरन मुझे विसार गये ॥ कर क्रोध महलसे कूद पड़ी झट भँवरा स्वग सिधार गये ॥ मु ॥ लद गया बनजारा ॥ कोई नहिं थम्भनहारा ॥ पूरनकी गम खाय बदन खो दीना सारा ॥ ४४२ ॥

दोहा पूरनका.

जा जङ्गल वनखण्डमें, रहे कुँवर दिन तीन ॥
एक चरन धरनन हुवे, अलख नाम लवलीन ॥

अलख नाम लवलीन अधर धुन ध्यान धरत अनहद धुनमें ॥ वो निरजल अधरम निरधारन जगतारन घन रटते मनमें ॥ सत-नाम निरञ्जन भवभञ्जन नन्दन जग बन्दन धन तनमें ॥ कर आरम वेद जोगारमके कथ पाँच शब्द गाते मनमें ॥ मु ॥ चौथे दिन ध्याये ॥ गुरू गोरखपै आये ॥ झुकके करि आदेश नाथके दरशन पाये ॥ ४४३ ॥

दोहा गोरखनाथका.

नाथ कुँवरको देखके, मगन हुए मनमांह ॥
गलसे लाके पूंछते, रे बेटा तू कांह ॥

रे बेटा तू कांह पुत्र तुझे राजतखतपर बिठलाया ॥ गढ़ गजनी-का सुलतान किया तूँ सुन्द्राके पल्ले पाया ॥ दमदमकी नार नदीदी थी तू उसको छोड़ किधर आया ॥ तुझे ऐश और अशराज दिया अन धन दौलत हशमत माया ॥ मु ॥ रहके नहिं खाया ॥ राज क्यूं नहीं कमाया ॥ क्या डरथारे फकीर आखर राजाका जाया ॥४४४॥

दोहा पूरनका.

हे गुरु०-तामील करनको हुक्मकी, गया नारके संग ॥
उस सुन्द्राने पकडके, बहुत किया हूं तंग ॥

बहुत किया हूं तंग गुरु मेरे गले बीच जप्फी गेरी ॥ संयोग भोगके करनेकी मुझे देती थी उलटी फेरी ॥ तन वस्तर तार नगन होके मेरी जत सतकी काया मेरी ॥ मैं बनके जती संयोग करूं हो भस्म जान जाती मेरी ॥ मु ॥ इसविध चल आया ॥ जग-तमें जती कहाया ॥ जो करता संयोग भस्म हो जाती काया॥४४५॥

दोहा गोरखनाथका.

हे पूरन-तेरे कारन सुन्दरा, रानी कर गइ काल ॥
जा तूं अपने वतनको, जम्बूगढरो साल ॥

जम्बूगढ़रो साल पुत्र अब माताको मिलना चाहिए॥ दो मात पिता चाहे कैसे हो भगवान समझ दरशन पाइए ॥ जा औगुन पर कर गुन बच्चा नूनाको सिरदा नैवाइए॥ उस तुहमत बुरी फसादीकी तू सभी फसाई कर आइए ॥ मु ॥ अब घरको जाइए ॥ बागमें बिस्तर लाइए॥झुकके शीश नवाय कुँवर तू सुघर कहाइए॥४४६॥

दोहा पूरनका.

पूरण माफिक हुकुमके, सालकोटको जाय ॥
खुश्फ़ गुलिस्तां बीचमें, दीने आसन लाय ॥

दीने आसन लाय गैबसे हुई बोस्तां हरियाली ॥ गुल शाख कली फल मेवेकी झुक ज़िमी साथ लटकी डाली ॥ वन मोर पवैये भँवरा फिरे वनवनकी कोयल है काली ॥ कह बालकराम शजर गुंचा वो चमन देख डर गया माली ॥ मु ॥ जा अलख जगाया ॥ बागमें बिस्तर लाया ॥ चमन हुआ गुलजार अरससे पानी आया ॥ ४४७ ॥

दोहा मालीका.

रोंस रोंस माली फिरै, देखे बाग बहार ॥
धन साहब तरी साहबी, चमन हुआ गुलजार ॥

चमन हुआ गुलजार पलमें धन कुदरत तेरी माया॥बिन सींचे सरवर ताल कुआ बिन बादल जल कहांसे आया ॥ हर तरफ चौगिरदे फिरै देखता लाख शजर गुलशन छाया ॥ जा देखा बीच जखीरेके एक गुलशनमें जोगी पाया॥मु॥जा शीश नवाया ॥ पान फल मेवा लाया॥माली हुआ आनन्द देख खुबसूरत काया॥४४८॥

दोहा पूरनका.

चल बाबा ह्यांक्यों खडा, जा कर अपना कार॥
तेरे पान फल फूलकी, हमैं नहीं दरकार ॥

हमें नहीं दरकार अपने मत कहो बिरादर वीरोंसे ॥ कोइ मिल जा मुनशी अहलकार करना नहिं जिकर वजीरोंसे ॥ जिस कदर तमाशा देख चला नहिं कहनी बात अमीरोंसे ॥ अब जा माली घर जा अपने तेरा ह्यां क्या काम फकीरोंसे ॥ मु ॥ घर जावो माली ॥ हमी मुफलिस हैं खाली ॥ जिससे मिले इनाम वहां पहुंचाना डाली ॥ ४४९ ॥

दोहा मालीका.

डाली ले माली चला, गया बीच दरबार ॥
शंखराजाके पासमें, झुकके करी जुहार ॥

झुकके करी जुहार दिगर तुम राजाकी डाली लीजो ॥ एक बात सगुनकी कहता हूं तुम बहुत अशरफी पुन कीजो ॥ यह डाली मस्तक नुचकारो कुछ मालीको न्यामत दीजो ॥ पोशाक मिले मुझे आजिजको फिर सगुन दस्तां सुन लीजो ॥ मु ॥ ये अर्ज हमारी ॥ होवे दिललगी तुम्हारी ॥ तुम्हें मुबारिक बाग होवे गुजरान हमारी ॥ ४५० ॥

दोहा राजाका.

माली कैसी मुबारिकी, दई खुशीसे आन ॥
हाल मुफस्सिल खोलके, हमसे करो बयान ॥

हमसे करो बयान जान तैं कैसी आन पुकार करी ॥ क्या लई अनूठी गुंचेमें कोइ तोफा चीज तयार करी ॥ क्या गिरफतार कर इश्तहारी पर शस्तरकी भरमार करी ॥ क्या दबा खजाना देखा तैं खुशखबरी आन पुकार करी ॥मु॥ सच कहना माली॥कौन गुलशनकी डाली ॥ हमसे करो बयान तुझे रखता नहिं खाली ॥४५१॥

दोहा मालीका.

हे राजा०-तेरा बाग नौलखा खुश्कथा, सूखगईथी डाल॥
आज हरा हरने किया, चमन हुवा गुल जार ॥
चमन हुआ गुलजार बहार गुंचेमां जरद अनार खिले॥फल फूल फुले फुलवारीमें क्यारीमें हार सिंगार खिले॥ मेवा एक सख्त गुलिस्तोंमें सरवोंके सजर हजार खिले ॥ ला लौंग इलाची केशरके गुल लक्खों बेशुम्मार खिले ॥ मु ॥ कई फूल हजार ॥ रौंसपर छुटे फुआरे ॥ कोयल कूके मोर शोरदें भँवर गुंजारें ॥ ४९२ ॥

दोहा राजाका.

हे माली रे-क्या हो गया तू बावला, क्या मध पीलई ढेर॥
क्या खा गया भंग भूगरा, क्या गांजेकी टेर ॥
क्या गांजेकी टेर नशेमें गाफल हो गया खफगाना ॥ क्या परनारीके जुलफोंमें तू हुवा इश्कमें दीवाना ॥ मैं तौ जानूं था मालीको कोइ मिला गैबसे खैजाना ॥ कहिं सूखे बाग हरे नहिं देखे झूठ सगुन हमको जाना ॥ मु ॥ गफलतमें सोता ॥ इमान अपना क्यूं खोता ॥ जो नर कर जा काल फेर जिंदा नहिं होता ॥४९३॥

दोहा मालीका.

हे राजा०-तेरे बाग नौलखे बीचमें, एक जोगी उतरा आन॥ उस जोगीकी सज रही, थारे पूरनकैसी शान॥
थारे पूरन कैसी शान हुसन रंग रूप अधिक उसपर भारी ॥ मानिन्द सुरजकी हुई रोशनी चार तरफ किरना जारी ॥ जिस वक्त नाथ तशरीफ लाये सब वनवनकी फूली डाली ॥ क्या आडू आंब अन्नार सेव क्या रौस शजर गुंचे जारी ॥ मु ॥ जिसमें सिंधवाला ॥ आया जोगी मतवाला ॥ बैठ औसतां बीच किया जंगल हरियाला ॥ ४९४ ॥

दोहा राजाका.

नाम सुना जब कुँवरका, राजा मन हुआ वियोग ॥
शिकम शूल सागर चढा, बढा पुत्रका सोग ॥

बढ़ा पुत्रका सोग रोग नृपके मन शोक हुवा भारी ॥ गमगीर बहुत दिलगीर पीर मुहबतकी पीर जिगर जारी ॥ भर सीना सर ढरा उझल उझल जल उमँग चश्म टपकत न्यारी ॥ भर सिसकारा जलता मारा नृप रोवत शिर मट्टी डारी ॥ मु ॥ कलपत छब जानी ॥ भई जब बात पुरानी ॥ श्रीनारायण करे मरे नूनादे रानी ॥ ४६८ ॥

दोहा खिलारीका.

वारदात तूफानके, दिन ज्यों ज्यों होय व्यतीत ॥
त्यों त्यों नित घटती रही, नूनादेसे प्रीत ॥

नूनादेसे प्रीत रीत जालम नर बुरी बुरी सहता ॥ कोइ कह मैं सदा सोहागन हूँ किसी वक्त उतर जलमें बहता ॥ कोइ कहता मैं बड़भागी हूँ कुल खिलाफ बचन मुखसे कहता ॥ कह बालकराम समझ नुक्ता तन धन यौवन थिर नहिं रहता ॥ मु ॥ सपनेकी नाईं ॥ सदा सुख रहता नाहीं ॥ ज्यों ज्यों उमर व्यतीत कुँवर बसता मनमाहीं ॥ ४६९ ॥

दोहा राजाका.

मंत्रीसे कहे नरपती, सुन ले हुकुम हजूर ॥
लावो मेरे दीवानको, हमको काम जरूर ॥

हमको काम जरूर मन्तरी दिलका महरमकार मेरा ॥ जिस रोज सभासे निकलगया उस दिनसे जिगर बेजार मेरा ॥ जिस वक्त कचहरी करताथा रखता था दिल हरबार मेरा ॥ एक रूपे

शाह दिवान विना अस बस सूना दरबार मेरा ॥ मु ॥ जलदीसे जावो ॥ साथ मन्त्रीको लावो ॥ मेरी कहना राम जल्द वापिस घर आवो ॥ ४९७ ॥

दोहा संत्रीका.

संत्री मंत्रीपे गया, समझाया इरशाद ॥
आज कचहरी बीचमें, करे नरपती याद ॥

करे नरपती याद शायद कुछ नजर इनायत पूरी है ॥ तेरी साबिक काररवाईको कर याद खास मंजूरी है ॥ तारीफ तुमारी करतेथे इस कारन हुकुम हजूरी है ॥ परवश लुत्फ फरमावेंगे कुछ और भी काम जरूरी है ॥ मु ॥ सुन मन्त्री प्यारे ॥ चलो तुम साथ हमारे ॥ जो पिछला सब काम होवे सापुर्द तुम्हारे ॥४९८॥

दोहा मंत्रीका.

सुन मन्त्री सुलतानके, मेरा हाल हवाल ॥
सात पुश्तकी वजीरत, गई कुँवरके नाल ॥

गई कुँवरके नाल हाल अपना मन मारे बैठे हैं ॥ जिस साल कुँवर इन्तकाल हुवे सब आप उतारे बैठे हैं ॥ बेकूफ समझ दो गाल दई कइ वर्ष बिसारे बैठे हैं ॥ दंड तीन लाख दाखल करके अब बेरुजगारे बैठेहैं ॥ मु ॥ क्या काम हमारा ॥ पकड़ अब लिया कनारा ॥ बेरुजगार लचार करूं घर बीच गुजारा ॥ ४९९ ॥

दोहा संत्रीका.

हे मंत्री०-कोइ नर सुखिया है नहीं, सब दुखिया संसार ॥
सुख दुख असर औसता, सब ग्रहोंके अनुसार ॥

सब ग्रहोंके अनुसार ग्रहोंने रावणकी खो दई जुगत्ती ॥ सिया राम लक्ष्मण नल राजाने बारह वर्ष विपत भुगती ॥ घर नीच

हरीचन्द नीर भरा सिया कन्द मूल वनमें चुगती ॥ महाराज परीक्षित गंगापर फणि तक्षकसे पा गये मुकती ॥ मु ॥ जिसपर ग्रह आया ॥ ग्रहोंने पूरन खाया ॥ मन्त्री समझ विचार चलो नृपने बुलवाया ॥ ४६० ॥

दोहा वजीरका.

सन्त्री सँग मंत्री चला, उज्जल बदल लिबास ॥
जा पहुँचे दरबारमें, गये निरपके पास ॥

गये निरपके पास नज़र कर तसलीमात खडे दोनों ॥ ला सीना रुदन विलाप किया किसी वस्तू बीच पडे दोनों ॥ कर विपत याद टपकत नयना दिल भटकत तख्त चढे दोनों ॥ कह बालकराम निरप मन्त्री खा गिरनी धरन पडे दोनों ॥ मु ॥ दिल हुवा वैरागी ॥ उठे दोनों बड़भागी ॥ करैं उपर दिल बात सुरत पूरनमें लागी ॥ ४६१ ॥

दोहा राजाका.

कहो मंत्रीजी कहां रहे, निकले नहिं घरसे बहार ॥
बारा वर्ष बीतत भये, दीना नहिं दीदार ॥

दीना नहिं दीदार मन्तरी कहो इतने दिन कहां लाये ॥ दरबार बजार गली कूचेमें कभी नहीं फेरे पाये ॥ खत पत्र तहरीरी खुश-गीरी वादस्त नफर नहीं फरमाये ॥ क्या सबब सभासे बाहर हुवे कभी मजलिस बीच नहीं आये ॥ मु ॥ क्या समझी मनमें ॥ सोच चिंता कुछ तनमें ॥ क्या तुम नगरी छोड चले जाते हो वनमें ॥ ४६२ ॥

दोहा वजीरका.

महाराज हमारे मर्मका, मत ना पूंछो हवाल ॥
रिपु दुरजनपर ना पडो, जैसा मुझपर पडा जवाल ॥

मुझपर पडा जवाल कालकर याद कुँवर परेशान फिरूं ॥ जिस वक्त भक्ततन कतल हुए पग हाथ देख चुपचान फिरूं ॥ बेधडक बेदर्दी नार बडी खुद चश्म दीद खफ़गान फिरूं ॥ एक लख्त रक्तके पतनाले लोचन लख सरगरदान फिरू ॥ मु ॥ भर ले गये प्याले ॥ नूनाके किये हवाले ॥ मन्त्री करे विलाप रावने आंसू डाले ॥ ४६३ ॥

दोहा राजाका.

एक अचम्भा मैं सुना, है अचरजकी बात ॥
एक आया जोगी बागमें,जिन रचदिया तिलस्मात॥

जिन रच दिया तिलस्मात भंभीरी भरन भरन भनकार रही ॥ केशर कस्तूरी लायची लौंग लख गुलकी महकम मार रही ॥ हंस सारस मोर चकोर कोकिला झगरीया झनकार रही ॥ सर सब्ज बिरछपर कोयलिया एक बाण विरहके मार रही ॥ मु ॥ गुलशनकी शयरा ॥ रौसपर चलती नहरा ॥ भरे गुलाबी हौज नदी मारत हैं लहरा ॥ ४६४ ॥

दोहा वजीरका.

चलो निरप इस बागमें, अचरज देखो आप ॥
सरसब्ज बगीचा होगया, सब जोगीका परताप ॥

जोगीका परताप राव महापुरुषोंसे डरना चाहिए ॥ मेवा मिसिरी सतपकवानीके नगदी थाल भरना चाहिए ॥ ले भेट दुशाला नजर करो कदमोंमें शिर धरना चाहिए ॥ जलदी सिध सन्त जोगीश्वरके असबस दरशन करना चाहिए ॥ मु ॥ चल शीश नवाइए ॥ सुफल संगत फल पाइए ॥ पूरनमलका बाग देख घर अपना आइए ॥ ४६५ ॥

दोहा राजाका.

पहले कुँवरको हेर चुका, अब मैं ढूंढूं कांह ॥
मेरा हरको दर्द मालूम है, जो गुजरे दिलमांह ॥

जो गुजरे दिलमांह जगतमें भेज चुका ब्राह्मण नाई ॥ कहीं क्षत्री वैश्य बरामनके पूरनसा पुत्र जना नाई ॥ उस शकल किसी घर कन्या हो तसबीर खैंच दो दिखलाई ॥ खुद आप जगतमें देख चुका पूरन छबि नजर नहीं आई ॥ मु ॥ घर आये खाली ॥ नाथ गुंचेमें आली ॥ सुना कुँवरकी शान कसम खा कहता माली॥४६६॥

दोहा वजीरका.

कहो माली क्या बात है, क्या देखा दर बाग ॥
तिलस्मात बातें सुनी, लगा राव वैराग ॥

लगा राव वैराग आग मोहबतकी आन लगाई तैं ॥ क्या शकल शान शौकत छबि सुन्दर जिसकी सिफत सुनाई तैं ॥ एक खुश्क चमन सर सबज किया और खुर्द उमर बतलाई तैं ॥ जोगी जुग राजा महाराजाकी बहुत बुजरगी गाई तैं ॥ मु ॥ हमसे कहो माली॥ कैसे फल फूली डाली ॥ जो बोलेगा झूठ लाख मुख खागा गाली ॥ ४६७ ॥

दोहा मालीका.

क्या दरपन करकँगनको, क्या वेश्याको सुहाग ॥
चश्म दीद दरशन करो, खूब रहा रंग लाग ॥

खूब रहा रंग लाग राव तुम सुनो गरीबपरवर आली ॥ दर जबां शीर कंद रोगनके हुवे नदी नीर सरवर खाली ॥ आ खुश्क चमन सरसबज किया सब खास कली तरवर डाली ॥ चन्द सुरज सितारे गोहरोंकी हीरे लालोंकी नरवर ताली ॥ मु ॥ झमकत

झम झमकत ॥ वदन दामन ज्यों दमकत ॥ नयन रहे झर लाय घटा घन बिजली चमकत ॥ ४६८ ॥

दोहा वजीरका.

चलो नरपती बागमें, चलकर देखो जाय ॥
सुत सम्पतके कारने, चरनों शीश नवाय ॥

चरनों शीश नवाय राव तेरे कुलमें बात हमेशोंकी ॥ सिध साध संतकी किरपासे जड़ जावे पाप कलेशोंकी ॥ बन सादत टहल मंजूर करो नृप जोगी जन दरवेशोंकी ॥ तन त्याग कटोरी मगरूरी कर खातर भगवे भेशोंकी ॥मु॥ गरभो मत मनमें ॥ भरम कुछ मेरे तनमें ॥बनकर कुवर फकीर आन बैठे गुलशनमें ॥४६९॥

दोहा राजाका.

हे वजी०-कौन तसव्वर तुम करो, सादतमन्द वजीर ॥
कोई हटके आया नहीं, जो नर बने फकीर ॥

जो नर बने फकीर आप किस रीत छोड़ बेरीत हुवे ॥ तज शहर सरहद रहे जंगलमें जग दुनियासे बेप्रीत हुवे ॥ सुत मात पिता तज तिरियाको जगमें जोगी जुग जीत हुवे ॥ मशहूर मसल सब मुलकोंमें कहो जोगी किसके मीत हुवे ॥ मु ॥ कहते तनमनकी ॥ मुक्तगत करते तनकी ॥ ऐस अशरत सुख त्याग हवा खाते बन बनकी ॥ ४७० ॥

दोहा वजीरका.

हेराजा०-नृपअजयपाल जोगीहुवे,फरघरलियासँभाल
मछन्दरनाथ घर जा हुवे, संकल द्विप भूपाल ॥

सिंहल द्विप भूपाल फरीद घर जा मासे लौ लाई है ॥ कानीपा नाथ हुवे जोगी जा घरमें अलख जगाई है ॥ नृपगोपीचन्द

जोगी बनके जननीको सुरत दिखाई है ॥ महाराज भरथरी बन जोगी घर मन्द मुहब्बत भाई है ॥मु॥ धुन्धी ऋषि आये ॥ जनम घर फेरे पाये ॥ श्रीगंगोजी आन मातको ज्ञान सुनाये ॥ ४७१ ॥

दोहा राजाका.

हे वजी०-जो नर जगमें जीवते, वे बहुर मिलैं हैं आन॥
वे नर फिर मिलते नहीं, जिनकिया स्वर्ग अस्थान ॥

जिन किया स्वर्ग स्थान जिगरसे निकल जान परलोक गये॥ मोह ममता काम किरोध लोभ हंकारज मुरचे झोक गये ॥ जर जेवर जोड जमा करके जागीर जिमी घर रोक गये ॥ जब कजा अदलकी लूट पड़ी तब कुलफ अगारी ठोक गये ॥ मु ॥ जीवत घर पाया ॥ सभी तज जाते माया ॥ सुन मन्त्री कर ज्ञान मरा कोई नहिं आया ॥ ४७२ ॥

दोहा वजीरका.

हे राजा०-शिव शंकरके हाथसे, एक दिन मरे गणेश ॥
पारवती परतापसे, गजशिर धरा महेश ॥

गजशिर धरा महेश जगतके शुभकारजमें पुजवाया ॥ मरे दक्ष प्रजापति वीरभद्रकर अजाशीश शिर धरवाया ॥ दर हवन कुंड सति दग्ध हुई नौ क्रीड शक्त मन्दर छाया ॥ जति हनुमतसे लक्ष्मण मर गये श्री शिव वचनों बच गई काया ॥मु॥ लक्ष्मण मुरझाये ॥ करण स्वर्गापत धाये॥इतने नर मर गये फेर दुनियामें आये ॥४७३॥

दोहा राजाका.

उठ राजा जलदी चले, मालीको ले साथ ॥
रूपेसाह दिवानका, करमें पकडा हाथ ॥

करमें पकड़ा हाथ चमनमें अलबत भँवर गुजारते हैं ॥ कोय-

लभी कूक मलारत हैं वन दादर मोर झिंगारते हैं ॥ मिल पक्षी बैंन पुकारत हैं नहरें भी लहरें मारते हैं ॥ गुलशनमें नजर निहारते हैं एक जोगी ज्ञान विचारते हैं ॥ मु ॥ राजाजी दौडे ॥ दूर जा बांधे घोड़े ॥ होकर नंगे पांव दस्त जा दोनों जोड़े ॥४७४॥

दोहा वजीरका.

नृप मंत्री मिलके चले, कर कंचनके थाल ॥
भरे जवाहर रत्नसे, हीरे मोती लाल ॥

हीरे मोती लाल सकल जब गुंचे दहनपर नजर पडी ॥ छबि देख मुताबिक पूरनके दिल उमग घटा भर जोश चढी ॥ एक हाथ कलेजा उठता है सुत तात चश्मसे चश्म लडी ॥ नयननसे नीर टपकता है ज्यों भर भादोंमें लगी झडी ॥ मु ॥ छतियां भर-आई ॥ पूरन जब दिया दिखाई ॥ राव पुत्रको देख सकल सुध बुध बिसराई ॥ ४७५ ॥

दोहा राजाका.

राजा देख फकीरको, दिलमें करो विचार ॥
इस रंग मेरा कुँवर था, छिप गया राजकुमार ॥

छिप गया राजकुमार नाथकी तनक रमकसी पूरनकी ॥ नमकीन चश्म कुछ मदकी रसम अखतरे झमकसी पूरनकी ॥ खमदार दो अबरू गुलरूपर दामनकी दमकसी पूरनकी ॥ निश चौदशके शशि मस्तकपर सूरजकी चमकसी पूरनकी ॥ मु ॥ मैं कह नहिं सकता ॥ पूरन कह कैसे बकता ॥ जो पूरन जगमाय लाय छातीसे रखता ॥ ४७६ ॥

दोहा पूरनका.

हँस हँसके पूरन उठा, देख पिताका हाल ॥
सात कदम आगे चला, करता इस्तकबाल ॥

करता इस्तकबाल राव गद्दीके ऊपर बिठलाये ॥ दो हस्त जोड दण्डवत करी कर सिदक सबर दरशन पाये ॥ धन भाग मेरे बहु मुद्दतसे तशरीफ आज राजन लाये ॥ कर खातिर हाल पूछता तुमको कहो राजन किस्तर आये ॥मु॥ हमसे बतलाना ॥ बैठो कुछ लाऊं खाना ॥ हम दरबेश फकीर हुकुम मुझको फरमाना ॥४७७॥

दोहा राजाका.

हे बा०—तुम जोगी जुग रावले, हम दुनियांधुंध झाड ॥
ये क्या पाप चढावते, उलटी गंग पहाड ॥

उलटी गंग पहाड मेरे चरणोंके हाथ लगाते हो ॥ दरगाहमें हांसी करतेहो नाहक सिर पाप चढाते हो ॥ तुम जोगीजन दो दीनोंके आदंतीपूज कहाते हो ॥ कर दवा बुजुरगी अपनीसे मुझे आजिज खिजल ठहराते हो ॥ मु ॥ करते शरमिंदा ॥ मैं हूँ अखतर तुम चंदा ॥ तुम जोगी जुगराज मैं हूँ परलोकका बंदा ॥ ४७८ ॥

दोहा पूरनका.

हे बा०—तुम राजा हो गढपती, हम वनवासी साध ॥
सुलतां आगे दरवेशकी, क्या होती बुनियाद ॥

क्या होती बुनियाद हमारी नित उठ अलख जगाते हैं ॥ खुद बे दौलत राजोंका टुकडा गदा हजारों खाते हैं ॥ हम लोग जेर छायामें तुमरी कर अशरत सुख पाते हैं ॥ हो जगमें आप बलन्द राव हम तुमसे खुर्द कहाते हैं ॥ मु ॥ तुम छत्तरधारी ॥ हमी वनके वनचारी ॥ तुम दाता दातार हमी नादान भिखारी ॥ ४७९ ॥

दोहा राजाका.

चश्मदीद गुलबोसतां, हासिल हुई मुराद ॥
जोगी जनको देखके, पूरन आया याद ॥

पूरन आया याद खबर किस जङ्गलमें पुत्तर सोता॥ दिल उमंग कलेजा फटता है भर नीर नयन झुर झुर रोता ॥ मुँह फेर अकेला बिडे बीच सिर पीट ताछ तनको खोता ॥ मेरा जो पूरन जिंदा रहता इस जोगीकी सूरत होता ॥ मु ॥ जाता बलिहारी ॥ दस्तमां चकी कटारी ॥ आप करूं अपघात जान ना होती न्यारी ॥४८०॥

दोहा पूरनका.

कहो राजा किसवास्ते, बहुत हुए दिलगीर ॥
दिल उदास मुख खुश्क है, नयन भरे जलनीर ॥

नयन भरे जल नीर मुकद्दर कैसा सख्त मिजाज हुआ ॥ सलतां दरसात विलायतकी सत्रासौ कोसमां राज हुआ ॥ कुल नौ कोटी गढ मारवाडके रजपूतोंका ताज हुवा ॥ अब और ज्यादा क्या चाहते हो सब राजोंका महाराज हुवा ॥मु॥ तेरे नहिं आवें ॥ फेर नाहिं तुझे सतावें ॥ जो हमसे नाराज कूंच ह्यांसे कर जावें॥४८१॥

दोहा राजाका.

हे नाथ०-गुलशन केशर केवडा, सब ठाट बागकेमाहँ॥
इस किस्मतके बागमें, एक जिन्दगी फल नाहँ॥

एक जिंदगी फल नाहँ नाथ मैं इसविध सख्त उदास हुआ ॥ सलतनत लक्ष्मी जादे है फरजन्द एक ना पास हुआ ॥ जो कली गुलिस्तां रौस हुई रब खास हुकुम परगास हुआ॥ एक बालकराम शरण गुलशन खुद आन तुम्हारा दास हुआ ॥ मु ॥ वरनायत कीजो ॥ हरा इसको कर दीजो ॥ चमन किया गुलजार एक फल मुझको दीजो ॥ ४८२ ॥

दोहा पूरनका.

सुन राजा एक काम कर, जावो बीच रनवास॥
जितनी भर थारी रानियां, लावो हमारे पास ॥

लावो हमारे पास अगाडी नजर सामने बिठलावो ॥ कुल सूबे खास कचहरीके सब उमरावोंको बुलवावो ॥ क्या लम्बरदार बजार चौधरी नार नगर सब चल आवो ॥ क्या साहूकार जौहरी ठाकुर कर हाजर कुछ फल पावो ॥ मु ॥ ह्यांसे मत रोवे ॥ पीट तन अपनो खोवे ॥ मिल जागा फरजन्द तेरी जो किसमत होवे ॥ ४८३ ॥

दोहा राजाका.

जलदी जावो शहरमें, रूपेशाह दिवान ॥
नगर ढँढोरा फेरदो, सब कट्ठे हों आन ॥

सब कट्ठे हों आन बागमें क्या नर मरद जनाना हो ॥ कुल क्या धनवान कंगाल कमीना क्या याना क्या स्याना हो ॥ क्या आला अदना ऊंच नीच क्या बूढ़ा बालक दाना हो ॥ क्या पञ्च चौधरी कोतवाल क्या अहलकार क्या राना हो ॥ मु ॥ रानी सब लावो ॥ नाथके कदमों पावो ॥ जितनेभर नर नार बागमें आन बिठावो ॥ ४८४ ॥

दोहा वजीरका.

मंत्री माफिक हुकुमके, जलदी चला सिधार ॥
चोपदारको भेजके, तलब किये नर नार ॥

तलब किये नरनार नगरके आ गये एक इशारेमें ॥ कुल कौसल बांध जमा करके ले चला धर्मके द्वारेमें ॥ जितनी भर रानी तामझामके कर दई एक कनारेमें ॥ सब लोगोंको ले साथ मन्तरी पौंहचा बाग हजारेमें ॥ मु ॥ जाकर बिठलाये ॥ चमन गुलजार दिखाये ॥ हसबुल हुकुम हजूर लोग सब हाजिर आये ॥ ४८५ ॥

दोहा खिलारीका.

बाग नवलखा देखके, हो गये लोग हरान ॥
कइ नर देखे कुँवरको, कोइ नर जां कुरबान ॥

कोइ नर जां कुरबान कई शजरोंकी छाया सोते हैं ॥ कई कदम मुबारिक नुचकारे कई सुरत देख खुश होते हैं ॥ कइ दरशन पाके जोगीके कर याद कुँवरको रोते हैं ॥ कइ फूल पान फल दे मिलते कई चरण नाथके धोते हैं ॥ मु ॥ कइ पैर दबाते ॥ कई नर दरशन पाते ॥ कइ नर देख दिदार कई नर सदके जाते ॥ ४८६ ॥

दोहा पूरनका.

हेबाबा०-जितने भर हों बागमें, नगरीके नर नार ॥
जरा झूठ मत बोलना, जोगी कहे पुकार ॥

जोगी कहे पुकार अगमसे जो तुम झूठ सुनावोगे ॥ यों मुखभर वचन फकीरोंके जिंदगीकी आस चुकावोगे ॥ थारे कुष्ठ बदनमें हो जागा बे पूछ नरकको जावोगे ॥ जो हम पूछें सच ब्यान करो तो मन इच्छा फल पावोगे ॥ मु ॥ सच बोले वानी ॥ क्याय राजा हो रानी ॥ संखराजा सच बोल कहै जोगी निरबानी ॥ ४८७ ॥

दोहा राजाका.

हेनाथ०-सातमुलकका मैं किया, श्रीठाकुरने सुलतान ॥
राजपाट सलतनतमें, अशरतमें गलतान ॥

अशरतमें गलतान नाथने दीनी ऐश उड़ानेको ॥ धन दौलत हशमत तख्त छतर हिकमत सलतनत कमानेको ॥ नौ रतन जतन छै रस विलसन छत्तीसौ न्यामत खानेको ॥ एक किस्मतमें फरजन्द नहीं दुनियामें दरशन पानेको ॥मु॥ मैं इस विध रोता ॥ फिकरमां दुबला होता ॥ आठ पहर दिन रात नहीं निद्रा भर सोता ॥४८८॥

दोहा पूरनका.

हे राजाजी-इसतेरीतकदीरमें, लिखासाख सरवन्द ॥
तू कहता मेरे फल नहीं, एक तेरे फरजन्द ॥

एक तेरे फ़रजन्द अलखने अकसर तुझको लाल दिया ॥ अकलीमहफ्त सलतनत दई संख अरबन खरबन माल दिया ॥ कर किरपा तुझको लाल दिया तैं कौन जगहमें डाल दिया ॥ क्या देके त्याग विलायतसे हत्तेसे बाहर निकाल दिया ॥ मु ॥ कहो कैसे खोया ॥ लाल कहा डाल डुबोया ॥ दीना कुँवर छिपाय फेर हम आगे रोया ॥ ४८९ ॥

दोहा राजाका.

हे नाथ०-अलबत मेरे कुँवर था, बेशक था घर लाल ॥
बिन कज़ा इलाही मर गया, सिरपर खेला काल ॥

सिरपर खेला काल जाल एक डाल कुँवरको खाय गया ॥ खुद आप जानसे गया कुँवर म्हारी पिछली आब सुकाय गया ॥ कुदरतसे आस चुका बैठा म्हारे गिरा शिकममें पाय गया ॥ उम्मेदवार फल दे मुझको मैं शरण तुम्हारी आय गया ॥ मु ॥ जोगीजुगराजा ॥ करो मनचिन्ते काजा ॥ वर लावो उम्मेद सरन गुलबनकी लाजा ॥ ४९० ॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०-मेरे शास्त्रके बीचमें, उमर कुँवरकी बहोत ॥
आखिरतक भुगती नहीं, किसविध आगइ मौत ॥

किसविध आगइ मौत कुँवर वह कैसे मर गया विन आई ॥ बेकजा कुँवरके मर जानेकी वजह नहीं हमने पाई ॥ जिस दमकी उमर बलन्द हुवे क्या सबब मौत शिरपर छाई ॥ क्या माने पुत्तर मौत हुवा कुछ घरकी कलह नजर आई ॥ मु ॥ देती दिखलाई ॥ झूठ तैं बात बनाई ॥ किस विध तेरा कुँवर राव मरगया बिन आई ॥ ४९१ ॥

दोहा राजाका.

हे बाबाजी-सच पूछो तो माजरा, कहूँ तुमारे पास ॥
गैरचलन फरजन्द था, निमटा था बदमाश ॥

निमटा था बदमाश कुँवरमां ऐब जिता था घन्नेरा ॥ जहां जाना नहीं मुनासिब था उस जगह आप पावा फेरा ॥ एक लख्त दुहाई डाल दई हो भस्म जिगर जल गया मेरा ॥ दरबाब मुकदमे बदमाशीके कुँवर कतल करवा गेरा॥मु॥जब गुस्सा आया॥हरखमें लाल खपाया ॥ समो गई जब निकल बहुत मनमें पछताया ॥ ४९२ ॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०-एक खोटा घर पुत्र हो,एक खोटा हो दाम ॥
ये दोनों कभी आवते, बखत पडेपर काम ॥

बखत पडेपर काम पुत्र खोटा कभि पावे स्याबासी ॥ सलतनत अदलका फिकर पडे जब बेखुद हो बुध परगासी ॥ एक बात कहूँ तू सुन राजा मैं पूंछूं विरतन्त आकाशी ॥ तुम हाल मुफस्सिल व्यान करो क्या करी कुँवरने बदमाशी ॥ मु ॥ जो देह तरासी ॥ मुलकमें पा लई हांसी ॥ क्या था जुल्म संगीन कुँवर गल गेरी फांसी ॥ ४९३ ॥

दोहा राजाका.

हे नाथ०-असल हकीकत इस तरह, मैं सच करूं बयान॥
तुम्ह आगे बोलूं नहीं, हरगिज झूंठ तुफान ॥

हरगिज झूंठ तुफान नाथ एक रोज कुँवर रनवास गया॥ जाकरी जिनाही माताके सँग सारा बदन तरास गया ॥ कर जुलमी भोग संयोग किया बदमास बाग एक सांस गया ॥ बरखातरनीके मिलनेको छोटीमाके पास गया ॥ मु ॥ मैं पकड़ मँगाया ॥

जान जीसे मरवाया ॥ यह था जुलम संगीन कतल इस विध करवाया ॥ ४९४ ॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०-कहो राजा किस सामने, किया कुँवरने फैल॥
कोइ कामन मौजूद थी, उस रानीकी गैल ॥

उस रानीकी गैल महलमें क्या दरयाफत आप किया ॥ ये जुलम जिनाही बदमाशी तैं किस विध जान निसाफ किया ॥ क्या बांध तसब्बुर भरम धरा एक दिलसे मनमें पाप किया ॥ तैं बेखबरी बेपूंछ राव क्या समझ मुकदमा साफ किया ॥ मु ॥ राजा सुरज्ञानी ॥ बात यह किस्तर जानी ॥ कैसे हुवा मलूम कुँवरसँग बिगडी रानी ॥ ४९५ ॥

दोहा राजाका.

हे नाथजी-रानीके रंगमहलमें, चंपा बांदी पास ॥
आठ पहर चौसठ घडी, हरदम हाजिर खास ॥

हरदम हाजिर खास महलमें दोनोंका इकबाल हुआ॥उस बांदी आगे रानीसे पूरनका एक खयाल हुवा ॥ मैं खुद चश्मों तन देख चुका सब न्यूं दरयाफत हाल हुवा ॥ खा कसम लाख कहती रानी इसलिये कुँवरका काल हुवा ॥ मु ॥ हमनेभी जाना ॥ कहा रानी-का माना ॥ इसविध हुवा मलूम नारका सब तन छाना ॥ ४९६ ॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०-तैं रानीकी बातका, बहुत किया इतबार ॥
चम्पादेने क्या कहा, तुझसे सोच विचार ॥

तुझसे सोच विचार राव कुछ बांदीने इजहार दिया ॥ खा कसम कुँवर क्या कहता था तैं जान धरम क्यों हार दिया ॥ क्या खबर

तुझे रानीके तनमें जखम कुँवरने डार दिया ॥ कर औरतका इतवार राव तैं अपना पुत्तर मार दिया ॥मु॥ बांदी नहिं पूंछी ॥ नारके संग रहि सूची॥हरगिज मासंग पूत कभी पावे ना खूंची॥।॥४९७॥

दोहा राजाका.

हे नाथ०-बांदीसे पूंछा नहीं, इस वारदातका हाल ॥
मेरे दिलपर गुजरा नहीं, उस चम्पादेका ख्याल ॥

उस चम्पादेका ख्याल न आया इसमें मैं बेशऊर रहा ॥ उस वक्त मेरेसे बोलनका ना बांदीका मखदूर रहा ॥ हंकार हरखमें भूल गया ना पूँछा मेरा कसूर रहा ॥ अक्ल बेहोश खमोश होश नहिं यह अफसोस जरूर रहा ॥ मु ॥ शक रहा घनेरा ॥ बांदीने पाया फेरा ॥ एक ना हुवा जबाब नाथ चम्पासँग मेरा ॥ ४९८ ॥

दोहा पूरनका.

हे बांदीरी-इस जोगीके वचनको, सुन चम्पा सुरज्ञान॥
सच कहो अपने धरमसे, तजना नहीं इमान॥

तजना नहीं इमान जहांमें यही काम तेरे आवे॥ सच धरम साफ सत बोलेसे भवसागर पार उतर जावे॥ जो झूठ कहे जा दोजखमें दरगाहमें बहुत खता खावे ॥ तेरे कुष्ठ बदनमें हो जागा इस वख्त सजा गहरी पावे ॥ मु ॥ सच कहना बानी ॥ छानियो दूध और पानी॥कुँवर गया रनवास क्याय कहतीथी रानी॥४९९॥

दोहा बांदीका.

चम्पादे बांदी कहे, सुन जोगी जुगराज ॥
क्या मैं कहूँ फबती नहीं, कहते आवै लाज॥

कहते आवै लाज मुझे एक रानी दिलसे तारेगी ॥ रुजगार रिजकसे खो देगी जां दूलह मुझे विसारेगी ॥ ले छड़ी को

चाबुकसे सब तनकी खाल उतारेगी ॥ इस बखत जानसे बचजाऊं फिर बांझा देकर मारेगी ॥ मु ॥ खाके चक फेरी ॥ बात क्या कहूँ घनेरी ॥ नित उठ सांझ सबेर जान मारेगी मेरी ॥ ५०० ॥

दोहा राजाका.

हे बांदीरी-क्या ताकत कोइ इस्तरी, तुमसे करें कलाम ॥
जितनी भर मेरी रानियां, सब तुझको करें सलाम ॥

सब तुझको करें सलाम कामिनी उनसे मत हरगिज डरना ॥ जो नाथ लुत्फसे कहते हैं सो वचन मान सिरपर धरना ॥ इन आगे सच सच ब्यान करो कभी झूंठा नहीं जिकर करना ॥ सच नेम धरमसे कह बांदी रुख देखो कलमा नहिं भरना ॥ मु ॥ सुन बात हमारी ॥ सलामत जान तुमारी ॥ क्या उसकी मकदूर तुझे जो देगी गारी ॥ ५०१ ॥

दोहा बांदीका.

हे नाथजी-कुँवर गया था महलमें, नूनादेके पास ॥
एक चरन धरनन खडा, गल अञ्चल मुख घास ॥

गल अंचल मुख घास रानीको मा मा कहता बेचारा ॥ खुबसूरत देख सजादेकी रानीने धरम तजा सारा ॥ मद कामदेवका जोश चढ़ा पुत्तरको पकड़ पटक मारा ॥ वह मा मा कहता भाज गया फिर मारा जुलमका अंगारा ॥ मु ॥ खेली चतुराई ॥ रावपहँचुगली खाई ॥ आप बनी सतशील कुँवरपर तोहमत लाई ॥ ५०२ ॥

दोहा पूरनका.

हे मा०--सुन माता सच बोलना, कहे निमाना संत ॥
असल हाल हमसे कहो, जो बीता विरतन्त ॥

जो बीता विरतन्त अन्तमें हमसे विथा कहो सारी ॥ जो झूंठ

तुफान खिलाफ कहै तो विना मौत जागी मारी ॥ विन कजा भस्म हो जावेगी, लगे आग बदन बनजा छारी ॥ तेरी कञ्चनवरनी कायामें विलफेल कुष्ट हो जा जारी ॥मु॥ जो झूंठ कहेगी॥दुश्मनी तुझको दहेगी॥ जो बोलेगी सच उमेदपुत्तरकी रहेगी ॥ ५०३ ॥

दोहा नूनादेका.

हे जोगी तुम्ह सामने, बोलूंगी सच साफ ॥
राजाको समझायके, मेरी गुनह करा दो माफ ॥

गुनह करादो माफ रावका खौफ हुवा मेरे मनमें ॥ अलबत सिर खड्ग चलावेगा ज्यों सूरा तेज हुआ रनमें ॥ भर जोश हरष और गुस्सेमां मेरी जान कबज कर दे छनमें ॥ मैं तुमसे साफ बयान करूं शमशेर सींत मारे तनमें ॥ मु ॥ ले हाथ कटारी ॥ खौफ राजाका भारी ॥ आके तुम्हरी शरण कभी जाऊं ना मारी॥५०४॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०-तूं रानीको बख्श दे, जो कुछ होय कसूर ॥
यह है अरज फकीरकी, करनी तुम्हें जरूर ॥

करनी तुम्हें जरूर रावजी रानीको मत कुछ कहना ॥ कर खता माफ तकसीर बन्दगी भली बुरी सिरपर सहना ॥ कुछ बड़ी बदीकी बात होवे कर सबर आप चुपका रहना ॥ हंकार हरष गुस्सेको खो दे मार मरन मनका महना ॥ मु ॥ कुछ चित ना धरना ॥ घूंट सबरीकी भरना ॥ सुन रानीकी बात कभी गुस्सा नहिं करना ॥ ५०५ ॥

दोहा राजाका.

हे पापन-अब तुझको मैं क्या कहूँ, तेरा जी चाहे सो बोल ॥ जोगीजनके सामने, सरब कुफल दे खोल ॥

सर्व कुफल दे खोल महलमें क्या कुछ पाप धरम कीना ॥ जुगराज राजके कहनेसे मैं दिलको साफ नरम कीना ॥ क्या करी खता बख्शाती है कुछ मैं भी बहुत भरम कीना ॥ बांदीसे हाल मलूम हुआ तैं अलबत बुरा करम कीना ॥ मु ॥ शक रहा घनेरा॥ बांदीने पाया फेरा॥ एक ना हुवा जबाब नाथ चम्पासँग मेरा ॥५०६॥

दोहा नूनादेका.

हे गु०-जिस रोज कुँवर पैदा हुवा, थरके जमी असमान॥
भरतखण्डमां रंग लगा, गगन ठहर गये भान ॥

गगन ठहर गये भान कुँवरकी अजब सुरतथी मतवारी ॥ कुल चार किसमकी नाजनियां सब गईं कुँवरपर बलहारी ॥ कर शौक पद्मनी परियां आशिक विनको इश्क जबर जारी ॥ सुन सिफत कुँवरकी बारा वर्षतक लगी मिलनकी इन्तजारी ॥ मु ॥ इतफाक न आया ॥ कुँवर मेरे मन भाया ॥ अलबत मेरा कसूर हाथ लडकेपर पाया ॥ ५०७ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानी०-जिस वखत कुँवर तुझ पा गया, क्या कुछ कीनी बात॥ किसमनसे उस कुँवरने, कीनी तसलीमात॥

कीनी तसलीमात पुत्रने महलोंमें पाया फेरा ॥ तुझे अपनी माता समझ कुँवरने कैसा अदब किया तेरा ॥ रसभरी जबांसे बोलाभी बन दास तेरा चरनन चेरा ॥ तैं मात होके पुत्तरको दरम्यान महलमें क्यों घेरा ॥ मु ॥ क्या तुझको दह था ॥ बोल तेरे न सह था ॥ समझ पापकी नीत तुझे माता न कह था ॥५०८॥

दोहा नूनादेका.

हे गुरुजी-तुम आगे बोलूं नहीं, ऐसा झूठ कलाम ॥
जरा कुँवरका खोट नहिं, रबको देनी जान ॥

रबको देनी जान कुँवर एक रोज मेरे महलों आया ॥ मुझे झुक झुक सात सलाम करी फिर अरज अदाब बजा लाया ॥ एक चरन धरनपर खड़ा कुँवर मन निश्चयकर दर्शन पाया ॥ खुद माता माता कहता था मुझ चन्द्रीका दिल ललचाया ॥ मु ॥ जोबन लहराया ॥ काम बिरहन तन छाया ॥ देख कुँवरकी सुरत मदनने बदन सताया ॥ ५०९ ॥

दोहा पूरनका.

हे रानीजी-मां बेटा दोनों जने, रहे जगतमें पाक ॥
संखराजाकी जगतमें, क्यों उडवाई खाक ॥

क्यों उड़वाई खाक आपने किस कारन मट्टी ठाई ॥ जौ जाने थी मैं पाक रही फिर क्यों उसको तोहमत लाई ॥ कर नेम धरम खा कसम बीरकी क्यों झूंठी चुगली खाई ॥ कहो क्या तेरा बिगड़ा रानी पूरनको सख्त सजा पाई ॥ मु ॥ जिंद जान गमाई ॥ दया नहीं तुझको आई ॥ क्यों दीना मरवाय सांच बतला दे माई ॥ ५१० ॥

दोहा नूनादेका.

हे गुरु०-मेरे मनमां डर रहा, पूरन निपट नदान ॥
राजाजीके सामने, कभी करै हकीकत ब्यान ॥

करै हकीकत ब्यान कानमें बातों खोल सुनावेगा ॥ जैसी कुछ नौबत गुजरी है सब अच्छी तरह जनावेगा ॥ जब राजा ऐसी बात सुने तब मुझपर छुरी चलावेगा ॥ इस कञ्चनवरनी कायाके मेरे कतले सात बनावेगा ॥ मु ॥ न्यूं दिलपर आई ॥ कुँवर सिर तोहमत लाई ॥ पूरन सिर धर दोष आपनी जान बचाई ॥ ५११ ॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०-सुन ले रानी क्या कहै, इधर लगाकर ध्यान ॥
क्या कीना तैं फैसला, शीर आबको छान ॥

शीर आबको छान राव तैं कैसा समझ इन्साफ किया ॥ दर-बाब मकदमे खासबीच तूने नहिं न्याय इंसाफ किया ॥ कहो अब तो तुझे यकीन हुवा तैं अलबत न्याय खिलाफ किया ॥ तैं भरतखण्डका राजा होके यही मुकदमां साफ किया ॥ मु ॥ अब आगे आया ॥ कुँवर नाहक मरवाया ॥ दीना लाल खपाय फेर तुझको क्या पाया ॥ ५१२ ॥

दोहा राजाका.

राजा अपने बदनका, बुडको खाता मांस ॥
छाती पीटे सिर धुने, भरभर गेरे सांस ॥

भरभर गेरे सांस रावने रोरो अँखिया फेर लई ॥ सिर मार जमींमां फोड़ लिया माथेपर त्रिबडी गेर लई ॥ बेतरफ नारकी चला झपटकर हाथ बीच शमशेर लई ॥ इस हालतकी बेहोशीमां रानी आलमने घेर लई ॥ मु ॥ अपना तन खोया ॥ पीटके झल्ला होया ॥ कर पुत्तरको याद धाड दे राजा रोया ॥ ५१३ ॥

दोहा पूरनका.

हे राजा०--क्या हमने तुमसे कहा, गया घडीमें भूल ॥
साबित अर्ज़ फकीरकी, कीनी नहीं कबूल ॥

कीनी नहीं कबूल भूल अब गई चीज़को क्यों रोता ॥ इस हाल-तकी बेहोशीमें तन ताछ बदनको क्यों खोता ॥ सन्तोंका वचन पलटनेसे भवसागरमें खागा गोता ॥ तैं पहले रानी बख्श दई फिर ले शमशेर खफा होता ॥ मु ॥ गुस्सेको मारो ॥ वचन अपना मत हारो ॥ जा दो इसे सुहाग कभी दिलसे मत तारो ॥ ५१४ ॥

दोहा राजाका.

गुरु०-मुझे हुकुम हो आपका, मैं दूं रानीको मार ॥
कर किरपा आज्ञा करो, सिर मारूं तलवार ॥

शिर मारूं तलवार नार मेरा तख्त ताज तरवा दीना॥मेरा कुल मण्डन चश्मोंका अखतर नाहकमें मरवा दीना ॥ ना खता जुलम तकसीर करी मेरा कुँवर कतल करवा दीना ॥ तन काट रकतमें चीर रंगा धड कूए बिच गिरवा दीना॥मु॥ सिर तोहमत लाई॥चन्द्र-सी सुरत छिपाई ॥ खोके मेरा लाल आपनी खुशी मनाई ॥५१५॥

दोहा पूरनका.

हे माता०--तू माता वह पुत्र था, अदब करनकी जोग॥
किस कारन फरजन्दसे, किया चाहै थी भोग ॥

किया चाहै थी भोग पुत्रसे क्या मतलब तेरा रानी ॥ किस कारन प्रीत लगाती थी क्यों होय गरक थी विन पानी॥ क्या हासिल इश्क कमाती थी क्यों हुई पुत्रपर दीवानी ॥ क्या सबब दोस्ती करती थी तूं हमसे कह सच सच रानी॥ मु ॥ क्या उम्मेद तुम्हारी ॥ नीत पुत्तरपर डारी ॥ किया इश्क किस काज बात बतला दे सारी ॥ ५१६ ॥

दोहा नूनादेका.

हे नाथ०--जिस रोज कुँवर पैदा हुवे, मेरे दिलपर गुजरा
ख्याल ॥ पूरनसा पैदा हुवे, मेरी गोदीमें लाल ॥

मेरी गोदीमें लाल हाल कोइ ऐसा लाल गव्हर होगा॥मेरी सुन्दर साफ जमीन बीच गुलशनमें बाग भँवर होगा ॥ पूरनका तुख्म गिरा लूं तो इससे भी तेज जबर होगा ॥ इस सबब दोस्ती करती थी कोई ऐसा मेरे कुँवर होगा ॥ मु ॥ पूरनकी सानी॥ अजब मेरे मन मानी ॥ पूरनसा फल पाय सुफल होजा जिंदगानी ॥५१७॥

दोहा पूरनका.

हे माताजी-जैसी तेरी उमेद थी, पूरी हो गई आस ॥
जा तुझको पुत्तर दिया, जनमे नवमें मास ॥

जनमे नवमें मास खास पूरनकी शान शकल होगा ॥ वह सखी शूरमा मरद जती सब इल्मों तेज अकल होगा ॥ जो तैं पूरनसे छल कीना न्यूं छलके बीच दखल होगा ॥ संखराजासा मूरखका लडका दो घंटे नेक नकल होगा ॥ मु ॥ निमटेगा कारी ॥ फिरे तकता पर नारी ॥ धरो रसालू नाम तेज तप होगा भारी ॥५१८॥

दोहा वजीरका.

हाथ जोड आगे खडा, रूपेसाह दिवान ॥
किरपा करके दीजिये, मुझको भी सन्तान ॥

मुझकोभी सन्तान नाथजी वचन तुम्हारा फल जावे ॥ मुझ अर्जबन्द आजिजकी खातर जबां आपकी हल जावे ॥ एक सिरफ तुम्हारी किरपासे सब कष्ट पाप दुख टल जावे ॥ मुझ फिदवीको फरजन्द मिले कुछ वंश अगाडी चल जावे ॥ मु ॥ पुत्तरविन जलता ॥ फिकर फाकेमें गलता ॥ मुख भर वचन निकाल वचन अब तेरा फलता ॥ ५१९ ॥

दोहा पूरनका.

सुन पुस्तकदीमी मन्तरी, नेक अन्देश वजीर ॥
किस कारन संखरावकी, नहीं बँधाई धीर ॥

नहीं बँधाई धीर रावका कैसा खास दिवान हुआ ॥ उस वक्त आप कहां छिप गयेथे जब राजा निपट नदान हुआ ॥ इन तिरिया तुरकीकी आदतसे क्या तूभी अनजान हुवा ॥ दे तुरत तसल्ली समझाया नहिं राजाको खफगान हुवा ॥ मु ॥ ना दिया दिलासा॥ मुफतमें रच दिया रासा ॥ नहीं बँधाई धीर देखता रहा तमासा५२०॥

दोहा वजीरका.

हे नाथ०—इस वारदातके बीचमें, मेरा नहीं कसूर ॥
मैं लाख दफे समझा चुका, एक न की मंजूर ॥

एक न की मंजूर रावने जिगर हमारा जाल दिया ॥ इस बाबत मुझपर तीन लाखका राजाने डंड डाल दिया ॥ मैं बहुत नसीहत देता था दे गाली बाहर निकाल दिया ॥ मैं तीन वरष मोतल रखवा कर कतल सजादा गाल दिया ॥मु॥ हो गये खफगानी॥कही मेरी ना मानी ॥ सिरपर पल्लू डाल रोवे ईंछरादे रानी ॥८२१॥

दोहा राजाका.

रूपेसा मेरे महरमी, नेक अंदेश वजीर ॥
अपनी करके बखश दे, मेरी सब पिछली तकसीर॥

सब पिछली तकसीर तेरा मैं अलबत कहना नहिं माना ॥ घर जाके वापस कर दूंगा तेरा तीन लाखका जारिबाना ॥ छः सात वरषका मनसब ले मैं तुरत खोल दूं खैजाना ॥ तेरी पिछली बातें याद मुझे तू बडा अकलमन्द है दाना ॥ मु ॥ सब दोष हमारा ॥ कहा ना किया तुम्हारा ॥ अब मिलती नहिं आंख खिजा होता तन सारा ॥ ८२२ ॥

दोहा पूरनका.

तेरेभी दीवानजी, एक होगा फरजन्द ॥
भरखम बुध अक्कल गुनी, निश चौदशका चन्द ॥

निश चौदशका चंद कुँवर सालूका खास वजीर होवै ॥ ले अव्वलसे आखिरतक जिसका जन्म मरनका सीर होवै ॥ तकदीर जबर सिर बलन्द उमर घर शीला नार गंभीर होवै ॥ सलतनत हफ्तपर हुकुम रहै हरफन कुलकला अमीर होवै ॥ मु ॥ हो सबसे स्याना ॥ अकलबन्द चातर दाना ॥ धरम हतेसा नाम प्यार दे पास बुलाना ॥ ८२३ ॥

दोहा ईंछरादेका.

हाथ जोड़ ईंछरा खडी, जोगीजनके पास ॥
खिदमतमें हाजिर हुई, आन करी दरखास ॥
आन करी दरखास नाथ एक अर्ज गुजारिश करती हूँ ॥ दो नैन अमरफल जिंदगानीके सो उन्हका दुख भरती हूँ ॥ कुछ दवा इनायत करो आपके कदमोंमें सिर धरतीहूँ ॥ एक लाल गया दो नैन गये अब ना जीती ना मरती हूँ ॥ मु ॥ सुख गया हमारा ॥ गया चश्मोंका तारा ॥ गया लाड़ रंग चाव पकड़ गया मीत कनारा ॥ ९२४ ॥

दोहा पूरनका.

कहो माता क्या मांगती, क्या कुछ तेरा सवाल ॥
जो तेरी है आरजू, कहो मुफस्सिल हाल ॥
कहो मुफस्सिल हाल खोलके क्या राजी तन मन चाहिये ॥ क्या हशमत दौलत लाल गँव्हर जरबख्त दरब अन धन चाहिये ॥ क्या ऐश और अशरत राजपाट क्या हुकुम सुकारतपन चाहिये ॥ क्या कुवा बावडी हौद नहर क्या ताल चमन गुलशन चाहिये ॥ मु ॥ क्या चाहिये तुमको ॥ बात बतला दो हमको ॥ करो खुशी सुख चैन दूर कर दिलके गमको ॥ ९२५ ॥

दोहा ईंछराका.

हे ना०-बिच तकदीरकदीमसे, विपत मुसीबत बहोत ॥
किसमतमें दुख औसता, सुख अशरत कहँ होत ॥
सुख अशरत कहँ होत नाथ तैं खुश्क चमन गुलजार किया ॥ संखराजा घर सम्पत बखशी मन्त्री घर मंगलचार किया ॥ मेरी सौकन रानी नूनाका सब ऐब पोशीदा जाहर किया ॥ सर सब्ज

रोशनी चश्म मुझे दो जो आदर सतकार किया ॥ मु ॥ कुछ दवा बताइये ॥ नहीं धन दौलत चाहिये ॥ नहीं दामसे काम सदा हरके गुन गाइये ॥ ५२६ ॥

दोहा पूरनका.

माता-तू पटरानी थी भूपकी, बडी सयानी नार ॥
सिख बुध देनी रावको, थी तेरे अखत्यार ॥

थी तेरे अखत्यार रानी राजाको क्यों नहिं समझाया ॥ दे धीर दिलासा सिख बुधसे प्रीतमको नहिं रस्ता पाया ॥ बेखौफ सजादा कतल किया तुझकोभी दरद नहीं आया ॥ तू असल कुँवरकी माता होती अन जल छड़ तजती काया ॥ मु ॥ सबरीमें मरती ॥ कूँच पूरनसंग करती ॥ जा माता घर बैठ फिरे मरनेसे डरती॥५२७॥

दोहा ईछराका.

हे गुरुजी-राजाजीको मैं दिये, बड़े बडे दृष्टांत ॥
बहुत कही मानी नहीं, फिर भी रखी दो भांत ॥

फिरभी रखी दो भांत मुझे दे त्याग तुरत दिलसे तारी ॥ जौ मटर मसूरी डेढ पाव पैसाभर नमक दिया खारी ॥ छः सात जरब तन लाय चुकी ना खोड़ छुटी रबकी मारी ॥ मेरी तनसे जान निकलती नहिं बेअफतर होगई हत्यारी ॥ मु ॥ टकरांभी मारी ॥ हुई ना हरको प्यारी ॥ बहुत मरनके काज जतन कर हटी लचारी ॥ ५२८ ॥

दोहा राजाका.

रानीको संखरावने, गलसे लिया लगाय ॥
सीने ला रोने लगा, गलमें जप्फी पाय ॥

गलमें जप्फी पाय हाय अलबत बिपता भुगती भारी ॥ दे पुत्तर जीती मर गई थी और फिर मरती को मैं मारी ॥ उस स्यात सम-यको पछताता खानेको नमक दिया खारी ॥ मैं आजिज ताबेदार रानी मार वदनमें कट्टारी ॥मु॥ मिस्कीन विचारी ॥ हुई हमसे दुखहारी ॥ तुमको दिया दुहाग बड़ी तकसीर हमारी ॥ ८२९ ॥

दोहा ईंछराका.

जब मैं कहती थी बालमा, मत पूरनको मार ॥
तिरियाकी किस बातका, करना नहिं इतबार ॥

करना नहिं इतबार मेरी आलममें इज्जत तार दई ॥ सुत कतल किया धन छीन लिया मुझको एक लख्त विसार दई ॥ बिच भाग सुहाग दुहाग दिया दे त्याग जीवती मार दई ॥ छः सोलह सत्तर छत्तिससे कर जुदा किनारे डार दई ॥मु॥ ये लुत्फ तुम्हारी ॥ रस्त ये करी हमारी ॥ जौ मटरी मांसूर नमक पैसाभर खारी ॥८३०॥

दोहा राजाका.

हे रानी–मुझको क्या मालूम था, तिरियाका तौरंग ॥
प्रीतमकी पत तारके, लिपटे सुतके संग ॥

लिपटे सुतके संग झूंठ शोखीसे किस्सा छेर दिया ॥ तन फटे कटे वस्तर दिखलाके बहु दिलमें शक गेर दिया ॥ सौबार कसम खा बाबल की मुझ चन्द्रेका रुख फेर दिया ॥मेरा कतल सजादा करवाके बुगचोंमें खून बखेरदिया ॥मु॥ अफसोस घनेरा ॥ राजमें पड़ा अँधेरा ॥ रानी बख्श कसूर खताबन्द राजा तेरा ॥ ८३१॥

दोहा ईंछराका.

हे राजा०–चार किसमकी इस्त्री, चार किसम इश्त्याक॥
रूप हुसनपर पद्मिनी, हो जाती मुश्ताक ॥

हो जाती मुश्ताक चाहै खुबसूरत नर चटकीलेको ॥ गुणवन्त चित्रनी चाहतीहै गंधर्व गुण इल्मरसीलेको ॥ बलवान हस्तनी मतलूबी तन उज्जल वदन छबीलेको ॥ मदवान सङ्खनी तलब करे जोरावर मरद रंगीलेको ॥मु॥ ये परी तुम्हारी ॥ कुँवर मिल गया दीदारी ॥ पीतमकी पत नीत तार पुत्तरपर डारी ॥ ५३२ ॥

दोहा राजाका.

रानी०-तेरी पिछली बातें अब मेरे, सब आती हैं याद ॥
मुझे अगन सबर आता नहीं, बनूं बिरागी साध ॥

बनूं बिरागी साध छोड़ सलतनततख्त बन बन छाऊं ॥ दे द्राड धरती खुलती नाहीं झट इसके बीच समाजाऊं ॥ मुझ हुकुम नाथ जो फरमा दे कर नूनाके कतले खाऊं ॥ जुगराज राजसे डरता हूं तन अपनेमें शस्तर लाऊं ॥मु॥ मैं खोट छुटा दूं॥ सरब दुख दरद मिटा दूं ॥ राजपाट सब ठाट सभी सलतनत लुटा दूं ॥ ५३३ ॥

दोहा ईछराका.

हे राजा०-तुम राजा सम्पत इन्द्रके,जा सुत गन्धर्वसैन॥
इन्द्र पुरीके देवता, व्याहे नगर उजैन ॥

व्याहे नगर उजैन आप निरधनके बड़े दातार हुवे॥ जिनके घर राजा जन्मे भरथरी सर्व चौरासी बहार हुवे ॥ उसके घर बी नरवीर विक्रमा परदुख भञ्जनहार हुवे ॥ जाके सुत शाके शालहा-हनसे मुकर्रिर बेद विचार हुवे ॥मु॥ सन संवत लाया ॥ मथन गुन उनका गाया॥जिसके सुत हो आप नाम जस ऐसा पाया ॥५३४॥

दोहा राजाका.

हे रानी०-मेरी सरब जगत चरचा करे,मुल्कोंके नरनार॥
औरतके इश्त्याकमें, दिया कुलमण्डलको मार ॥

कुलमण्डलको मार मुफतमें नहीं कुँवरसे पाप हुआ॥ सुन सरब शिफारस औरतकी बन निपट पराधी आप हुआ॥ सब मान चरित्तर तिरियाके पुत्तरका बाप कुबाप हुआ॥ मुलकोंके राजा न्यूं कहेंगे सुलतांसे नहिं इनसाफ हुआ॥मु॥ कुल दाग लगाया॥ वंशमें खोटा जाया॥ इन्दरके कुल बीच नाम यश ऐसा पाया॥९३५॥

दोहा ईछराका.

हे राजा॰-जो राजोंसे होय नहिं, सख्त मुकदमा साफ॥
अकलमन्द हो मन्तरी, करते हैं इनसाफ॥

करते हैं इनसाफ आपने मन्त्रीभी बेशहूर किया॥ खुद दस्तों हलफ उठाय चुका डण्ड डाल सभासे दूर किया॥ कर नेम नसीहत देता था तुम कहते बहुत कसूर किया॥ मथ धर्मशास्त्रसे कहता था तुम एक तथ्य नहिं मंजूर किया॥मु॥ था जुलम गुजारा॥ मान मंत्रीका मारा॥ उस दिनसे बेजार हुआ दीवान तुम्हारा॥९३६॥

दोहा राजाका.

हे वजी॰-तू सुन मूरखके मंतरी, ऐसा निमक हलाल॥
मैं जाता वनखण्डको, तू सब सलतनत सँभाल॥

सब सलतनत सम्भाल तुझे मैं लिख दूं राज कमानेको॥ दिल रञ्ज तबीयत चाहती नहीं नगरीमें भोजन खानेको॥ जगबीच जगे कुछ रही नहीं दुनियामें मुख दिखलानेको॥ धिरकार धर्म सतकार नहीं चढ जाऊं मुलक बगानेको॥मु॥ होकर वनवासी॥ सकल वन फिरूं उदासी॥ चन्दरोजके बाद जायकर वट लूं कासी॥९३७॥

दोहा वजीरका.

राजा०-देख हलीमी कुँवरकी, नरम नमाने बोल ॥
अपने मुखसे ना कहे, नूनाके गुण खोल ॥
नूनाके गुण खोल कुँवरने ना कोइ काम फजूल किया ॥ सतधर्म समाई नरमाईसे सब जुग जन्म वसूल किया ॥ भगवान भजन भज भगत रहा ना तेरा हुकुम अदूल किया ॥ विरतन्त न अपना जरा कहा मा खातिर मरन कबूल किया ॥ मु ॥ खो दीनी काया ॥ बात मुखपर नहिं लाया ॥ हँस २ देदी जान नहीं दमका गम खाया ॥ ५३८ ॥

दोहा राजाका.

इतनी सुन सुलताननने, सरली दई पुकार ॥
दे दहाड रोने लगा, सिर धरतीसे मार ॥
सिर धरतीसे मार राव ऐसा बेधड़क पुकार रहा ॥ सब आलममें तन पीट पीट रो रोके कूंकें मार रहा ॥ कर रुदन पखेरू रोते हैं कंप धरनी चमन गुंजार रहा ॥ कह बालकराम विरोग भरी सब बातें राव उचार रहा ॥ मु ॥ मन्त्रीभी रोता ॥ राव शरमिन्दा होता ॥ कर पूरनको याद पीट कायको खोता ॥ ५३९ ॥

दोहा वजिरका.

मन्त्री कहे सुन बादशा, आजीजकी एक बात ॥
गई स्यात निकसी समय, फेर न आवे हाथ ॥
फेर न आवे हाथ राव क्यों कलप घावपर घाव करो ॥ इस वक्त आज इस गुलशनमें तुम इतना एक उपाव करो ॥ इस चन्द्रीको सुहाग बख्शो रानीका आदरभाव करो ॥ छः सोला सत्तर छत्तिसमें कर शामिल अपना चाव करो ॥ मु ॥ शृंगार बनावो ॥ नाथ चकचूड पन्हावो ॥ रख रानीसे हेत मुहब्बतसे गल लावो ॥ ५४० ॥

दोहा राजाका.

वस्तर खास विलायती, तलब किये एकसाथ ॥
चुड़ला हाथीदांतका, जौहर जडाऊ नाथ ॥

जौहर जड़ाऊ नाथ, रतन बिच बाली जडी जंजीरोंकी ॥ चम्पाकली दुकदां दुलडी हीरों माल जवाहरोंकी ॥ उस लाल जड़ाऊ बंदीमें सौ फेर चमक सतारोंकी ॥ एक हार नौलखा गलए माला मोतियोंकी लडी हजारोंकी ॥ मु ॥ जेवर मँगवाया ॥ पान कथ चूना आया ॥ रानी कर शृंगार तुझे राजा फरमाया ॥ ६४१ ॥

दोहा ईछराका.

हे राजा०-मन मारा तन वस किया, तजे चाव रंग राग ॥
जहां मेरा पूरन गया, व्हांई गया सुहाग ॥

व्हांई गया सुहाग राव मैं अब क्या वदन सँवारूंगी ॥ जो खारी नमक दिया तुमने मैं उसमें मतलब सारूंगी ॥ जो मटर मसूर खुराक दई मैं उसमें देख विचारूंगी ॥ जो फटे पुराने जाम दिये मैं उनमें उमर गुजारूंगी ॥ मु ॥ पीपीके पानी ॥ वशर कर दूं जिंदगानी ॥ तुम्हें मुबारक रहो तेरी नूनादे रानी ॥ ६४२ ॥

दोहा पूरनका.

हे मातारी-जो तेरा पीतम कहे, मत कर हुकुम अदूल ॥
जो पीतम बहु विपत दे, सोई विपत कबूल ॥

सोई विपत कबूल भूल मत मनमें सोच समझ रानी ॥ पिया परम पती परमेश्वरकी तैं किसबिध कही नहीं मानी ॥ दे कहर जहर फीर महर करे बन आतिश फिर बन जा पानी ॥ जो राजामे बख्शा लेले कह रावल जोगी निरवानी ॥ मु ॥ जोगीकी वानी ॥ बात क्यों नहिं परवानी ॥ व्याकुल है संखराव धूपसेगेरा पानी ॥ ६४३ ॥

दोहा ईछराका.

हे जोगी-सुत सन्ततके कारने, मेवे तजे हजार ॥
जब पूरन पैदा हुवे, मैं सब रस दिये विसार ॥

सब रस दिये विसार पेश्तर कथ चूना मधपान तजे ॥ नमकीन तुरुश चश्मा दर मिश्री वा लज्जत पकवान तजे ॥ गुड़ शक्करचीनी कन्दशीर माखन मिश्री मिष्टान तजे ॥ मुझे दरगाहमें धक्के मिल गये देह त्याग कुँवरने प्रान तजे ॥ मु ॥ पतिने लीना ॥ सुतकाल पूरनने कीना ॥ कुदरत दिया दुहाग त्यागकर ताने दीना ॥५४४॥

दोहा पूरनका.

हे मा०-पिता पती गुरु सिध जती, और नगरिका राव॥
चारोंको अखत्यार है, इनका एक स्वभाव ॥

इनका एक स्वभाव आप कबहूं भय विपत निवारत हैं ॥ कबहूं दे त्याग विसारत हैं कबहूँ दर बन्धन डारत हैं ॥ कबहूँ गल ला पुचकारत हैं कबहूं ले चाबुक मारत हैं ॥ कबहूं सुख देन नसारत हैं कबहूं मन दे पुचकारत हैं ॥ मु ॥ पी कहे सो करना ॥ वचन पीके सिर धरना ॥ ॥ होय वैकुण्ठो वास पार भवसागर तरना॥५४५ ॥

दोहा ईछराका.

हे गु०-तरन गई विरधा हुई, हो गई उमर व्यतीत ॥
गात गिरा पौरुष थका, लगी रामसे प्रीत ॥

लगी रामसे प्रीत नाथ नहिं राजपाटको दिल चाहता ॥ मिस-कीन हुई बलहीन हुई आंखोंसे नजर नहीं आता ॥ एक नैन भखे दूजे प्रान थके तीजे उदरका लाल रहा जाता ॥ अब जीवन दूर मरन नेड़े कुछ गममें भोजन नहिं भाता ॥ मु ॥ ना अधिक भलाई ॥ नहीं कुछ अदब बड़ाई ॥ नहीं जात यह प्रान नैन नहिं देत दिखाई ॥ ५४६ ॥

दोहा पूरनका-

भरके सींक बभूतकी, सुमरे गोरखनाथ ॥
तीन बार रट अलखको, दइ रानीके हाथ ॥

दइ रानीके हाथ बात सुन फक्कड़की मन चित लावो ॥ ले दवा तुझे कुछ देते हैं गुलशनसे बाहर निकल जावो ॥ कहीं बैठ किनारे बागोंके तुम चश्मोंमें अंजन पावो ॥ जा महलों राज विलास करो जोगीको मतना तरसावो ॥ मु ॥ घर अपने जावो ॥ फेर हटके मत आवो ॥ जो पलटोगे वचन बहुत मनमें पछतावो ॥ ९४७ ॥

दोहा ईछराका.

लई सलाई हाथमें, हुई चमनसे बहार ॥
जाय शजरकी ओटमें, लइ आंखोंमें डार ॥

लई आंखमें डार नारने नैनोंमें अंजन पाया ॥ खुल चश्म रोशनी अधिक हुई इन्द्रासन इन्द्र नजर आया ॥ थी वृद्ध उमर झट तरुण हुई और खूबसूरत बन गई काया ॥ ऐसा रंग रूप अनूप चढ़ा छबि देख चन्द्रमा शरमाया ॥ मु ॥ पीके मन भाई ॥ सुफल हो गई कमाई ॥ रानीकी छबि देख परी नूना शरमाई ॥ ९४८ ॥

दोहा राजाका.

छबि रानीकी देखके, हो गये लोग हरान ॥
धन जोगी जुगरावले, तेरे वचनोंपर कुरबान ॥

वचनों पर कुरबान नाथ एक परम जोत दिखलाता है ॥ इस उमर फकीरी जोग साध कुछ ब्यान कहा नहिं जाता है ॥ तेरी करामात कुल कुदरतको जग देख अचम्भा जाता है ॥ सर सब्ज चमन धन तरुण करी क्या कहूँ भेद नहिं पाता है ॥ मु ॥ चल

सीस नवाइये ॥ हाथ चरनोंके लाइये ॥ कर जोगीकी टहल सुफल संगत फल पाइये ॥ ५४९ ॥

दोहा ईंछराका.

पग पूजन रानी चली, सिध जोगीके पास ॥
परम जोत परगट हुई, अटल कला परगास ॥

अटल कला परगास नारसँग ले छत्तिस परकार चली ॥ भर थार जवाहर मोतीके ले साथ हजारों नार चली ॥ फल पान फूल बलि भेट लई रानी मन सिदक विचार चली ॥ जब ठारा कदमका फरक रहा रानीकी बत्तिस धार चली ॥ मु ॥ पिस्तोंसे जारी ॥ कुँवर मुख पड़ती सारी ॥ दौड़ गहे सुत कुँवर कूक रानीने मारी ॥ ५५० ॥

दोहा खिलारीका.

सुन रानीकी कूकको, जा पहुँचे नर नार ॥
जो देखे पिस्तांनसे, छुटरहि बत्तिस धार ॥

छुटिरहि बत्तिस धार चमनमें आदम बेसुम्मार खड़े ॥ कइ चार तरफ चौगिर्द फिरे लाखों नर कुण्डल मार खड़े ॥ कइ आदमपर आदम ठाडे कइ नीचे पैर पसार पडे ॥ कइ बगलोंमें मुँह काढ़ रहे कइ बर तरवकी डार चढ़े ॥ मु ॥ कइ बाहर भटकते ॥ विरछोंको पकड लटकते ॥ करके कुँवर की याद जिमीं सिर मार पटकते ॥ ५५१ ॥

दोहा पूरनका.

हे मा०-नेक बख्त दिन आजका, नरम समो सिधस्यात ॥
अमृत वेला शुभ घडी, सिद्ध योग व्यतिपात ॥

सिद्ध योग व्यतिपात मात क्यों बदन पीट तनको खोती ॥

दर चश्म जोत सर सब्ज हुई तू अबभी नहीं खुशी होती ॥ निर आदरको सत्कार मिला क्यों सुखकी नींद नहीं सोती ॥ तू वृद्धासे बालक बनगई बन तरुण उमर फिरभी रोती ॥ मु ॥ क्यों हटके आई ॥ साथ आलम क्यों लाई ॥ जोगीको मत छेड तुम्हीं घर जावो माई ॥ ९९२ ॥

दोहा ईंछराका.

जोगी नहिं मेरा कुँवर है, मुझ दुखियाका फरजन्द ॥
मेरी दो चश्मोंकी पूतली, म्हारे कुलमण्डनका चन्द ॥

म्हारे कुलमण्डनका चन्द मेरे उदरमें पांव पसारा है ॥ दिल जान जिगरका टुकडा है निरभागन माका प्यारा है॥दर सीने और कलेजेकी मस्तकका चन्द सितारा है ॥ तू मान चाहे ना मान कुँवर जोगी नहिं राजदुलारा है ॥ मु ॥ मिलनेको आया ॥ भेस जोगीका पाया ॥ हे पूरन कर याद कभी मेरेभी जाया ॥ ९९३ ॥

दोहा पूरनका.

हे मातारी–यह क्या मनमें सोचती, हमें ठहरावे पूत ॥
हमरे गिर्द तू क्यों हुई, हम जोगी अवधूत ॥

हम जोगी अवधूत जगतमें कोइ रिपु नहीं पिता मेरा ॥ तूं ना रावलकी माता है ना मैं जोगी पुत्तर तेरा ॥ इस रमते भ्रमते रावलने तेरे नगर बीच पाया फेरा ॥ तूं चमन बीच बैठन नहिं दे तो अभी कूंच कर जां डेरा ॥ मु ॥ दुख खोदिये थारे ॥ पुत्र घर दिये तुम्हारे ॥ मुझकोभी सुत जान हुई क्यों गिरद हमारे ॥ ९९४॥

दोहा ईंछराका.

बेटा०-एक वक्त आखिरीबीचमें, मुझे दीने कौल करार॥
बारह वर्षमें फिर मिलूं, वचन दिये थे मार ॥

वचन दिये थे मार पुत्र सोई वे बरस गुजरे बारां ॥ जो वचन दहनमें दूध पड़े वही छूट रहीं बत्तीस धारां ॥ इस दूर कदमसे शीर झरे सो वही कदम गिनले ठारां ॥ लग कण्ठ मुझे मिल ले बच्चे तेरी सूरतपर तन मन वारां ॥मु॥ मा फिरे भटकती ॥ दर दसे आंख खटकती ॥ बचडे मुझे बचायअधरमें जान लटकती ॥५५५॥

दोहा पूरनका.

हे मा०—रूप बढा अंग तंग खैंचा, मुख दन्ता स्याह बाल ॥ खून बढा पिश्तां उठीं, तरुन जीवके नाल ॥

तरुन जीवके नाल हाल जिस वख्त चश्म अंजन पाया ॥ दर दीद दवाने असर किया बढ़ जोत तरुन बन गइ काया ॥ बल बहुत बदनमें रक्त बढ़ा रंग रूप अधिक अद्भुत छाया ॥ बे सबब खूनके बढनेसे भर झरक दूध धड पर आया ॥मु॥ समझो मनमाहीं ॥ सबर दो दिलके ताईं ॥ सुरत देख मत भूल मई पूरन हूँ नाहीं ॥ ५५६ ॥

दोहा ईछराका.

हे बे०—तेरा दिल दीपक बलै बीजली, तेरे नैना तरकस तीर ॥ तेरे हाथ तारा मुख चन्द्रमा, कञ्चन वरन शरीर॥

कंचन वरण शरीर सकल सब अदां छबीली पूरनकी ॥ दो खतरुख अजब दो अबरू गज़ब दो भवां सज़ीली पूरनकी ॥ दो कनक करन दो धनुक चरन दो लबां रंगीली पूरनकी ॥ गज- लटक चाल मुख लाल लाल बिच जबां रसीली पूरनकी ॥ मु ॥ छबि पूरनकैसी ॥ सकल सब मूरत वैसी ॥ आफताब सम शान बतीसी पूरन जैसी ॥ ५५७ ॥

दोहा पूरनका.

हे मा०-लख चौरासी योनिका, कुल कारीगर एक ॥
एक सांचेके बीचमें, पूरन घडे अनेक ॥

पूरन घडे अनेक काग कोयलके सखुनकी क्या निसबत ॥ सब शान सकलमें एक सरा परवस्ती वनकी क्या निसबत ॥ एक झुंड भँवरकी एक सुरत गोवर गुलशनकी क्या निसबत ॥ ये राजा जोगी अगन आब एक हुकुम भजनकी क्या निसबत ॥मु॥ कहां ढूंढत माई ॥ कुँवर तन ज़रब लगाई ॥ दो धार मार तलवार डार कूवेमें आई ॥ ६६८ ॥

दोहा ईछराका.

बेटारे-कर्ज खून भरता पती, पुत्र पिता गम सूल ॥
उद्दरके फरजन्दको, मैं किसविध जाऊं भूल ॥

मैं किसविध जाऊं भूल पुत्र तूं भगत विहारी पूरन है॥नन्दलाल विहारी रघुवरका हरनाम अधारी पूरन है ॥ म्हारे कुलमण्डल रजवंश वंशमें कुँवर दिदारी पूरन है ॥ तेरी चन्द सूरजसी सुरत-पर मा सदके वारी पूरन है ॥मु॥ मत ना तरसावे ॥ बहुत जननी दुख पावे ॥ जो बेटा ले मान सबर माताको आवे ॥ ६६९ ॥

दोहा पूरनका.

मा०-पूरन एक ओंकार है, पूरन अलख निज ध्यान॥
पूरन शिव और शक्ति है, पूरन ब्रह्म भगवान ॥

पूरन ब्रह्म भगवान पूरन श्रीकृष्णचन्द्र नन्दके चेरे॥पूरन शिव ब्रह्मा विष्णु अहैं रच सृष्ट चराचर यहां गेरे ॥ पूरन श्रीराम पूरन सीया लक्ष्मण पूरन गुरु गोरख हैं मेरे ॥ पूरन श्रीशेष गणेश महेश क्या सब पुत्तर हो गये तेरे ॥मु॥ पूरन अविनाशी ॥ पूरन दस नाम सन्यासी ॥ रन नौ निध नाथ पूरन मैं सिध चौरासी ॥ ६६० ॥

दोहा ईंछराका.

बेटारे-मोह ममताकी आगमें, आतानहिं सन्तोष ॥
बे अखत्यार लचार हो, बनी गलेकी तौक ॥

बनी गलेकी तौक शोकसे रो रो रुदन मचाय रही ॥ कुछ सबर जिगरमें आता नहीं पूरनको कण्ठ लगाय रही ॥ इस हालतकी दलगीरीमें कुल पिरथी भी लरजाय रही ॥ उस इन्दरके इन्दरासनमें सुन योग परी गम खाय रही ॥ मु ॥ रोती है रानी ॥ पीट खोती जिंदगानी ॥ जलता सकल शरीर रकत होता है पानी ॥ ९६१ ॥

दोहा पूरनका.

हे मातारी-छोड तेरा मैं कुँवर हूं, पूरन बरखुरदार ॥
मत मुझको परगट करे, मा मारे तलवार ॥

मा मारे तलवार मुझे जब नूनादे सुन पावेगी ॥ कर जलदी तलब जलादोंको दो चन्द कतल करवावेगी ॥ पग हाथ काट धड चौरस कर कूवेके बीच गिरावेगी ॥ इस रमते जोगी रावलका सिर काट रकतमें न्हावेगी ॥ मु ॥ शृंगार बनावे ॥ रकतमें चीर रँगावे ॥ मुझको कतल कराय सबर माताको आवै ॥ ९६२ ॥

दोहा ईंछराका.

माताका कटता कालजा, चले रक्त तन घाव ॥
नैननसे जल उमँगता, उलट पडा दरयाव ॥

उलट पडा दरयाव कुँवरके रानी गालमें झूम रही ॥ इस हालतकी बेहोशीमें ना तनकी बजह मलूम रही ॥ ज्यौं गुलशन मचपर भँवर फिरे वो जननी सुतपर घूम रही ॥ झट पकड कुँवर कुरबान गई गलसे ला मुखडा चूम रही ॥ मु ॥ सूरतपर वारी ॥ गले तन बहियां डारी ॥ पूरनसे कर प्यार कूक रानीने मारी ॥ ९६३ ॥

दोहा पूरनका.

चुप जननी मत जिकर कर, मतना कूक पुकार ॥
मेरे मिलनेसे दुख हुआ, नहिं उतरेगी पार ॥
नहिं उतरेगी पार मात तू अबलग सजा नहीं पाई ॥ मुझ बाफत तुझपर क्या गुजरी चौतरफ विपत सिरपर छाई ॥ छै सोला सत्तर गरक हुए जो मोठ मटर मसरी खाई ॥ कर याद वक्त क्यों भूल गई मत छेड और गरदिश आई ॥ मु ॥ दो चन्द आवेगी ॥ हाथ मेरे लावेगी ॥ सुन पावे संखराव सजा गहरी पावेगी ॥ ९६४ ॥

दोहा ईछराका.

बे०--इस सुलतांकी सलतनतमें, रहती है दिन चार ॥
अब मैं सुतसंग उठ चलूं, सात समुन्दर पार ॥
सात समुन्दर पार आज अब गया लाल मुझको पाया ॥ दिन रात भटकती फिरती थी ना भूख लगी भोजन पाया ॥ मुझको अब ये डर लगता है कभि गफलतमें सपना आया ॥ बेधडक मुझे तुम मिलने दो तन नेत्र शरद कर लूं काया ॥ मु ॥ मेरा बछडा आया ॥ चूंब छातीसे लाया ॥ करके रुदन विलाप कुँवरका दरशन पाया ॥ ९६५ ॥

दोहा पूरनका.

हे मा०-जिस रोज तेरे पैदा हुवे, तैं कीना प्यार कमाल ॥
तैं पहुँची इस हालको, मैं गेरा गया पताल ॥
मैं गेरा गया पताल मात तूं बारां वरष रही रीती ॥ इन कजा म्यादके बाद मिला ना अन खाया ना जल पीती ॥ मेरे प्यारबीच नुकसान हुवा तू ना मरती और ना जीती ॥ अब तुझपर नौबत यह गुजरी कहो मेरी जानपर क्या बीती ॥ मु ॥ जब वारी जागी ॥ कैदमें डारी जागी ॥ फिर तू देगी प्यार जानसे मारी जागी ॥ ९६६ ॥

दोहा ईछराका.

बेटा-मैं अरसा चौबिस सालसे, तडफत हूं दिन रैन ॥
पहुँच गई इस हालको, पल नहिं पडती चैन ॥
पल नहिं पड़ती चैन कुँवर मेरा मर गया मान हुवा हेटा ॥ तुझ कारन अन धन राजपाट सब अशरत ऐश हुकुम मेटा ॥ चन्द सूरज सतारामें प्यारा और किससे प्यार करूं बेटा ॥ नौ मास बराबर उद्दरमें तू खुद बेखुद सुखसे लेटा ॥ मु ॥ तू राजदुलारा ॥ कुँवर मैय्याका प्यारा ॥ जान जिगरकी कोर मेरे चश्मोंका तारा ५६७ ॥

दोहा पूरनका.

मा०-ऐसे वियोग विलापमें, मुझे लेंगे पिता पिछान ॥
गिरफतार कर डाल दे, मेरे पैरों बीच जुलान ॥
पैरों बीच जुलान तौक गल दस्त हथकड़ी डालेंगे ॥ मुझको दे हाथ जलादोंके तुमको एक लख्त विसारेंगे ॥ मुझे नीली खिलत इनायत कर मेरा भगवां भेष उतारेंगे ॥ ले जंगल झाड़ उजाड़ बीच शमशेर सींत कर मारेंगे ॥ मु ॥ सिर खञ्जर फेरें ॥ चीर रंग खून बखेरें ॥ पग हाथ कलम करवाय ल्हास कूवेमें गेरें ॥ ५६८ ॥

दोहा राजाका.

राजा लम्बी मारता, कलप कूकपर कूक ॥
कर मुहबत गल ला लिये, मिलत मिटत नहिं भूख ॥
मिलत मिटत नहिं भूख कुँवर तेरी पहलों सुरत पिछान रहा ॥ जिस दिनसे क़तल हुवे बेटा मुझे मुलक पराधी जान रहा ॥ सब ऐश और अशरत अराम उठाना जगमें गरब ग्रुमान रहा ॥ दिन रात भटकता फिरता था मैं खाक खलककी छान रहा ॥ मु ॥ निद्रा नहिं आती ॥ नहीं सलतनत सुहाती ॥ पूरन तपत बुझाय लाग चन्द्रेकी छाती ॥ ५६९ ॥

दोहा पूरनका.

जिस आदम नर पुरुषके, निकस जात हैं प्रान ॥
मर गये सो जगसे गये, बहुरि मिलें नहिं आन ॥
बहुरि मिलें नहिं आन जानसे आप कुँवरको गाल चुके ॥ कहिं जान जिगरमें छोड़ी नहिं खुद चश्मों वदन सँभाल चुके ॥ दो धार मार तलवार सँहार सब तनका रकत निकाल चुके ॥ पग हाथ कलम तन जरब दई ठा ल्हास कुवेमें डाल चुके ॥ मु ॥ कर चुके झमेला ॥ कुँवर उठ गया अकेला ॥ जो नर हो परलोक फेर होता नहिं मेला ॥ ९७० ॥

दोहा राजाका.

बेटा०-आखिर वक्त बफातके, वचन दिये थे मार ॥
अपनी मासंग मिलनका, कर लिया कौल करार ॥
करलिया कौल करार कुँवर इस कारन तलब दिदार हुवा ॥ इस समे सिफ्त सब साफ करूं म्हारे कुलमें कुँवर औतार हुवा ॥ बेसबब सिदक सच सबरीके सब चौरासीसे बहार हुवा ॥ कर प्यार गले लिपटो बेटा तेरा निरदई पिता लाचार हुवा ॥ मु ॥ दम चला हमारा ॥ जोर सुरखीने डारा ॥ हे पुत्तर ले थाम मान ले वचन हमारा ॥ ९७१ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-मैं दीना हाथ जलादके, मेरा किया वदन नापाक ॥
उजले वस्तर तारके, नीली दई पोशाक ॥
नीली दई पोशाक मुझे बिन कजा कतल कर सर तारा ॥ मेरी ल्हास चितामें जाली नहीं बेगोर कफन कूवे डारा ॥ ना किरिया करम दशाही की ना दो घड कलश भरा वारा ॥ गत मुक्त सतरमी

नहीं हुई मैं यों फिरता दर दर मारा ॥ मु ॥ ना कफ्फन पाया॥मारके नहीं न्हवाया ॥ ना दइ अगन समाध नहीं धरनन दफनाया ॥८७२॥

दोहा राजाका.

हे बे०-मैं पत्थरसे टक्कर मारके, दूं अपना सिर फोड ॥
फाड़ूं पेट नखूनके, सर्व छुटा दूं खोड ॥

सर्व छुटादूं खोड पुत्र सब छोड चलूं अनधन माया ॥ तेरे बोल विपतके सुन सुनके मेरा निकल भँवर लबपर आया ॥ मेरी जाती जान पकड बेटा जो कुलवंतीका है जाया ॥ म्हारे कुलमें पूत सपूत हुवा गल लाग शरद कर दे काया ॥ मु ॥ तडफूं दिन राती ॥ दग्ध होती है छाती ॥ पूरन पुत्र संभाल जान अब निकली जाती ॥ ८७३ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-मुझ मुरदेसे ना मिलो, मैं मुरदा बदजात ॥
विन अजल मरा गत ना हुई, मैं भटकत हूं दिनरात ॥

मैं भटकत हूँ दिन रात जगतमें तुम्हरा पूत कपूत फिरूं ॥ मेरी दस्त नीच घर जान दई बन प्रेत ऊत जिन भूत फिरूं ॥ विन मुक्त मांगता फिरताहूं मैं बन जोगी अवधूत फिरूं ॥ मुझे अन वस्तर जल नहिं मिलता यों लाके अंग बभूत फिरू ॥ ॥ मु ॥मैं फिरूं सताया ॥ भूखने बहुत दबाया ॥ अन वस्तर जल काज प्रेतयोनीमें आया ॥ ८७४ ॥

दोहा राजाका.

बेटाजी-रंग ढंग भूत परेतके, बुरे बरंगे हात ॥
खर आदत वदकी सुरत, स्वान मग़ज स्यह गात ॥

स्वान मगज स्यह गात ज़रद दो नेत्र जिगर पतली छाती ॥ स्या दांत जबां वनमानसकी दर दहन वदन बदबू आती ॥ सिर बाल खुर्द पग पीछेको और परछाईं चकरी खाती ॥ जो आदम उससे गुफ्त करे खा दहशत जान निकल जाती ॥ मु ॥ देखत घबराया ॥ बुरी सतभंती काया ॥ सिर धड मुख विकराल निपट अन्धेरी छाया ॥ ६७५ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-जो इनसान इमानसे, पाक वदन मर जाय ॥
रन शस्तर तन खा मरे, झट लेती परी उठाय ॥

झट लेती परी उठाय पिता न्यूं धरमशास्त्र गुण गाता है ॥ जो विपता भुगत गलीज मरे सो बदबर भूत कहाता है ॥ जो तरस तडफके मरता है तन बदलत धक्के खाता है॥जो विन आई बेकजा मरे वह साबत तन बन जाता है ॥ मु ॥ इतना दुख पाया ॥ नहीं गलीज कहाया॥बिन आई गइ जान रही आदमकी काया ॥६७६॥

दोहा राजाका.

बे०-तुम कहते मैं भूत हूं, मुझे आता नहीं इमान ॥
तेरि सब छबि पूरनभक्तकी, सर्व शजादी शान ॥

सर्व शजादी शान सकल सब साबत तौर अमीरोंके ॥ जो गलत मुकदमां साफ किया यह चित मन वस्फ वजीरोंके ॥ सर सब्ज विरछ कर दी छाया ये अटल वाक गुरु पीरोंके ॥ कानन कुण्डल माला मृगछाला निरमल वचन फकीरोंके ॥ मु ॥ देखत घबराया ॥ भूत कैसे बतलाया ॥ हे पुत्तर सच बोल सबर मुझको नहिं आया ॥ ६७७ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-हम तेरी तरफसे मर गये, होगया खाक शरीर॥
बाबल तेरी बलायसे, चाहे राजी रहैं दिलगीर ॥

चाहै राजी रहैं दिलगीर पिता तुम हमसे मुहबत तोड चुके ॥ बेदरद दया बिनखौफ मेरी गरदनपर शस्तर जोड चुके ॥ जब तनसे सुरखी निकली ना तब पग सिर हाथ मरोड चुके ॥ मेरा चमर छुरीसे चीर चीर सब तनका रक्त निचोड चुके ॥ मु ॥ दो नैन कढ़ाये ॥ खून भर प्याले लाए ॥ निकल गई जब जान गेर कूवेमें आए ॥ ५७८ ॥

दोहा राजाका.

बे०-तन काया मन औचटा, व्याकुल हुआ शरीर ॥
बेसुध हो कदमों पडा, दिल दुरबल दिलगीर ॥

दिल दुरबल दिलगीर कुँवर मेरा अब मन नहीं रहाजाता ॥ तेरी ब्यान मुसीबत भुगतीका अब हमसे सहा नहीं जाता ॥ तेरे बोल निमाने सुन सुनके सरवरके बीच बहा जाता ॥ वो रोज कतलका याद करूं मेरा सब तन वदन जला जाता ॥ मु ॥ चन्दाकी नांई ॥ लगी कञ्चनको काई ॥ बेटा वख्श कसूर खता कर माफ समाई ॥ ५७९ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मैं मारे आपके खौफके, बोला झूठ तुफान ॥
राजनीतिकी रीतिसे, फिर ना खो दें जान ॥

फिर ना खो दें जान पिता रस्तेमें डरता आता था ॥ कर याद तुम्हारी बातोंको मैं दिलमें दहशत खाता था ॥ चकचान जगह यह नजर पड़ी जहां पूरन जान गमाता था ॥ उस वक्त खूनपर

ख्याल गया कर याद बदन थरनाता था ॥ मु ॥ तेरे डरके मारे ॥ निकसते प्राण हमारे ॥ चाहे मारे चाहे छोडे पिता अखत्यार तुम्हारे ॥ ५८० ॥

दोहा राजाका.

बेटा०-तुम्ह मारे मेरे लाडले, मुलक हुवा गमगीन ॥
अब तुझको फिर मार दूं, जागी उलट जमीन ॥

जागी उलट जमीन कुँवर मेरा राज गरक होजा सारा ॥ अब मैं तुझको क्या मारूंगा मैं आपहि मर गया विन मारा ॥ सुलतां दरसात विलायतके सब राजोंको लगता खारा ॥ गढ़ मारवाडके रजपूतोंने दुष्ट समझ दिलसे तारा ॥ मु ॥ चित मनसे न्यारा ॥ कुँवर है कसूर हमारा ॥ मुझ चन्द्रेको राख पुत्र बाबलका प्यारा ॥ ५८१ ॥

दोहा पूरनका.

पिताजी-मैं तुम्हसे ऐसा डरा, भागा रातों रात ॥
भरतखंडको छोडके, टप गया सात विलात ॥

टप गया सात विलात पिता मेरे ख्याल एक मनमें आया ॥ मैं दरस खुदावन्द न्यामतका बहु मुद्दत गुजरी नहिं पाया ॥ मुझ चन्द्रेका दिल नहीं रहा कर कूच सफर सिरपर ठाया ॥ बरखात तुम्हरे मिलनेके मैं हो बेशरम मिलन आया ॥ मु ॥ आ दरश पाया ॥ तीरथ इकसठमें न्हाया ॥ तुम ठहरे भगवान मुझे तेरी छत्तर छाया ॥ ५८२ ॥

दोहा राजाका.

बाबल मिलता पुत्रसे, लम्बीभुजा पसार ॥
गलसे सुत लिपटा लिया, झट मारी किलकार ॥

झट मारी किलकार रावने रो रो नयन सुजाय लिये ॥ सूरजसा मुखडा चूम चूम छातीसे कुँवर लगाय लिये ॥ एक लखत खुमारी मोहबतकी राजा सुत साथ मिटाय लिये ॥ आकाशवेल ज्यों लिपट लिपट झट पूरन गोद उठाय लिये ॥ मु ॥ झुरता मनमाहीं ॥ मिलत पुत्तरके ताईं ॥ मिलके करे विलाप भूख कुछ मिटती नाहीं ॥ ५८३ ॥

दोह पूरनका.

बावलके सुन वियोगको, कुँवर हुए दिलगीर ॥
उमग उमग दिल आ रहा, ढल आये जल नीर ॥

ढल आये जल नीर कुँवर लग गलसे कूक पुकार पडे ॥ लख चार नार कुल अहलकार एक लखत मार किलकार पड़े ॥ वन मोर कोकिला कोयलभी गिर उलटे पंख पसार पड़े ॥ कहे बालकराम मये नूना मंत्री सिर धरनन मार पडे ॥ मु ॥ वासक घबराया ॥ गगन सूरज मुरझाया ॥ परियां हुईं उदास सुनत इन्दर लरजाया ॥ ५८४ ॥

दोहा राजाका.

बे०-एक अजब अचम्भा है मुझे, ना कर सकूं बयान ॥
तेरे कंचन वरन शरीरमें, नहिं छोडी थी जान ॥

नहिं छोड़ी थी जान तेरी चन्दवरनी काया गाल दई ॥ तन मनसे रकत जुदा करके रगरगसे जान निकाल दई ॥ पग हाथ अलग निकसे लोचन में ऐसी तुझे खलाल दई ॥ तेरा भँवर वैकुण्ठ सिधार गया ठा ल्हास कुवेमें डाल दई ॥ मु ॥ तन जखम लगाया ॥ गरक निश्चय करवाया ॥ किसतर तेरी हुई कुँवर सरजीवन काया ॥ ५८५ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-बारा वरष भरभण्डमें, विपत भरी दिन रात ॥
मुझै रमते रमते मिल गए, सतगुरु गोरखनाथ ॥

सतगुरु गोरखनाथ कुवेसे काढ़ मुझे गलसे लाया ॥ बुत विटम सिकश्ता देख मुझे सतगुरुको बहुत तरस आया ॥ सब हाल मुकदमेका पूंछा माताका जाल नजर आया ॥ इस सबब जुलमसे बखश मुझे सरजीवन करि सुन्दर काया ॥ मु ॥ छातीसे लाया ॥ रूप रंग अदभुत छाया ॥ धरा शीशपर हाथ परम पद मुझको पाया ॥ ५८६ ॥

दोहा राजाका.

बे०-उस धन सतगुरुके नामको, निरधनके दातार ॥
कलजुगमें गुरु आप हैं, कुलदुखभञ्जनहार ॥

कुलदुख भञ्जनहार नाथ निरधन मुफलिसके उपकारी ॥ बखशिंदा अजिजमहताजनके गुरु आपही नबते मदतगारी ॥ बेकार लचारी दुखदारी गमखोरीके गिरिवरधारी ॥ खुद भगत जती संतोषीके और साध संतके हितकारी ॥ मु ॥ तिन नाम उधारी ॥ लगी हमको इन्तजारी ॥ बेटा गुरु दिखलाय चरन चितपर बलिहारी ॥ ५८७ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-लखके साथ बिलातसे, और सब सरवरसे पार ॥
गढ गजनीके सरहद्दपर, ह्वां मेरे करतार ॥

ह्वां मेरे करतार साथ दुरगे नौ क्रोड़ कुमारी हैं ॥ चौसठ जल जोगन बावन बीर छप्पन लख जादू भारी हैं ॥ सुरवृक्ष लक्ष्मी कामधेनु पचरतन कुबेर भंडारी हैं ॥ कुल तीन हजार तीनसे

चेले दरशनके हितकारी हैं ॥ मु ॥ दश नाम सन्यासी ॥ षट-दरशन अविनाशी ॥ नौ निध बारा पन्थ साथ सब सिद्ध चौरासी ॥ ५८८ ॥

दोहा राजाका.

बे०-सतगुरु गोरखनाथको, खुद चश्मों दिखलाय ॥
जिस विध तेरा गुरु मिले, वह विध हमें बताय ॥

वह विध हमें बताय हमी चितमनसे दरशन पावेंगे॥कर जोड़ सिदकसे जावेंगे फिर चरणोंमें ध्यान लगावेंगे ॥ ले उज्वल भेंट चढावेंगे फिर ब्रह्मज्योति मिल जावेंगे ॥ सतगुरुकी अस्तुति गावेंगे कर टहल परम पद पावेंगे ॥ मु ॥ गुरुको ध्यावेंगे ॥ हाथ चरणों लावेंगे ॥ सतगुरु किरपा करे सभी तीरथ न्हावेंगे॥५८९॥

दोहा पूरनका.

हे पि०-मेरे परम गुरु नाथका,मिलना नहिं आसान॥
उस सतगुरुको वह मिले, जिन किये अगमसे दान ॥

किये अगमसे दान जान अपनीको नहीं छिपाते हैं ॥ दिलमें ना दहशत खाते हैं बे खौफ जानसे जाते हैं ॥ तकलीफ हमेशा खाते हैं नहीं राजपाटको चाहते हैं ॥ तज राज बनों रम जाते हैं सो गुरुका दरशन पाते हैं ॥ मु ॥ जिंद जान गमाते ॥ नहीं देहका गम खाते ॥ उसको मिले दीदार विपत जो मुझसी पाते॥५९०॥

दोहा राजाका.

विपत मुसीबत औसतां, करी कुँवरकी याद ॥
राजा अपनी जानपर, करने लगे फिसाद ॥

करने लगे फिसाद दौड़के दरखतसे टक्कर मारी ॥ खुल मगज जखम फल बाहर पड़ा हुवा बेशुम्मार रकत जारी ॥ देह उचट

धरनपर तड़फ रही गइ विसर बदनकी सुध सारी ॥ सुन रानी रुदन विलाप करै मारै कूक कूकके किलकारी ॥ मु ॥ रोवें रय्यत सारी ॥ रोवें सत्तर दो नारी ॥ नूना करे विलाप कूक इंच्छाने मारी॥ ६९१॥

दोहा पूरनका.

उठ बाबलके शीशपर, धरा कुँवरने हाथ ॥
रक्त जखमका बन्द हो, जखममिला एक साथ ॥

जखम मिला एक साथ बात मेरी चित मनमें क्यों नहिं लाते॥ जो जानूं तुम दिलगीर हुवे हम हरगिज ना फेरा पाते ॥ जो खबर होवे तुम रुदन करो हम बाहार बाहार वापिस जाते ॥ जो ऐसा हाल कमाल होवे हम कभी नहीं तुमपर आते ॥ मु ॥ ना पाते फेरा ॥ नहीं दिखलाते चेहरा ॥ तुमको समझ नराज कूंच कर जाते डेरा ॥ ६९२ ॥

दोहा राजाका.

हे बे०-ह्यां आके तुमने किया, गलत मुकदमा साफ ॥
अपनी छोटी मातका, जाहर किया पुन पाप॥

जाहर किया पुन पाप आपको बदन साफ निस्तार दिया ॥ मेरा रूपेसाह दिवान साफ कर सतसे पार उतार दिया ॥ खुद माकी उमर तरुन करके दिलसे आदर सत्कार दिया ॥ मुझै महफिल बीच खडा करके कर खिजल जीवता मार दिया ॥ मु ॥ दुनियाके माइं ॥ कहूं क्या किसके ताईं ॥ भरतखंडके बीच धरम जीनेका नाहीं ॥ ६९३ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-अबतो हम ह्यां आ गये, तुमैं करनेको नाराज ।
हम तो पूत कपूत हैं, बहुत पिताका लिहाज ।

बहुत पिताका लिहाज पिता हम फेर कभी नहिं आवेंगे ॥ मन समझ ख्याल नहिं लावेंगे नहिं झांसी फेरा पावेंगे ॥ ना तुमरे दरशन पावेंगे ना अपना मुँह दिखलावेंगे ॥ नित भीख मांगकर खावेंगे ना तुमको आन सतावेंगे ॥ मु ॥ गुरुपे जावेंगे ॥ ध्यान चरनन लावेंगे ॥ अब तो हुआ कसूर फेर हम क्यों आवेंगे ॥ ६९४॥

दोहा राजाका.

बे०-जो गई चीज हटके मिले, खुश्क सब्ज हो बाग॥
बांझ पुत्र अंध नेत्र हो, धन धन उन्हके भाग ॥

धन धन उनके भाग कुँवर सच पूंछो सांच बयान करूं ॥ चन्द्रवदनी सुन्दर छबि ऊपर सौ वार मैं सदके जान करूं ॥ छबि सुरत सजीली चटकीलीपर तन मन धन कुरबान करूं ॥ जिस वक्त गुफ्तगू करते हो मैं लाख पदम पुन दान करूं ॥ मु ॥ बहु दरब घनेरा ॥ शरद सीना हो मेरा ॥ मुझ सिर किया इंसान पुत्र तैं पाया फेरा ॥ ६९५ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मैं कमबखत कपूत हूं, हूँ चन्द्रा निरभाग ॥
उदर पडा मावापके, दिया कलेजा दाग ॥

दिया कलेजा दाग पिता तुम सुखकी नींद नहीं सोते ॥ मैं तुमरे उदर नहीं पडता तुम क्यों इतते दुखिया होते ॥ जो मैं निरभाग जनमता नहिं तुम क्यों मन कलप वदन खोते ॥ जो मैं घर वापिस आता नहिं तुम क्यों घनगरज लरज रोते ॥ मु ॥ आके पछताये ॥ पितर मातर तरसाये ॥ मुझ चन्द्रेको पिता चश्म नदिम दुख पाये ॥ ६९६ ॥

दोहा राजाका.

उठ बेटे घरको चलो, मुझ चन्द्रेके साथ ॥
मेरा वृद्ध पुराना मन्तरी, जोड रहा दो हाथ ॥

जोड रहा दो हाथ दस्तबंद खलकत बेसुम्मार खड़ी ॥ तेरे सत्तर दो बहत्तर माता सब दरशनकी इन्तजार खडी ॥ गल अञ्चल मुखमें घास लिये कर जोड नार लख चार खड़ी ॥ खुद माताकी ढब देख कुँवर कैसी दुरबलसी मन मार खडी ॥ मु ॥ भरै घूंट सबरकी ॥ जैसी परियां बेपरकी ॥ बेअखत्यार लचार सकल सुध भूली घरकी ॥ ६९७ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-इस मेरी तकदीरमें, नहीं साख सरमन्द ॥
ना अन धन दौलत लिखी, ना भाई ना बंद ॥

ना भाई ना बन्द ऐश और अशरत ना इरशाद लिखे ॥ ना राजपाट ना मुलक ठाट ना षटरस लुत्फ सँवाद लिखे ॥ ना यार मीत ना राजनीत ना मात पिता उस्ताद लिखे ॥ एक बाद कबाद वफात मेरी किसमतमें चार जलाद लिखे ॥ मु ॥ ना लिखे विरादर ॥ बहन भावज ना मादर ॥ हम हैं फकर फकीर कौन हमें देगा आदर ॥ ६९८ ॥

दोहा राजाका.

बेटा०-फर्क हरख मतना करो, दो गुस्सेको मार ॥
चलो मेरे रनवासमें, मेरी सम्पत कुलहो पार ॥

मेरी सम्पत कुल हो पार पुत्र जितने भर कदम उठावोगे ॥ मुझ कुलदागी निरभागीके सिर ऊपर धरते जावोगे ॥ मुझै लिपट कण्ठ गल लावोगे मेरे तनकी तपन बुझावोगे ॥ तशरीफ घरों

फरमावोगे जीतेको स्वर्ग दिखावोगे ॥ मु ॥ जो घर जावोगे ॥ धरम पुन फल पावोगे ॥ लाख गऊका दान आन गंगा न्हावोगे॥५९९॥

दोहा पूरनका.

पिता०-जो मैं तेरे संग चलूं, हो दाइ ददाको कैद॥
मेरी माताको दुहाग दो, सब सुख करो नपैद ॥

सबसुख करो नपैद हमें दरबारी निमक दिलावोगे॥ इस मन्त्रीको मोतल करके कई लाख डण्ड ठहरावोगे ॥ उन्ह पंडितोंके घर लूट लूट सब दरब खजाने पावोगे ॥ मुझको दे हाथ जलादोंके जंगलमें कतल करावोगे ॥मु॥ मैं तुमसे डरता ॥ विपत क्यों जाके भरता ॥ पडा जानका खौफ उजर मैं इसविध करता ॥ ६०० ॥

दोहा राजाका.

बेटा०-कतल हुवेसे आपके, पडा मुलकमें सोग ॥
मैं कातिल ऐसा हुवा, हँसे जगतके लोग ॥

हँसे जगतके लोग मुलकमण्डल पृथ्वी कुल जहान हँसे ॥ सब सात दीप नौ खंड तबकचौदहके राज दिवान हँसे ॥ कुल दरबारोंके अहलकार सरकारोंमें अरकान हँसे ॥ करें चरचा सात विलायतके वर तख्त बैठ सुलतान हँसे ॥ मु ॥ शरमिंदा कीना ॥ कतल ऐसा कर दीना ॥ मोह ममताकी लगन अगनमें जलता सीना ॥ ६०१ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-अब ममता मेरी करो, बिछड आखरी बार ॥
तब ममता क्यों ना करी, ले पहुँचे तलवार ॥

ले पहुँचे तलवार मेरी कस कसके मुश्कैं लाय दई ॥ मेरे चार तरफ जल्लाद फिरे और पीछे फौज बिठाय दई ॥ सब जेवर वस्तर

तार लिये मुझै नीली खिलत पिन्हाय दई ॥ मुझै महफिल बीच खड़ा करके आदमकी सुरत छिपाय दई ॥ मु ॥ ऐसे घर गाले ॥ मार कूवेमें डाले ॥ तनका रक्त निकालतुम्ही भर लाये प्याले॥६०२॥

दोहा राजाका.

सुनो कुँवर गुलके भँवर, तू हाथ पकड शमशेर ॥
खौफ हरखसे झटकके, मेरी गरदन ऊपर गेर ॥

मेरी गरदन ऊपर गेर मेरी जिंदडीकी खीड़ छुटा दो तुम ॥ तन ज़िबह जान आख़िर करके दमका गम फिकर मिटादो तुम ॥ दो धार मार तलवार सँहारके सब दुख दरद मिटा दो तुम ॥ मुझ चन्द्रेकी गत मुकती कर फिर गढरो साल उडा दो तुम ॥ मु ॥ सुन पूरन प्यारे ॥ पासमें खडा तुम्हारे ॥ या मारो तलवार साथ नहिं चलो हमारे ॥ ६०३ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मुझको घर मत ले चलो, मेरा बुरा खवास ॥
कुछ आदत पलटी नहीं ॥ मेरा वही भ्यास बदमाश ॥

वही भ्यास बदमाश खास मैं निपट कपटकी खान छुरी ॥ मैं चोर जार बटमार खास बिसमार हमारी नज़र बुरी ॥ गठ कतरा जुलमी जालसाज जालिम ठग दुज्द तुफान धुरी ॥ बदचलन लुटेरा ठाइगिरा मेरे दिल अन्दर मकरान छुरी ॥ मु ॥ मेरी खोटी करनी ॥ पापकी हाथ सुमरनी ॥ ऊपरसे मन साफ पेटमें पडी कतरनी ॥ ६०४ ॥

दोहा राजाका.

सुनके साबिक दास्तां, राजा हुये खमोश ॥
गिरे धरन तडफन लगे, हो गये होश बेहोश ॥

हो गये होश बेहोश जोरसे उमँग नयन जल नीर गया ॥ पूरनकी नरम हलीमीका सुलतांके मनमें तीर गया ॥ लग चोट लोटके पोट हुवा झट साफ बदनको चीर गया ॥ तन तीर गजब अकसीर लगा राजाका तडफ शरीर गया ॥ मु ॥ तडफे जिंदगानी ॥ याद कर बात पुरानी ॥ है मुझको अफसोस बात सुतकी ना मानी ॥ ६०५ ॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मैं अर्ज आखिरीवक्तमें, अक्सर करी जरूर ॥
बारा वर्ष बितीत भये, एक ना की मंजूर ॥

एक ना की मंजूर गरज मेरी एक अरज मन भाई ना ॥ ना पण्डितोंको जागीर दई मन्त्रीको नेक सफाई ना ॥ सब दाइ ददा दरजिंदाके उनकी सुध खबर कराई ना ॥ मेरी माताको दोहागबीच एक दिनभी धीर बंधाई ना ॥मु॥ ये हुकुम तुम्हारा ॥ वचन जीते जी हारा ॥ चालिस दिनकी म्याद बरस गुजरे हैं बारा ॥ ६०६ ॥

दोहा राजाका.

नख दांतोंमें दाबके, सोचत है सुलतान ॥
जिस दिनका ये हुकुम था, मेरे होता पास दिवान ॥

होता पास दिवान खूब वाकिफ था सभी जमानेसे ॥ उस रानीके सौहाग लिये झट आता किसी बहानेसे ॥ कर पास शिफारस ददा लिये छुटवाता बन्दीखानेसे ॥ उन्ह पंडितोंको जागीर गंज दिलवाता माल खजानेसे ॥ मु ॥ जो मन्त्री आता ॥ याद मेरे दिलवाता ॥ चालिस दिनके बाद हुकुम मनसूख कराता ॥ ६०७ ॥

दोहा पूरनका.

पिताजी-धरमशास्त्रके बीचमें, लिखी राजनीतकी रीत ॥
धनलोभी मन लालची, करे नारसे प्रीत ॥

करे नारसे प्रीत जौन नर वचन मारके हारत हैं॥ बेखता कैदमें डारत हैं बिन जुलमी नार बिसारत हैं॥ दे दान छीनके मारत हैं धनवान समझ डण्ड डारत हैं ॥ जो रिपु मस्तीमें गारत हैं इतनोंके जनम अकारथ हैं॥ मु॥ जुलमी कर फूला ॥ हुकुम अपनेको भूला॥ गिरें नरकके कुण्ड जाय नरकोंमें झूला ॥६०८॥

दोहा राजाका.

चार हुकुम नरपति लिखे, एक भेजा रनवास॥
एक ले गया खजानची, एक गया दरोगा पास॥

गया दरोगा पास ददाको छोड़ दरक जागीर दिया॥ जो जप्त माल था विप्रोंका सब बख्श न्याम कशमीर दिया॥ सब बार वर्षकी तलब दई आदरसे बहाल वजीर किया॥ बडी रानीको सुहाग बख्शा घर बार महलमें सीर किया ॥ मु ॥ गलसे ला रोया ॥ कलप तन अपना खोया॥ हे बेटा चल साथ चन्द्रमुख व्याकुल होया ॥ ६०९॥

दोहा पूरनका.

पिता०-मेरा चलना फजूल है, लगे राजको लाज॥
तुम मनमें राजी हुवे, मेरी माता होय नराज॥

माता होय नराज पिता मैं क्या चलके दुख करूं रफा॥ मुझे तेरी हिमाकत माफिक नहिं ना मेरी रिफाकत करे वफा॥ तुम शाह नजीर हम फकर फकीर ना मिले जुगत ना होवे नफा॥ हम चलें साथ तुम करो बात माताजी हमपर होवे खफा॥ मु॥ ना करे समाई ॥ कभी ना होवे वफाई ॥ मुझको दे मरवाय अन्तमें जुलम जफाई ॥ ६१०॥

दोहा राजाका.

बेटा०-मैं सिर और तुम सेहरा, मैं मस्तक तुम मोड ॥
मैं दस्ती तू कङ्गना, तुम जिंदडी मैं खोड ॥
तुम जिंदडी मैं खोड कुँवर सीनेमें जान दबा बैठूं ॥ मैं देह तुम कोर कलेजेकी हर वक्त शिकममें पा बैठूं ॥ मैं गल तुम गलके हार तुम्हें कर गौर कण्ठमें ला बैठूं ॥ मैं नैन तुम्ही अंजन सुरमा चश्मोंके बीच छिपा बैठूं ॥ मु ॥ समझौती आई ॥ सजा जब गहरी पाई ॥ करते नहिं इतवार पलक नहिं करूं जुदाई ॥ ६११ ॥

दोहा पूरनका.

पि०-अब हमतो जाते नहीं, तेरे स्यालकोट दरम्यान ॥
मुलक मुबारक तुम रहो, वो काश्मीर मुलतान ॥
काश्मीर मुलतान पिता हम अपने वतन सिधारेंगे ॥ नित रह सतगुरुके चरननमें कर सुमरन कुल निस्तारेंगे ॥ शिवनन्दन बंधन भंजनके नित भजन मांझ चित डारेंगे ॥ श्रीअलख निरञ्जन भवभंजन भवसागर पार उतारेंगे ॥ मु ॥ जिसमें चित मेरा ॥ कूंच करने दे डेरा ॥ अब तो दीजो हुकुम फेर पावेंगे फेरा ॥ ६१२ ॥

दोहा वजीरका.

हाथ जोडके सामने, हाजिर खडा वजीर ॥
एक यह अरज गुलामकी, माफ करो तकसीर ॥
माफ करो तकसीर कुँवर दुखतर तरसाना ना चाहिये ॥ दश पांच पाससे मने करें परदेशमें जाना ना चाहिये ॥ जिस जोगीको सलतनत मिले फिर जोग कमाना ना चाहिये ॥ गुरु मात पिता उस्ताद साध सिधको कलपाना ना चाहिये ॥ मु ॥ ना चाहिये जाना ॥ ना चाहिये भगवा बाना ॥ ना चाहिये परदेश नहीं ये अलख जगाना ॥ ६१३ ॥

दोहा पूरनका.

वजी०-बातें वेद किताबकी, तुम तथ सुनो वजीर ॥
कान ध्यान धरके सुनो, कह दरवेश फकीर ॥

कह दरवेश फकीर तरन दुखतर मुहँ लाना ना चहिये ॥ जो पंच सरासे वाकिफ नहिं वह कहा मानना ना चहिये ॥ जो सुत सुलतांके जोग करें फिर राज कमाना ना चहिये ॥ जिस मात पिताको मोहबत नहिं फिर दर्शन पाना ना चहिये ॥ मु ॥ ना चहिये खाना ॥ लोभी सिधपै नहिं जाना ॥ कपटी गुरु उस्ताद चाहिये मुख न दिखाना ॥ ६१४ ॥

दोहा वजीरका.

हे पूरन०-बातें वेद किताबमें, यों लिख गये महेश ॥
एक तजना नहिं इलमको, एक तजना नहिं देश ॥

एक तजना नहिं देश लिखा है अपना नहिं घरबार तजे ॥ सर सब्ज वृक्ष कटवाना नहिं ना भाईबन्द परिवार तजे ॥ गउसंतपै हाथ चलाना नहिं ना कुटुम्ब बंधु ना नार तजे ॥ लाज मुहबत प्रीत घटाना नहिं ना दोस्त आपना यार तजे ॥ मु ॥ मत तजे कबीला ॥ तजे मत देश रँगीला ॥ तजनी नहिं कुलरीत तजे मत मीत छबीला ॥ ६१५ ॥

दोहा पूरनका.

हेवजी०-तज देना उसइलमको, जहां नहीं रामकानाम॥
तजो कुटुम परिवारको, जो आवे नहिं काम॥

जो आवे नहिं काम बिरछ किक्कर कटवाना बेहतर है ॥ जो नार बिरानी सेज चढ़े क्लि दूर डिगाना बेहतर है ॥ जिस देश

गुजारा नहिं चलता परदेशमें जाना बेहतर है ॥ संत गऊ मुका-
बिल पेश हुवे फिर हाथ उठाना बेहतर है॥मु॥ घर तजाना सोई ॥
यार मित्तर हो कोई॥तजो मीतकी प्रीत रीत जाने ना जोई॥६१६॥

दोहा वजीरका.

हे पू०-मात पिताको छोडके, करें निमाना जोग ॥
वे नर नित दुखिया रहैं, बढै बदनमें रोग ॥

बढ़ै वदनमां रोग जौन नर मातपिता कलपातेहैं ॥ भज भजन
तपस्या गलत रहैं ना भक्तीका फल पातेहैं॥ ना यज्ञ संपूरन होताहै
ना ब्रह्मलोकको जातेहैं ॥ ना तीरथ वरत कबूल रहे ना सुखसे भो-
जन खातेहैं ॥ मु ॥ ना तिरघट न्हाते ॥ नहीं हर दर्शन पाते ॥ मात
पिताको त्याग पितर पीड़ामें आते ॥ ६१७ ॥

दोहा पूरनका.

हे वजी०-मात पिताको छोडगये,भगत धुरू धरध्यान॥
ब्रह्मलोकमें जा किया, गगन अटल अस्थान ॥

गगन अटल अस्थान तुरत जा मिले बिरजके वासीको ॥
शुकदेव भरथरी छोड़ गये जा तोड़ा जमकी फांसीको ॥ प्रहलाद
भगत गोपीचन्दने नहिं भुगती लख चौरासीको ॥ धुन्धी ऋषि
व्यास भगीरथ तज गये सोरो मथुरा काशीको ॥ मु ॥ हर दरशन
पाये ॥ राज तज जोग कमाये ॥ हो भवसागर पार घाट तिर-
घटमें न्हाये ॥ ६१८ ॥

दोहा वजीरका.

पूरनजी-होनेबाद वफातके, तुमसे होय सवाल ॥
रोज कयामतके सभी, पूछा जाय हवाल ॥

पूछाजाय हवाल हाल श्रीठाकुरभी दिलगीर हुआ ॥ हर कहेंगे नृपघर जनम दिया तेरे कब्जे मुल्क जागीर हुआ ॥ बरबाद परेशां रैयतको सब तजकर राज फकीर हुआ ॥ जब हो सवाल क्या दो जवाब दरगाहमां दामनगीर हुवा ॥ मु ॥ क्या करो चलाकी ॥ माफ करना गुस्ताखी ॥ होगा तलब जवाब बोल क्या बोलो बाकी ॥ ६१९ ॥

दोहा पूरनका.

हे वजीर०-जबाब तलब हो चोरसे, जो रस्तेमें लुट लेत॥
या होगा सुलतानसे, जो रैय्यतको दुख देत ॥

जो रैयतको दुख देत कानके कच्चे रहैं हमेशोंसे ॥ कुछ खौफ रामका करते नहिं हटते नहिं जुल्म कलेशोंसे ॥ परनाई नार निकालेहैं और कर लाते परदेशोंसे ॥ ये सख्त मुसीबत भुगतेंगे और क्या मकसद दरवेशोंसे ॥ मु ॥ नहिं राज कमाया ॥ नहीं मित्तर कलपाया ॥ दिया पिताने मार जनम जोगी घर पाया ॥६२०॥

दोहा वजीरका.

हे पूरनजी-बाग नौलखे बीचमें, गुजरे हैं दिन चार ॥
कुँवर तुम्हारी सुरतके, भूखे हैं नर नार ॥

भूखे हैं नर नार कुँवर कर ख्याल हरखको छिटकावो ॥ कर कदम मुबारिक रुफ्त गुफ्त तशरीफ लुत्फसे फरमावो ॥ अस्नान ध्यान कर पुण्य दान फल पान चढ़ा गङ्गा न्हावो ॥ मैं करूं अर्ज तुम करौ फर्ज तुम गुनह बख्श भोजन पावो ॥ मु ॥ पीना जल पानी ॥ खुशी हों सत्तर रानी ॥ मुझ सिर करो इँसान कुँवर बखशीला रानी ॥ ६२१ ॥

दोहा पूरनका.

भोजनके भूखे नहीं, ना पानीकी प्यास ॥
ना हमको क्षुध्या लगी, ना षटरसकी आस ॥

ना षटरसकी आस हमी जाते नहिं दुनियादरोंमें ॥ बनखण्डोंमें परसन्न रहें क्या मकसद महल चवारोंमें ॥ इन जोगी फकर फकीरोंका क्या काम राजदरबारोंमें ॥ रट अलख नाम हम खुशी रहें ना चित छत्तिस परकारोंमें ॥ मु ॥ ना फेरा पाते ॥ नहीं घर डेरा लाते ॥ तेरे नगरके बीच नहीं अन पानी खाते ॥ ६२२ ॥

दोहा वजीरका.

हे पूरनजी-पीना पानी छानके, न्हाना घाट कुघाट ॥
सोना बिस्तर झाडके, मिलके चलना वाट ॥

मिलके चलना वाट जगत भावे सो भाना लाजिम है ॥ जो शख्स दरस लवलीन होवे उससे मिल जाना लाजिम है ॥ जो अदब आपका रखते हों उनसे नेह लगाना लाजिम है ॥ जिस वक्त रसोईं हाजिर हो आदर दे खाना लाजिम है ॥ मु ॥ लाजिम घर जाना ॥ लाजिम दुख दरद मिटाना ॥ लाजिम है मा बाप जहां अन पानी खाना ॥ ६२३ ॥

दोहा पूरनका.

हे वजीरजी-धोबी नाई लीलगर, गुजराती डाकोत ॥
चारज चक्री डूमका, अन्न नकारा होत ॥

अन्न नकारा होत बहुत अन खाना नहीं अमीरोंने ॥ संग मुनशी नफर पियादोंका लाजिम नहीं खास वजीरोंने ॥ धन मुफलिस रांड अतीतोंका चहिये नहिं शाह नजीरोंने ॥ सुलतान बादशाह राजोंका अंश खाना नहीं फकीरोंने ॥ मु ॥ यह कच्चा पारा॥ बुरा ये अंश नकारा ॥ पारवतीका वचन अन्न खागा सो हारा६२४॥

दोहा वजीरका.

हे कुँ०-पांच तत्व मिलकर हुआ, दुनियामें इनसान ॥
जिंदगानीका धरम है, लेना मजा जहान ॥

लेना मजा जहान बातका करना मथन मुनासिब है ॥ दर आलम अपनी अशरतका आदमको जतन मुनासिब है ॥ शृंगार हार नाजुकसी नार एक यहभी रतन मुनासिब है ॥ दुस्तार गुफ्त रफ्तार हुकुम और अपना वतन मुनासिब है ॥ मु ॥ दुनियाके माहीं ॥ जिसे सुख देता सांई ॥ जो अशरत ना होय धरम जीनेका नाहीं ॥ ६२५ ॥

दोहा पूरनका.

हे व०-अशरत ऐश नसीबमें, नहीं लिखी भगवान ॥
जा मन्त्री घर आपने, क्यों करता कलकान ॥

क्यों करता कलकान आनकर इस दरवेश भिखारीको ॥ हम जोगी रमते रावल हैं नित रटते कृष्ण मुरारीको ॥ मुझे देख मात दलगीर होवे ले पहुँचे खड़ग कटारीको ॥ सिर तार जिगरसे अलग करे खो देगी जान हमारीको ॥ मु ॥ तन जखम लगावे ॥ रक्तमें माता न्हावे ॥ सिर गेरे शमशेर सबर मैय्याको आवे ॥ ६२६ ॥

दोहा नूनादेका.

नूना कहे वज़ीरसे, दोउ कर जोडे हाथ ॥
जो तुम कहो दिवानजी, मैं कर लूं दो बात ॥

मैं कर लूं दो बात कुँवरसे अर्ज़ किया मैं चाहती हूँ ॥ सूरजसा मुखड़ा चूम चूम पुत्तर कह गलसे लाती हूँ ॥ मेरा ज्यों ज्यों कुँवर जिकर करता मैं बिन जल डूबी जाती हूँ ॥ कर जोड खता बख्शा

लेती फिर खौफ रावका खाती हूँ ॥ मु ॥ जी बडा दुख पावे ॥ हुकुम राजा फरमावे ॥ करूं कुँवरसे प्यार शरद सीना हो जावे ॥ ६२७ ॥

दोहा वजीरका.

मन्त्री कहे सुलतानसे, सुन राजनपत महराज ॥
रानीजीकी वीनती, सुनो गरीबनिवाज ॥

सुनो गरीबनिवाज आज एक रानी अर्ज गुजार रही ॥ दो बात कुँवरसे किया चाहे इसलिये हाथ पैसार रही ॥ तकसीर माफ करवाती है इस गर्ज सीसको मार रही ॥ बरखातिर सुतसंग बोलनकी उठ रानी कूक पुकार रही ॥मु॥ कायाको खोती ॥ नैन भर भरके रोती ॥ बोलनको चित करै आप शरमिंदी होती ॥ ६२८ ॥

दोहा राजाका.

रानी मेरे कुँवरसे, जो बहुत करेगी बात ॥
अलबत अपनी जानसे, धोबैठेगी हात ॥

धोबैठेगी हात दस्त अपने शमशेर संभालूंगा ॥ बेखौफ हरख हंकार बीच झट जान जिबह कर डालूंगा ॥ दम आखिर वदन तमाम करूं कुछ जरा प्रीत नहिं पालूंगा ॥ दे त्याग स्यालगढ जम्बूसे हत्तेसे बाहर निकालूंगा ॥ मु ॥ रूलकर मर जावे ॥ हुकुम राजा फरमावे ॥ मेरे कुँवरके साथ बात करने नहिं पावे ॥६२९॥

दोहा पूरनका.

जोगी कहे मेरी मातसे, मत कुछ कहना आप ॥
मुझे जतसतसे जोगी मिले, सब माताका परताप ॥

सब माताका परताप मुझे जिसने उपदेश लगाया है ॥ जमफांसी लखचौरासीको नहिं कालचक्रमां आया है ॥ जग जीत

जनम निस्तार दिया मिल जोग परम पद पाया है ॥ इस माताही-
के चरनोंका मेरे सिरपर छत्तर छाया है ॥ मु ॥ रस्ता बतलाया॥
परम गुरु पूरा पाया ॥ माताका परताप शुद्ध हुई मेरी काया ॥६३०॥

दोहा नूनादेका.

रानी हो शरमिन्दगी, गिरी चरनमें आय ॥
चिपट चरनको चूमती, मुख लब ऊपर आय ॥

मुख लब ऊपर लाय रानी एक चरन धरनपर आन
खडी ॥ मुख तिरन दस्त दर लियेहुए गल अंचल चुनरी चीर
पडी ॥ खोदत खुद अर्ज नखूनोंसे कर शरम जिमीमें आन बड़ी॥
सोचत जल लोचन टपकत हैं ज्यों भर भादोंमें लगी झड़ी ॥
॥ मु ॥ रोवत है रानी ॥ चरन धो पीती पानी ॥ होकर शरम
हजूर दूर जा हुई दिवानी ॥ ६३१ ॥

दोहा पूरनका.

मा०-गुनहगार मत ना करो, मेरे चरनन लाकर हाथ ॥
साहबकी दरगाहमें, मेरि कोइ ना पूंछे बात ॥

कोइ ना पूंछे बात मात कहो क्या मकसद हमसे तेरा ॥ मुख
तिरन धरन एक चरन खड़ी और क्यों गलमें अंचल गेरा ॥
मुझको क्यों पाप चढ़ाती है मैं आप तेरा चरनन चेरा ॥ कुछ
रक्तमांसकी चाहना हो ये फिरभी सिर हाजिर मेरा ॥ मु ॥ चाहे
खून कढाले ॥ चाहे भर लेजा प्याले ॥ चाहे रंग ले पोशाक चाहे
मलमलके न्हाले ॥ ६३२ ॥

दोहा नूनादेका.

बेटारे-मैं पापन पापों भरी, किया आपसे पाप ॥
मेरे कपट कलंक शिर लाख हैं, कौन करैगा माफ ॥

कौन करैगा माफ पापकी भरपुर अवगुनहारी मैं॥ खुद जुलमन महा फरेबन मैं झूंठी अवगुन हत्यारी मैं॥बदचलन कसत्तन जाल-साज और दगाबाज कलहारी मैं॥ तुझ तरफ इशारत होती नहिं अब लाज शरमने मारी मैं॥मु॥ क्या मुँह दिखलाऊं॥ डूब क्या जलमें जाऊं॥ जहर फीम विष घोल कनी हीरेकी खाऊं॥६३३॥

दोहा पूरनका.

हेमा०-मुझे तेरे दरशका आसरा, नित चरनों आधार॥
मुझे तैं उपदेश लगायके, किया भवसागर पार॥

किया भवसागर पार जनम निरधार जगतमें पीर किया॥ सतसंगत कर मन मूरखसे गोरखका दामनगीर किया॥ छुटवा दुख लख चौरासीसे दे शोभा अमर शरीर किया॥ तुझको भगवान समझताहूँ हांसीमें मन दिलगीर किया॥मु॥ तू मेरी माता॥ मेरी मुक्तीकी दाता॥ भूलूं नहिं अहसान तेरा गुण जगमें गाता॥६३४॥

दोहा नूनादेका.

नूनादेने कुँवरको, लीना कण्ठ लगाय॥
कमल वदन मुख चूमती, लख बार सदके जाय॥

लख बार सदके जाय कुँवरपर तन मन वदन निसार रही॥ जिंद जिगर जान कुरबान करे ला सीने गल पुचकार रही॥ कर प्यारत सदके जाती है भर थार मोतियों वार रही॥ सौ बार बलैया लेती है दरशन कर शुकर गुजार रही॥ मु॥ गल बहियां डारी॥ तेरे दरशनमें वारी॥ मुहबतसे मुख चूम कूक रानीने मारी॥६३५॥

दोहा पूरनका.

शुक्र आजके रोजको, मेरी माता हुई अनन्द॥
पूरनपर किरपा करी, कीना प्यार बलन्द॥

कीना प्यार बलन्द शुक्र अब माताजीको ज्ञान हुआ ॥ मन साफ सिदकसे पुत्र कहा मुझ फक्करके सिर सान हुवा ॥ कर प्यार कलेजे लाय लिया मेरा ब्रह्मलोक अस्थान हुवा ॥ अब माताजीको मिलनेसे श्रीगङ्गाजी अस्नान हुवा ॥ मु ॥ सब तीरथन्हाया ॥ धाम सारे कर आया ॥ माके मिले दीदार जैसा हरदरसन पाया ॥ ६३६ ॥

दोहा नूनादेका.

बेटा-ऐसी बाली उमरसे, कैसे हुवा फकीर ॥
सतसंगत किसकी लगी, निरमल हुवा शरीर ॥

निरमल हुवा शरीर पुत्र यह करामात कहाँसे पाई ॥ सरजीवन तन किस तरह हुवा पग हाथ नेत्रकी सैफाई ॥ किस जोगीका गुरुज्ञान लगा जो हुई जबांमें रुशनाई ॥ तन गाल परान निकाल दई फिर जिंदी तन किस्तर पाई ॥ मु ॥ मा लेत बलैया ॥ तेरे मैं सकदे गैया ॥ करूं जान कुरबान डारकर गलेमें बैंया ॥ ६३७ ॥

दोहा पूरनका.

मा०-भक्तजनोंकी सहायपर, जो नहिं होते रघुनाथ ॥
रावण हिरणाकंसको, कौन दिखाता हाथ ॥

कौन दिखाता हाथ प्रभूविन धनुष तोड़ सिया व्याहता कौन॥ जो खंभ फाड़ नरसिंह नहिं होते भक्त प्रल्हाद बचाता कौन॥ जो दैत्यनिकंदन होते नहिं उस महमदको दफनाता कौन ॥ गुरु गोरख जगमां नहिं होते पूरनको जगत दिखाता कौन ॥ मु ॥ हनुमत ना ध्याता ॥ कौन सीता सुध ल्याता ॥ नहिं होते गोरखनाथ परमपद मैं नहिं पाता ॥ ६३८ ॥

दोहा नूनादेका.

बेटा-जो मैं ऐसा जानती, ऐसा तुझको ज्ञान ॥
तन मन धनको वारके, जिंद करती कुरबान ॥
जिंद करती कुरबान कुँवर तुझे कहकर पुत्र गले लाती ॥ दो वख्त हमेशों सुवह शाम तेरा नित उठके दरशन पाती ॥ खुद शुक्र भेजकर दरगाहमें तेरी सुरत देख भोजन खाती ॥ तुझ जतीसतीकी संगतमें मैं भी भवसागर तर जाती॥मु॥पीछे पछताई ॥ बहुत सत संगत लाई॥थी वह उमर नदान समझ मुझको नहिं आई ॥६३९॥

दोहा पूरनका.

हे भातारी-शाम पडी घरमें बडी, उसको गई न जान ॥
चढतो जुलम न समझना, जो उतरत होय इमान ॥
उतरत होय इमान जौन नर जुलमी कर पछताते हैं ॥ गल काट एकका जुलमीसे फिर कितनोंके मुहँ पातेहैं ॥ कर खून कई दिन तरस करें जो खौफ रामका खातेहैं ॥ यह इतने नर बख्शे जांगे कबि दर दोजख नहिं जाते हैं ॥ मु ॥ जो हर डरते ॥ खौफ ईश्वरका करते ॥ होगा माफ कसूर कदम दोजख ना धरते॥६४०॥

दोहा नूनादेका.

हे कँ०-मैं पहले तोबा ना करी, अब तोबा किसकाम॥
मैं हजार बार तोबा करूं, नहिं बखशेंगे राम ॥
नहिं बख्शेंगे राम उसीको जो नर दिलसे पाप करें ॥ धर सच्चेके शिर दोष सिर्फ खुद अपने तनको साफ करें ॥ बरवक्त आखरी दरगाहमें भगवान समझ इनसाफ करें ॥ लख बार बार तोबा करती मुझे कभी राम नहिं माफ करें ॥ मु॥ खफगीसे मारें ॥ मार दोजखमां डारें ॥ कर वहिश्तसे दूर नरककुंडीमें डारें ॥ ६४१ ॥

दोहा पूरनका.

हे मा०-तोबा गनका कर गई, सरब कि सब गई छोड़॥
जा पहुँची वह वहिश्तमें, जमकी चौकी तोड़॥

जमकी चौकी तोड सिदकसे सब आदर सत्कार किया॥ वह नार अहल्या तोबा कर गइ सब सुख चैन विसार दिया॥ वह सदन कसाई तोबा कर गया करसे फेंक कटार गया॥ वह तुलसिदास तोबा कर गया कुल कामदेवको मार गया॥ मु॥ पहुँचे हर मन्दर॥ तोबा कर गया मछन्दर॥ तोबा करके परशुराम गये स्वर्गके अन्दर॥ ६४२॥

इति योगीश्वर बालकरामकृत पूरनमल भक्तका सांगीत समाप्त॥



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.

क्रय्य पुस्तकें (संगीत ग्रंथ.)

नाम.	की.रु.आ.
अनुरागरस–नारायण स्वामीकृत.	०–३
आनन्दगान–(यथा नाम तथा गुण) अवश्य लीजिये	०–४
इश्कचमन–अर्थात् स्वांगबिसमिल परीवारका–कविवर लाला शालिग्रामजी वैश्यकृत.	०–८
उपदेशरत्नाकर–उपदेश सम्बन्धी उदाहरणोपयुक्त भक्ति ज्ञान वैराग्यसंयुक्त सामयिक दोहे वर्णित हैं....	०–६
कजरीरागसंग्रह–श्रावण भादोंमें गाने लायक अत्युत्तम संग्रह है....	०–२
कर्मपट–ज्ञान चौपडका खेल (चित्र) अर्थात् संस्कृतकी श्रेणीसे (ज्ञान चौपड)	०–१
कल्याणकल्पद्रुम–रोचकछन्दबद्ध वेदान्तमानस सूक्ष्म-रामायण...	०–४
गजलसंग्रह–(५४ कवियोंकी २२५ के करीब गानेलायक गजलोंका संग्रह) शौकीनोंको अवश्य लेना चाहिये.	०–७
गणेशपुराण–भाषा–श्रीयुत मोतीलालजी विरचित. ...	०–१॥
गुरुमहिमा और गुरुअष्टक–दोहा चौपाईमें गुरूपदेशके लिये उत्तमहै....	०–१
गुलबहार–अर्थात् अमसी व सावनी ख्याल तुर्रा. ...	०–४
गुलचमन बेनजीर–अर्थात् हिन्दीभाषा रसिकोंके लिये उर्दूके दीवाननजीरसे चुन २ कर ४३ विषयमें गाने-लायक उम्दा २ गजलोंका संग्रह किया है.... ...	०–८

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.